Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता है कि नेपाल
...वासी हैं। अगर

...भारतके प्रति प्रेम और लगाव नहीं हो पाया है जैसा कि होना चाहिए आप इस दिशामें विकासके लिए क्या चाहेंगे?

...अंतर्राष्ट्रीय राजनीति जो समझते हैं ...लिए यह आश्चर्यका कोई विषय नहीं

हुआ है। उससे हमारे क्षेत्रमें शान्ति है। ऐसे लोगोंकी वहां कमी नहीं है जो नेपालके विकासमें भारतके योगदानसे अवगत हैं। ...हां ऐसे लोग भी हैं जो भारतको शकाकी ...ष्टिसे देखते हैं और यह सोचते हैं कि भारत ...पालको अपने प्रभाव-क्षेत्रमें रखना ...हता है। ऐसा दो देशोंके सम्बन्धमें ...क्सर होता है। खासकर जब एक देश बड़ा ...र दूसरा छोटा हो तो ऐसी स्थिति अक्सर ...जाती है। इससे हमें घबराना नहीं चाहिए. और उसे देशके विकासमें हर ...म्भव सहायता देते रहना चाहिए। साथ साथ यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारे ...किसी व्यवहारसे ऐसा जाहिर न हो कि हम ...पालकी प्रभुसत्ताका सम्मान नहीं करते ...उसे अपना पिछलगुआ बनाना चाहते हैं। ...कालान्तरमें सारे सन्देह दूर हो जाने चाहिए।

नेपाल चीनसे इसलिए भारी मात्रामें हथियार खरीद रहा है क्योंकि उसे भारतके बनिस्बत चीनसे सस्ते दरोंपर हथियार मिल जाते हैं आप इस बाबत क्या करना चाहेंगे कि नेपालकी

नेपालमें जो उ... उत्पाद-वस्तुओंको ... सहूलियत भी हमें देनी... वस्तुएं भी वहां बेची जा... अपने यहां किसी उद्यो... लिए हमारे किसी सा... लगाये तो हमें इसका... चाहिए। लेकिन यदि ... जाए कि किसी तीस... भारतके साथ किसी... किया जाए तो हमारे... लाज़िमी होगा।

नेपाल कांग्रेसके ... राजनेताओं, खास... निकटताको आप भार... तरह देखते हैं?

इससे नेपालको फ... नेपालमें लोकतन्त्र-व... हर सम्भव ठोस मजबू... हमेशा नेपालकी मदद ... है। (मीफीस)

-प्रिय...

...ा सिलसिला कबतक!

...को जनता किस सीमातक बर्दाश्त ...ट्रोलियम पदार्थोंके मूल्योंमें ...जनताने विशेष विरोध नहीं

...विधा

...क्षेत्रके संकटको ध्यानमें पेट्रोलियम मूल्योंमें मजबूरी मानी। मगर ...ा शुल्ककी दरोंमें

वसूलीमें सरकारकी ढिलाईका है। दूसरा आधार सरकारके गैर-योजना खर्चोंमें अपेक्षानुसार कमी नहीं होना है। चालू वित्त वर्षमें सरकारकी राजस्व वसूली लक्ष्यसे बहुत कम है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करोंमें सरकारी मशीनरी निर्धारित लक्ष्योंनुसार कर संग्रह नहीं कर पाई है। जब मौजूदा करोंकी वसूली ही नहीं हो पा रही है तो नये करोंका तरीका कितना सार्थक होगा? सरकार की पहली प्राथमिकता कर वसूल करनेवाली मशीनरीको चुस्त करने की होनी चाहिए।

सवाल है कि राजस्वके अतिरिक्त

मूल्य बढ़ सकते हैं। सर... खर्च कम करने या ... अभियानको तेज करने... करोंकी घोषणाके रास्ते... है। बजट घाटेके लिए नय... अधिक सार्थक लगता है।

अर्थव्यवस्थामें मुद्रा... खासा है। ऐसेमें सरका... घोषणा महंगाईकी दरको... समर्थक दल कांग्रेस ... मुद्रास्फीतिमें तेजीको ... सकती है। यदि बजट आम... तोड़नेवाला हुआ तो का...

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र्फ मोर्चाके राष्ट्रीय
...री लालने आरोप
...श विखण्डनके कग
...नेता अपने स्वार्थ

...ल भारतीय
...गोष्ठी आजसे

अभियानमें उसकी रक्षाके लिए ...ाके दो लडाकू विमान साथ-साथ ...ड़ रहे थे। इन लड़ाकू विमानोंसे ...उक्त पाइलटको पकडनेके लिए आ ...कको भी ध्वस्त कर दिया। इस पूरे ...ानमें आठ घण्टे लगे। इतने ...तक अमेरिकी विमान शत्रु क्षेत्रमें

भारतमें खाड़ीके चित्र

भारतमें दूरदर्शन भी खाड़ी-युद्धके ...ोंके लिए 'केबल न्यूज' की ...क्लीपिंग्स' का उपयोग कर रहा है। एक ...र्ष पूर्व दूरदर्शनने केबलन्यूज नेटवर्कसे ...ौदा करनेकी कोशिश की थी। किन्तु ...ुल्क ५०,००० डालर मांगे जानेसे ...ौदा नहीं पट सका।

अभी केबलन्यूजके 'टुकड़ो' के उपयोगके साथ दूरदर्शन 'विसन्यूज', एशियान्यूज' के अलावा वर्ल्ड टेलीविजन एजेन्सीका भी उपयोग कर रहा है। आकाशवाणीके संवाददाता अविनाश गोयल दुबईसे खबरें भेज रहे हैं। आकाशवाणी बगदाद, मास्को, बी. बी. सी ... विदेशी रेडियो ... करना ... सेवाके ... कर ...

...ास काटकर ...फ स्पेशल ट्रेन ...में कुछ और ...ह प्रातः साढे ...ाकर मऊकी ...से सायंकाल ...नऊ होते हुए

...र्षक दृश्य

...कार

काशी हिन्दू विश्विद्याल... विद्या धर्म विज्ञान संकायमे... फरवरी तक अखिल भ...

संगोष्ठीका आयोजन कि... संगोष्ठीका उद्घाटन आज च... पूर्वान्ह ११ बजे भारत ... होगा तथा इस समारोह ... सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि... वाइसचांसलर प्रोफेसर वि... करेंगे।

इस संगोष्ठीका आकर्ष... विद्वानों द्वारा दिक, देश... विचार होगा। इसके सा... विज्ञान, समकालीन ... भारतीय कलाओं तथा न... प्रतिबिम्बित देश-कालकी...

हेरोइन, शरा... साथ दो व्यक्ति...

मडुवाडीह पुलि... सायंकाल शिवदासपु... व्यक्तिको दस पुड़िया... गिरफ्तार किया। लह... व्यक्तिको गिरफ्तार क... लीटर अवैध शराब ब...

ग्राम पंचाय... अधिकारी स...

...सम्प...

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औषधि सहायतार्थ

प्रथम भाग

इस संस्था का प्रथम उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सेवा प्रतिपादन करना है। साधारणतः चिकित्सा सेवा अधिकतम गांवों की पहुँच के बाहर है। भारत वर्ष में लगभग ५००,००० गांव हैं और भारत की ३/४ से भी अधिक जनसंख्या इन गाँवों मे बसती है। हमारी संस्था ने ५४ वर्षों से देश भर में अपने शक्ति भर प्रयत्नों द्वारा जनता के हित में चिकित्सा बक्स प्रचलित किया है जो कि विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा हेतु योग्य सिद्ध हुआ है।

हमारी अविष्कृत औषधियों की विशेषता यह है कि वे प्रयोग करने में सरल हैं। मात्रा में थोड़ी देनी होती हैं और हानिकारक नहीं है। इसके अतिरिक्त गुणकारी तथा सस्ती भी हैं।

पाठकों को हम अपनी पुस्तक "खोये हुए स्वास्थ्य का निर्माण" अध्ययन करने का परामर्श देते हैं। पुस्तक का अभिप्राय आहार और जीवन के साधारण नियमों की त्रुटियों को सुधारना है। इनमें जीवन–शक्ति और स्नायु विकारों पर विशेष जोर दिया गया है।

चिकित्सा की अपेक्षा रोगों की रोकथाम किया जाना उचित है। यह सर्व प्रथम सबका ध्येय होना चाहिए कि हम अपना ध्येय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य को अच्छा बनाये रखने की ओर दें। निश्चय ही वह उपाय जीवन के स्थर को ऊँचा उठाने, रोगो को उन्मूलन करने में सहायक सिद्ध होगा।

हजारों मनुष्य साधारण बातों को न समझने के कारण व्यर्थ ही अपने आपको कष्ट देते हैं। बहुत से रोग शीघ्र चिकित्सा से ठीक किये या रोके जा सकते हैं। अपने स्वास्थ्य के विषय में बेखबर रहना अनावश्यक है और यदि अवहेलना की जाय तो हानिकारक भी है!

चिकित्सा विज्ञान में नवीन विचार धारा

प्रत्येक रोग का एक कारण होता है, किन्तु एक ही रोग के कारण सदा एक ही प्रकार के नहीं होते अपितु उसी कारण से भिन्न-भिन्न रोग उत्पन्न हो सकते है। अथवा यूँ कहिए की एक ही प्रकार के रोग अनेक कारणों से हो सकते हैं। जैसे मानसिक व स्नायुविक विकारों से आमाशय में क्षत की शीघ्र ही अभिवृधि हो सकती है (जिन रोगियों में क्षत प्रवृत्ति पाई जावे)। इसी प्रकार फुफ्फुस का क्षयरोग परिवारिक अशान्ति के फलस्वरूप बढ़ सकता है। और ज्ञात हुआ कि इसी प्रकार बहुत से पुराने रोग मानसिक व स्नायुविक सन्तुलन कें अभाव से होते गये हैं।

उपरोक्त कथन से इतना स्पष्ट है कि किसी भी रोग में एक ही जैसा निर्धारित इलाज नहीं हो सकता। किन्तु खास-खास दवाइयाँ ऐसी हो सकती हैं (और होनी भी चाहिएँ) जो कि खास-खास नियत अवस्थाओं में लाभप्रद हो सके। विभिन्न देशों में समय–समय पर अनेक विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा सिद्धान्तों पर विचार किया है, अब समय आ गया है कि इन सबका एकीकरण किया जावें और उसे व्यवहार में लाया जावें। यह सम्भव है कि व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक सिद्धान्त में सत्यता हो, किन्तु इनके समिष्ट प्रयोग के सत्य होने में हमें संदेह है। सब जगह इनका अन्धाधुन्ध प्रयोग नहीं किया जा सकता।

मनुष्य एक योगिक प्राणी है इसलिए समन्वय की आवश्यकता है, न केवल औषधियों ही में अपितु चिकित्सा सिद्धान्तों में भी इसी उद्देश्य को पूरा करने का भार हमने उठा लिया हैं।

प्रायः रोग निम्नलिखित कारणों में से एक अथवा अन्यान्य कारणो से हुआ करता है।

१. पुष्टि का अभाव, मंदाग्नि, अजीर्ण और कोष्ठ बद्धता।

२. मानसिक व स्नायुविक विकार।

३. रक्त की कृमी और रक्त दुष्टि।

जठराग्नि की मन्दता के कारण आंखों के रोग हो सकते है। स्नायुविक दुर्बलता से भी नेत्र रोग उत्पन्न हो जाते हैं। रक्त में परिवर्तन होंने से भी नेत्रों पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार शरीर के तमाम अंग एक या दो या तीनों कारणों से भी प्रभावित हो सकते हैं। चक्षू रोग, यकृत विकृति, कोष्ठबद्धता, फेंफड़ों के रोग, कान दर्द दाँत दर्द या फोंडा इत्यादि के लिये समायिक वाह्यव आभ्यान्तरिक औषधं प्रयोग से कुछ लाभ हो सकता है, परन्तु जब तक रोगी के शरीरगत वैशिष्ट्य का विचार करके चिकित्सा न की जावेगी तब तक चिकित्सा से स्थायी व सन्तोष-जनक लाभ नहीं हो सकता। दांत के रोग प्रायः बदहजमी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण उत्पन्न हुआ करते हैं। इसलिए यद्यपि दन्त मंजन, पेस्ट आदि व्यवहार करने से कुछ लाभ होगा, परन्तु जब तक पाचक संस्थान की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया जावेगा तब तक जड़ से आराम नहीं होगा। दांतों के रोग स्नायु विकार अथवा रक्त की कमी या अशुद्धि से भी उत्पन्न हो सकते हैं।

इसलिए रोगी के शारीरिक गठन की ओर ध्यान रखकर चिकित्सा करना नितान्त आवश्यक है। हमारी सफलता का रहस्य भी यही है कि हमारि चिकित्सा पद्धति शारीरिक गठन मूलक और रोग निवारक दोनों सिद्धान्तों का समन्वय है।

एक बार एक प्रसिद्ध भारतीय डाक्टर ने लेखक से कहा कि मैं 'विज्ञान' शब्द से जो कि पचास वर्षों से मेरे कानों में ठूंसा जा रहा हैं सुनते–सुनते तंग आ गया हूँ। मुझे तो केवल यह बता दो, कि अमुक द्रव्य यह काम करता है और अमुक द्रव्य, से वह लाभ होता है। बस यही सब विद्याओं की महत्ता है। हमें सत्य का सामना करना है। और सबसे बड़ी सचाई यह हैं कि हमारा देश निर्धन होने कारण आज-कल की बहुमूल्य चिकित्सा के व्यय को सहन नहीं कर सकता। हम अपने देश के रहन-सहन के विस्तार को पश्चिमी देशों जैसा नहीं उठा सकते, किन्तु यह तो कर सकते हैं कि उस स्तर को अपने देशवासियों की स्थिति के अनुकूल बनावें। वास्तविकता यह है कि हमारा देश अति निर्धन है। यदि हम इसके प्रति जाबाज नहीं उठाते, तो निश्चय ही हम अपने कर्त्तव्य से गिरेंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रसंग में एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक होगा। प्रायः हम से यह कहा जाता है कि चिकित्सा सम्बन्धी विषयो में अध्यात्मिक वातों को आप क्यों महत्व देते हैं? चिकित्सक को केवल रोगी के देह की ही चिकित्सा नहीं करनी पड़ती अपितु उसके मनकी भी, क्योंकि मन का प्रभाव शरीर पर पड़ता है। इसलिए डाक्टर को शरीर से अधिक मन की ओर ध्यान देने की अवश्यकता होती है। उन का संबंध आत्मा से होता है। इसलिए देह, मन और आत्मा परस्पर सम्बन्धित हैं और एक का स्वास्थ्य होना दूसरे के स्वास्थ्य पर निर्भर रहता है।

वह सिद्धान्त जिसके आधार पर हमारी औषधियाँ तैयार की जाती और रोगियों को दी जाती हैं, वह इस तत्व पर आधारित हैं कि हम मनुष्य को केवल जीवधारी अपितु समिष्टि रूप में एक पूर्ण प्राणी स्वीकार करते हैं जिसमें शरीर के भिन्न-भिन्न संस्थान एक सन्तुलित अभिन्नता प्रदान करते हैं। हम शरीर के किसी एक अंग या संस्थान को अस्वस्थ्य नहीं मानते वल्कि एक अंग के रुग्ण होने पर सारे शरीर को उससे आक्रान्त समझते हैं।

यदि हम संसार के अनुसंधान कर्ताओं की नवीन गवेषणाओं पर विचार करें तो हमें विदित होगा कि केवल आत्मा ही हमारें सुख दुःख, सफलता-असफलता तथा स्वस्थता और अवस्वस्थता की हेतु हैं। डाक्टर रोगी की चिकित्सा करें, रोग की नहीं, इस प्रकार के आधुनिक मतवाद का तात्पर्य भी यही है कि डाक्टर को चिकित्सा काल में रोगी के खाने पीने के तरीखे रहन-सहन के तरीके और आचार व्यवहार को ध्यान में रखकर इलाज करना चाहिए। और इन सबके ऊपर प्रभाव पड़ता है मनुष्य की मानसिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार धारा का। जब तक वह विचार धारा ठीक नहीं है, न मनुष्य के विचार ही ठीक हो सकते हैं और न ही उसके काम। यही कारण है कि हम रोगों की चिकित्सा में अध्यात्मिक बातों को भी महत्व देते हैं।

ज्ञान की सीमा अथाह है और मानव है एक सीमित शक्ति रखने वाला प्राणी। इसलिए नम्रता का पाठ सीखना चाहे तो उसे चिकित्सा विज्ञान (मेडिकल साइन्स) का सर्वांगीण अध्ययन करना चाहिए। क्योंकि इसे अपनाने में अन्य विज्ञान शास्त्रों के बनिस्बत अतिशय नम्रता बर्तना पड़ती है। पाश्चात्य डाक्कर अपनी चिकित्सा पद्धति के द्वारा एक रोग का इलाज करता है। बिलकुल उसके विपरीत पद्धिया से एक होमयोपैथ चिकित्सक उसी रोग की चिकित्सा करता है और एक आयुर्वेद वैद्य अपनी विशेष पद्धति से उसी रोग की चिकित्सा करता है। इसी तरह युनानी हकीम, प्रकृति चिकित्सक और एक मानसिक रोग शास्त्र-वेत्ता भी अपने-अपने तरीकों से उसी रोग की चिकित्सा कर सकते हैं।

बड़ा डाक्टर वही है जो बड़ी नम्रता से हर किसी कुछ न कुछ विषय ग्रहण करने के लिए तत्पर रहता हो। बड़ा वैद्य वही है जो प्रकांड पंडित होते हुए भी अपना ज्ञान सीमित मानता है। बड़ा चिकित्सक वही है जो प्रत्येक व्यक्ति (रोगी) की आर्थिक स्थिति के अनुसार उत्तम चिकित्सा करने में बड़ी श्रद्धा से प्रयत्न करें। सबसे बड़ा डाक्टर वही हो सकता हैं जो रोगी के मन की स्थिति को समझने की जी तोड मेहनत करें और उसको शारीरिक कमजोरियों को पहचाने तथा उसकी आत्म संबंधी दैवी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावनाओं को ताड सकें। रोग की चिकित्सा करने उक्त तीनों बातों की बड़ी आवश्यकता होती है और जो इनका समन्वय नहीं कर सकेगा वह एक निरीह असमर्थ चिकित्सक सिद्ध होगा।

एक समय हम एक प्रसिद्ध स्नायुविक व्याधि, चिकित्सक की रचना पढ़ रहे थे। उसे पढ़ कर हमें विस्मय के साथ-साथ बड़ी प्रसन्नता हुई। वे लिखते हैं कि स्नायुविक संस्थान के रोगों की चिकित्सा करने के लिए रोगी की आध्यात्मिक प्रवृत्तियों को विकसित करना सबसे बड़ी अच्छी औषधी है। चिकित्सा विज्ञान शास्त्र का अध्ययन समाप्त कर उत्तीर्ण हुए डॉक्टर लोग चाहे मानसिक रोग चिकित्सा विज्ञान शास्त्र को अच्छी तरह समझें लेकिन उस विराट पुरुष की महिमा को नहीं समझ सकते जो इन सभी विज्ञान शास्त्रों का गुरु है। साधारणतया किसी भी रोग के इलाज करने के मानस–शास्त्र बड़ा प्रभाव रहता है। स्नायुविक संस्था–संबंधी चिकित्सा में विशेष रूप से इसका महत्व होता है। इन्हीं मानस-शास्त्र संबंधी शक्तियों के जरिए ही रोगी की विचारधारा अच्छी तरह पकड़ी जा सकती है जिससे चिकित्सा तथा उसकी औषधियों के प्रति रोगी का पूर्ण विश्वास जम जाता है। इसी तरह कुछ हद तक यह मानस-शास्त्र बड़ा उपकारी प्रतीत होता है। लेकिन आगे नहीं बढ़ सकता। आत्मा की उन्नति या जागृति इस तरह न केवल रोगी की विचारधारा के ऊपर प्रभाव डालती अपितु उसके आत्म संबंधी विशिष्ट गुणों को उत्तेजित करती है। इन्हीं आत्मीय-शक्तियों की प्रबलता के कारण या तो रोगी (चाहे स्त्री हो या पुरुष) चिकित्सक व उसकी औषधियों की विचित्र व पूर्ण सहयोगिता से शीघ्र ही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्थ हो जाता है या चिकित्सा विधि में पैदा होने वाली असुविधाएँ या दर्द पीड़ाओं को निश्चयात्मक बुद्धि से बर्दाश्त करना सीख लेता है। इस सहनशीलता के कारण उसके चेहरे पर दीड़ने वालो मुस्कान को देख कर कोई भी मानसिक रोग चिकित्सा अवश्य लज्जित होगा।

हम सभी पद्धतियों के चिकित्सकों का तथा अनुसंधान का सम्मान करते हैं। हमने उनके मौलिक तत्वों का भली–भांति अध्ययन किया है, और किस विषय में वे एक मत है, यह ढूंढ़ने की कोशिश की है। इस प्रकार हमने पूर्वीय और पाश्चात्य चिकित्सा विधियों के एकीकरण की चेष्टा की है। हमारा यह दावा नहीं कि अपनी चिकित्सा पद्धति सर्वांगपूर्ण है परन्तु हमारा विश्वास है कि हमारी समन्वय पद्धति में अन्य प्राणालियों के गुण विद्यामान हैं, अवगुण किसी के भी नहीं। हमारी आविष्कृत चिकित्सा विधि निम्न सिद्धांतों पर आश्रित है।

प्रथम सिद्धान्त (आयुर्वेदिक) :– निरन्तर खरल करने से औषधि की शक्ति बढ़ जाती है। यह सिद्धान्त होम्योपैथी के पोटेन्सी बढ़ाने वाले सिद्धान्त से भिन्न है। आयुर्वेद वेत्ताओं ने यह जान लिया था कि औषधि को निरन्तर खरल करने से मूल औषधि की अपेक्षा उसमें कई गुण शक्ति वढ़ जाती है, इसलिए प्राय. हर एक औषधि को खरल करके सूक्ष्म किया जाता है। जिससे वह वहुत थोडी मात्रा में शीघ्र और गहरा प्रभाव दिखाती है।

नोट A :– "परमाणु कृत औषधि" से परिभाषा से हमारा अभिप्राय इस गाइड में वही है और गत ५५ वर्षों से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका हम प्रयोग करते आ रहे हैं अर्थात् लगातार खरल द्वारा औषधि को अत्यंत सूक्ष्म रूप में परिणित कर देना।

आयुर्वेदज्ञों ने यह भी जाना था कि एक औषधि की स्थूल अवस्था में जो गुण पाये जाते हैं, तथा उसके परमाणु में उसके विपरीत गुण पाये जाते हैं। यह सिद्धान्त होम्योपैथी के सिद्धान्त से भिन्न है। यही सिद्धान्त एलोपैथी वाले भी स्वीकार करने लगे हैं। अन्तिम दोनों इसका वैज्ञानिक हेतु स्वीकार करते हैं। फलतः ये तीनों चिकित्सा पद्धतियाँ ही इस मूल तत्व को स्वीकार करती हैं परन्तु तरीका कुछ भिन्न हैं।

दूसरा सिद्धान्त : होम्योपैथिक : डाक्टर इ. ए. नोट-बाई तथा टी. जी. स्टोनहम के कथानुसार होम्योपैथिक सिद्धान्त से निर्धारित औषधियाँ शरीर की स्थाई प्रतिरोधक शक्ति को उत्तेजित करती हैं जिस प्रकार कि वैकसीन। इनसे रोगक्रांत शरीरिक तन्तुओं पर सीधा प्रभाव पड़ता है अथवा आस पास में तन्तु प्रभावित होते हैं। होम्योपैथी औषधियाँ रोग के लक्षणों के समान काम करने वाली होने से एक प्रकार से प्रकृति के अनुसार ही शरीर पर काम शरती हैं।

तृतीय सिद्धान्त : एलोपैथिक: रायटर, फोर्ड, राकवुड़, वाटर्स, ओंसबोर्न आदि प्रमुख विशेषज्ञों की राय है कि बड़ी मात्रा में औषधि देने से रोगी की कीटाणुओं को ध्वंस करने की क्षमता का हरास होता है किन्तु अल्प मात्रा में देने से यही क्षमता बढ़ती है। अन्य बड़े-बड़े डाक्टर यह भी स्वीकार करते हैं कि किस प्रमाण में औषधि सेवन कराई गई है इसके ऊपर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरोग्य निर्भर नहीं रहता, अपितु जिस प्रमाण में वह शरीर द्वारा गृहीत हुई है। अधिक खरल करने से सूक्ष्मांशों में विघटित की गई औषधि शीघ्र कार्य करती है।

डाक्टर डब्लू कारे ने अपनी पुस्तक 'मुत्राशय तथा पौरुष ग्रन्थि रोग' में लिखा है कि होम्योपैथी और एलोपैथी दोनों को एक-दूसरे की पूर्ति करना है दोनों को एक-दूसरे के कार्य-क्षेत्र की सीमा भली-भांति जाँच कर लेने के पश्चात एक-दूसरे के सहयोग से भविष्य के लिए एक आदर्श चिकित्सा कला का निर्माण करना है। इसके अनुसार गत ५५ वर्षों से चालू हमारा हर्बोमिनरल चिकित्सा सिद्धान्त अनेक चिकित्सकों के लिये नया नहीं हैं।

भावना :-यह सिद्धान्त विशेषकर आयुर्वेद का है और कुछ हद तक यूनानी में भी प्रयोग किया जाता है। इसका अभिप्राय यह है कि धातुओं अथवा खनिज पदार्थों को जड़ी-बूटियों के रस में खरल किया जाता है अथवा यूं कहिए कि धातुओं और खनिज पदार्थों के घोलों को जड़ी-बूटियों के वारुणी सारों व तरल सारों में घोलना होता है। अन्तर केवल इतना है कि तरल मिश्रित औषधियों में रसायनिक परिवर्तन हो जाते है किन्तु चूर्ण अवस्था में स्वाभाविक गुण पूर्ण रूप से बने रहते हैं। इसके अतिरिक्त अपने अद्भुत प्रभाव द्वारा बहुत गहरा और चिरस्थाई फल दर्शाते हैं।

औषधियों का द्रुत प्रभाव :-परमाणु रूप में सूक्ष्म की हुई औषधियों तुरन्त प्रभाव दिखाती हैं। ग्रीप्सवाल्ड विश्वविद्यालय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भेषज विद्या के अध्यापक डाक्टर शूल्ज ने इसी सत्य को परीक्षा द्वारा प्रमाणित किया है। उन्होंने मरकरी क्लोराइड के भिन्न-भिन्न शक्ति के घोल में ईस्ट के कीटाणु छोड़ दिये और निम्न प्रभाव पाये।

१. गाढ़े घोल में कीटाणु शीघ्र मर गये।

२. हल्के घोलो में अधिक समय तक रहे।

३. इससे कम ताकत वाले घोल में इन कीटाणुओं की केवल शक्ति क्षीण हुई।

४. जब इन्हें अत्यन्त हल्के घोल (सत्तर या अस्सी लाख वाले भाग) में डाला गया तो ईस्ट के कीटाणों की जीवन शक्ति इतनी बढ़ गई कि वह बढ़ कर असंख्य हो गये।

ठीक इसी प्रकार अल्प मात्रा में औषध देने से विशेषकर परमाणू औषधि के प्रयोग द्वारा शरीर को शक्ति प्राप्त होती है। अधिक मात्रा देने से शरीर की शक्ति कम होकर नई बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं।

दूसरा वैज्ञातिक हेतु :—निरन्तर खरल करने से परमाणु रूप में सूक्ष्म की हुई औषधियाँ, उदर में जाने से पहिले ही मुंह की श्लेष्मिक कला द्वारा शरीर में चूस ली जाती हैं। इसी कारण से वे रोग की तीव्र अवस्था में कुछ ही मिनटों में अपना काम कर जाती हैं न कि घंटों में। इसी बात को सिद्ध करने के लिए यह संभव है, कि सूक्ष्म परमाणू रूप परिणत की हुई औषधियाँ (जैसे हमारी प्रसिद्ध औषधियाँ सीधी जिव्हा की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीष्मिक कला) द्वारा रक्त में मिल जाती हैं : डाक्टर मेड मैंडल (एसन) द्वारा निम्नलिखित परीक्षण किया गया है।

उन्होंने किसी मनुष्य को जिव्हा पर परमाणु रूप में परिणत डिजीडालिस नाम की औषधि में शीशे की सलाई भिगोंकर छू दी। कुछ सैकंड के बाद यंत्र द्वारा उसके हृदय पर प्रभाव प्रतीत हुआ। इसके पश्चात् इसी प्रकार मार्फिया परमाणु रूप विभाजित किया हुआ एक बूंद किसी मनुष्य की जीव्हा पर डालते ही दो मिनट में भीतर उसके धमनिगत रक्त को निकालने पर उसमें वह पाया गया।

इसी कारण स्पष्ट है कि हमारी मिश्रित औषधियाँ जब अल्प मात्रा में या तरल रूप में रोगी को दी जाती हैं तो वे तुरंत लाभ दिखाती हैं जिसे देखकर डाक्टर भी दंग रह जाते हैं।

उपरोक्त धारणायें वैज्ञानिक सत्य कही जा सकती हैं परन्तु हमारा कार्य इससे भी बड़े और व्यापक सिद्धान्त पर आधारित है। वह यह है कि **"दयालु परमात्मा ने प्रत्येक अन्य पदार्थों के समान ही, औषधियों में भी सभी स्तर के व्यक्तियों का ध्यान रखा है, इसीलिए निर्धन मनुष्यो के लिए सस्ती औषधियाँ अवश्य होनी चाहिए।"**

इसलिये हमारे काम की सफलता भी अपनी सृष्टि पर प्रभु की कृपा समझना चाहिए न कि मनुष्य की बुद्धि का चमत्कार।

प्रायः बहुत लोगों की यह धारणा है कि केवल अधिक मूल्य की औषधियाँ गुणकारी है। खेद इस बात का है कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्धन रोगी भी यही धारणा किये हुए हैं कि सस्ती औषधियाँ लाभ नहीं करती। यह केवल निराधार कल्पना है और इस कल्पना से जनता को एक अशुद्ध वातावरण ने घेर लिया। इससे बचने का उपाय केवल यह है कि हमारे डाक्टर अपने तरीके को बदलें और अपने देश की स्थिति के अनुसार चिकित्सा विधि को स्वयं अपनाकर दूसरों को प्रेरित करें।

आजकल चिकित्सा विज्ञान ने जो उन्नति की है उसमें संदेह नहीं किया जा सकता, परन्तु प्रश्न यह है कि जनसाधारण को उससें कितना लाभ पहुँचा, इस उन्नति से लाभ उठाने का व्यय भी प्रतिदिन बढ़ता गया है। दूसरी ओर कुछ प्रथा-सी बन गई है कि डाक्टर तब तक चिकित्सा आरंभ नहीं करता जब तक वह स्वयं अपने निदान के सम्बन्ध में दूसरे डाक्टरों और उनके विस्तृत तथा बहुपुल्य रोग परीक्षा साधनों जैसे रक्त, मूत्र तथा कफ इत्यादि की परीक्षा द्वारा पुष्टी अथवा सुधार न कर पावें। डाक्डरी चिकित्सा एक तो स्वयं ही महंगी है फिर उसके साथ पौष्टिक औषधियाँ तथा पथ्य इत्यादि का व्य इसे और भी महंगा बना देता है। जो कि न केवल रोगी की सामर्थ्य से अधिक, अपितु किन्हीं दशाओं में उसकी मासिक आय से भी कहीं अधिक बढ़ जाता है। कितनी दयनीय दशा है।

इस लम्बे ५५ से अधिक वर्षों के समय में जो कुछ सफलता हमें मिली हैं वह केवल हमारे ही प्रयत्न का फल नहीं हैं, अपितु विशेषकर डाक्टरों और सामान्य रूप से अनेकों समझदार व्यक्तियों के उत्साहपूर्ण सहयोग का परिणाम है। चिकित्सक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुदाय के अतिरिक्त सारे भारतवर्ष में अनेकों धर्मार्थ संस्थाओं तथा औषधालयों द्वारा डीशेन वनस्पति खनिज औषधियाँ अत्यन्त सफलतापूर्वक प्रयोग में लाई जाती हैं।

हमारी दवाईयों के बक्स जिला बोर्ड, सायुदायिक विकास खंडों (Community Development Blocks) और भारतवर्ष की अनेकों सरकारी तथा अर्ध सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रयोग में लाए जाते है।

रोगों कें बचाव और उनकी चिकित्सा के मूल सिद्धांत :–

यह और अगले कुछ अध्याय चिकित्सा विज्ञान के अनिभज्ञ साधारण जनता के लाभ के लिए लिखे गये हैं, जिससे कि वह यह जान लें कि रोग की कैसे रोका जा सकता है तथा स्वास्थ्य रक्षा के साधारण नियम क्या हैं। हमने यहाँ न केवल उन्ही रोगों के सम्बन्ध में आलोचना की है जो कि बहुत साधारण हैं तथा अन्य अनेकों रोगों की सृष्टि करते हैं।

प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति को दो वातें जानना आवश्यक हैं पहली–जीवन को दार्शनिक दृष्टिकोण से कैसे ग्रहण किया जावे, दूसरी–अपनी और अपने आश्रितजनों की स्वास्थ्य रक्षा कैसे की जावे?

जीवन का दार्शनिक दृष्टिकोण से अभिप्राय है कि हम इस संसार में अपनी इच्छा से जीवित नहीं हैं, अपितु ईश्वर की इच्छा पर हैं और हमें यहाँ भेजने का कोई उद्देश्य जिसे पूरा करना हमारा कर्त्तव्य है। इसी उद्देश्य को न समझकर जीवन यापन करने में जीवन असान हो जाता। हम यह नहीं जान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाते कि हमें क्या करना है ? हम अन्धाधुन्ध चलते जाते है जिनका परिणाम यह होता है कि हम जो कुछ भी करते हैं या सम्पन्न कर पाते हैं वह न तो हमारे और न दूसरों के ही काम आता है अपितु जीवन व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है।

शिक्षा के द्वारा एक-दूसरा दायित्व हम पर लागू होता हैं। वह यह है कि प्रत्येक मनुष्य स्वास्थ्यरक्षा के प्राथमिक नियमों से अवश्य अनभिज्ञ न हो। कितने शिक्षित लोग ऐंसे हैं जो यह कह सकते हैं कि अपनी स्वास्थ्य रक्षा तथा रोग चिकित्सा के सर्व साधारण नियमों पर विचार करना आवश्य है।

स्वास्थ्य का महत्व हम उसे खो देने के बाद ही जान पाते हैं। हम में से बहुत से नहीं, अपितु सभी व्यक्ति अपनी अतीत की भूलों पर पछताते हैं। यदि आप अपनी वर्तमान स्वास्थ्य हीनता के जिम्मेदार है तो निराशा न हो। आप निश्चय ही इसे पुनःप्राप्त कर सकते हैं। पहिले रोग निवारण के उपाय भली-भांति समझ लेने चाहिए, यदि अपने लिये नहीं तो कम से कम दूसरों के लिए जिससे कि आप उन्हें उन भूलों से बचा सकें जो कि आप स्वयं कर चुके हैं। यह मानव जाति के प्रति सर्वोच्च दान और सर्वोपरि सेवा है।

मानव स्वभाव की प्रधान त्रुटि है असंयम। हम सम्पूर्ण भाव से इन्द्रियों के दास बने हुए है। किसी प्रलोभन होने पर हमसे इन्कार नहीं होता। इन्द्रियां प्रकृति की देन हैं और इसी-लिए परम उपकारी हैं परन्तु यदि उन्हें वशीभूत न किया जावे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वे ही हमारी परम शत्रु हैं। यह हमारी इन्द्रिय या इन्द्रिय परायणता ही है जो कि हमारे रोगों और दुःखों का कारण होती है, इसलिएय अच्छा बनने की चेष्टा करो। अपना आहार और पान मिताचारी रखने की चेष्टा करो। काम करो और जी तोड़ काम करो। उपयुक्त विश्राम करो तथा स्वास्थ्यवर्धक मनोरंजन भी करो। उपयुक्त व्यायाम का अभ्यास करो। परिमित निद्रा लो तथा रात को दिन मत बनाओ। दूसरों की सेवा करना सीखो। स्वार्थी न बनो। भलाई करने का अवसर देखते रहो। अपने विचारों कों काबू में रखो। ये हैं वे आवश्यक नियम जो कि अच्छी सेहत रखने के लिए जरूरी हैं। इसके अतिरिक्त और भी विज्ञान सम्मत नियम जोड़े जा सतते हैं।

दूसरी आवश्यक रोग निवारण का प्राकृतिक नियम यह है कि जितनी चादर देखो उतना पैर पसारो। हो सकता है कि कुछ व्यक्ति इस नियम के कहने से हम पर हँसे। हम यह भूल जाते हैं कि अपने आपको बड़ा जाहिर करना मन पर बड़ा घातक परिणाम डालता है। चढे हुए मस्तिष्क से ऊँचे-ऊँचे ख्याली पुलाव पकाए जाते हैं और फिर ऐसे विचारों को मनुष्य वैसा ही क्रियात्मक रूप देने में बाध्य होता है। सादा रहन-सहन से विचारों में सादगी उत्पन्न होती है। विलासिता का जीवन निकृष्ट विचारों का दुष्परिणाण है।

सम्भवतः ऊपर लिखे रोग निवारण के उपाय कुछ असंगत अथवा कटु प्रतीत हों परन्तु हमने जीवन का लम्बा समय इस बात की खोज में बिताया है कि रोगों के सन्निकट और दूरस्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण क्या-क्या हुआ करते है इसलिए हम ऐसे कटु सत्य की भी स्पष्ट रूप से कहना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

रोगों की चिकित्सा में एक बात और भी आवश्यक है और वह है विश्वास और श्रद्धा। ईश्वर में विश्वास रखो औषधि पर विश्वास रखो तथा अपने आप पर विश्वास रखो। अपने में विश्वास रखने से हमारा तात्पर्य यह है कि रुग्णावस्था में मन स्वाभावता ही अस्थिर और चंचल हो जाया करता है। तब हम एक डाक्टर से दूसरे डाक्टर के पास और एक दवा के पश्चात् दूसरी दवा निगलते जाते हैं। इससे रोग बढ़ता ही चला जाता है।

मन में शान्ती रखो। जब एक डाक्टर के हाथ में अपने आपको सौंपते हो उसमें विश्वास रखो, विशेष कर जब कि रोग पुराना हो। तुम्हें डाक्टर को पर्याप्त अवसर देना चाहिए और विशेष कारण के बिना उसे न बदलो। पुराने रोग को ठीक होने में समय अधिक लगता है परन्तु प्रभाव दीर्घ एवं स्थायी होता है। यदि रोग जल्दी ही कट जाये तो प्रायः फिर लौट आता है।

यदि आप स्वयं अपनी चिकित्सा (हमारी औषधियों द्वारा) हमारी पुस्तकों में बताई विधि के अनुसार करना चाहें, तो अवश्य ही पहले आप अपने शारीरिक और मानसिक वैशिष्ट्य (प्रकृति) को भली-भांति जाने तथा अच्छी तरह अपने रोग की परीक्षा करें और फिर जो औषधि अपने लिए निर्वाचित करें उसे भी अच्छी तरह समझ लें तथा अन्त में औषधि के शरीर पर प्रभाव के सुचारु रूपसे सम्पन्न होने में सहायता देने के लिए अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहार-विहार को भी नियमित करें। आपको यह भी याद रखना चाहिए कि औषधियों की शक्ति सीमित हुआ करती है। औषधियाँ केवल प्रकृति को सहायता देती है रोग को दूर नहीं करती। यह प्रकृति ही है जो कि वस्तुतः रोंग को दूर करती है। अतः प्रकृति के नियमों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। जहाँ तक हो सके उसका पूरी तरह पालन करना चाहिए।

यह कहा जाता है कि हम विज्ञान की दुनिया में रहते हैं। यह सत्य है परन्तु हमें यह भी न भूल जाना चाहिए कि विज्ञान की सेवा करते हुए हम विज्ञान की जननी प्रकृति को भूल जाते हैं। लोगों की यह धारणा है कि औषध, टॉनिक, इन्जेक्शन तथा विद्युत-चिकित्सा आदि रोग मुक्त कर सकते हैं उनको अपने लिए और कुछ इस विषय में करना नहीं है। यह धारणा भ्रान्त है। अनेक व्यक्ति केवल अधिक दवाईयां खाकर ही रोगी बने हैं। अन्धाधुन्ध दवाओं का प्रयोग अनेक रोगों की सृष्टि करता है। कई बार उपद्रव स्वरूप हुए ऐसे रोग उन मूल रोगों कि अपेक्षा भी अधिक घातक हो जाते हैं जिनके लिए दवाई का प्रयोग किया गया था। "मरज बढ़ता ही गया ज्यूं-ज्यूं दवा की। तीक्ष्ण औषधियों से सदैव बचो। इसलिए औषधियाँ चाहे वह हानि रहित (जैसे कि हमारी औषधियाँ है) भी हों, उनके अतिरिक्त प्रयोग नहीं करना चाहिए।

जीवन शक्ति (Vitality) :-यह क्या है? शरीर के भीतर रहने वाली यह वह शक्ति है जो कि हमें रोगों से बचाती हैं। इस शक्ति के सम्बंध में लोगों में बहुत बार गलत धारण होती है। इसलिए हमें इस पर भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से विचार करना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। चिकित्सा-शास्त्र की दृष्टि से जीवनी शक्ति का अर्थ यह है कि शरीर के अगणित कोषों का सुचारु रूप से कार्य करते रहना। परन्तु हमें दुःख के साथ कहना पड़ता है कि डाक्टर तक भी इस विषश के प्रति उदासीन हैं। साधारण लोगों की धारणा है कि दैनिक शक्ति ही जीवन शक्ति है और हर कोई इसे प्राप्त करने का मार्ग सोच रहा है।

जीवन-शक्ति को तीन भागों में वांटा जा सकता है। जैसे शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शक्ति।

आपको यह विदित होगा कि तीनों शक्तियों में मानसिक शक्ति दूसरों से अधिक प्रमुख मानी जाती है क्योंकि इसी शक्ति से हम अपने जीवन का वास्तविक रूप देख सकते हैं। मन ही सारे शरीर पर राज्य करता है। इस मन द्वारा ही सारे शरीर के पेशियों तथा स्नायुओं का संचालन होता है। दुर्बल शरीर वाला मनुष्य भी मानसिक शक्ति द्वारा अधिक जीवन प्राप्त कर रहा है। एक दुर्बल मनुष्य जो मानसिक शक्ति से भरपूर है जल्द और आसानी से रोगों से छुटकारा पा सकता है बनिस्वत एक ऐसे मनुष्य के जिसकी मानसिक शक्ति दुर्बल है।

'स्वस्थ शरीर में स्रस्थ मन' ही अपना सिद्धान्त होना जाहिए।

यद्यपि जीवन शक्ति को हमने तीन भागों में विभक्त किया तथापि हमको यह न भूलना चाहिए कि ये तीनों एक-दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध रखते हैं इसलिए एक-दूसरे से पूर्णतया पृथक नहीं किये जा सकते। हमने तीन भेद इसलिए दर्शाये हैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि जिससे यह प्रतीत हों जावे कि हम किसी एक को ही महत्व नहीं देते और न ही शेष छोड़ सकते हैं।

आत्मिक शक्ति के सम्बन्ध में कुछ कहे बिना हम यहाँ समाप्त नहीं कर सकते। जगत् में चारों ओर देखने से प्रतीत होगा कि कौन हमारी श्रद्धा का अधिक पात्र है, न वह जो सुन्दर और सुडौल है, न वह जो अधिक पढ़ा लिखा है और न ही वह जो अधिक धनवान है बल्कि केवल वय ध्यक्ति जो चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो सत्य के मार्ग पर चलता है और बुरे कामों से सदा दूर रहता है।

अध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने के लिए यह आश्यक नहीं हैं कि साधु या सन्यासी बन जावें। अपितु इसे पाने के लिए सदैव हमारा हृदय उस परमात्मा की ओर अग्रसर रहना चाहिए और यही भावना बनी रहनी चाहिए कि जो कुछ हमारे साथ हो रहा है वह उस प्रभू की इच्छा से हो रहा है। प्राणी को इस प्रकार का दृढ़ विश्वास हो जाने पर परमात्मा अवश्य ही अपने आश्रितों की सब प्रकार रक्षा करता है। यह न भूल जाना चाहिए कि परमेश्वर ने प्रत्येक वस्तु को मनुष्य के लिए पैदा किया है कि मनुष्य को स्वयं अपने लिए। जब मनुष्य अपने को ईश्वर के आधीन समझता है, तब संसार की सभी वस्सुएँ मनुष्य के अधीन और अनुकूल रहती हैं। पर जब मनुष्य ईश्वराज्ञा का पालन न कहता हुआ विपरीत आचरण करता है संसार की वस्तुएँ उसके प्रतिकूल हो जाती हैं, साथ में औषधियाँ भी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य का पुनरुद्धार :– किस प्रकार दीर्घ जीवन प्राप्त किया जावे? जिस प्रकार हम जीवर को घटा सकते हैं, उसी प्रकार उसे वढ़ा भी सकते है। प्राकृतिक नियमों और विज्ञान सम्मत सिद्धान्तों पर चलने से दीर्घ जी प्राप्त होती है। प्राकृतिक नियम वह हैं जिन्हें प्रत्येक मनुष्य आसानी से समझ सकता है। विज्ञान सम्मत सिद्धान्त भी यद्यपि प्राकृतिक सिद्धांत ही हैं परन्तु वह केवल सुशिक्षितजनों द्वारा ही समझे जा सकते हैं।

दीर्घ जीवन व्यतीत करने के लिए हमें पौष्टिकता, आहार सात्मीयकरण तथा कोष्ट पनिष्कार की ओंर पूरा ध्यान देना चाहिए। यही प्राकृतिक नियम है और जीवन को प्राकृतिक वनाने में सहायता देता है। इसलिइ हमारा स्वास्थ्य वहुत कुछ इस बात पर निर्भर रहता है कि इसे इन नियमों के अनुसार किस प्रकार चलाते हैं? हमें कर्त्तव्य पालन के लिए जीवन विताना है न कि भोग-विलास के लिए। हमारे पास रोगियों के ऐसे वहुत से पत्र आते हैं। जिनमें अनेक प्रकार के रोगों के विस्तृत तथा कष्टदायक वृत्तांत रहते हैं और हमसे चिकित्सा की माँग की जाती है तथा विशेष जिन्ता इस बात के लिए प्रकट की जादी है कि हम खोई शक्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं? वे जीवन का आनन्द लूटने के लिए शक्ति चाहते हैं। उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति की ओर उनका लक्ष्य नहीं होता। हम भूल जाते हैं कि शक्ति उत्तम स्वास्थ्य का ही परिणाम होतीं है। उत्तम स्वास्थ्य के मार्ग की रुकावटों को दूर किये बिना खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिगड़े हुए स्वास्थ्य का निर्माण ही खोई शक्ति का पुनरुद्धार है। अब हम स्वस्थ्य की रक्षा तथा पुनः प्राप्ति के मूल सिद्धांतों का वर्णन करते हैं। रोगों की चिकित्सा के अध्याय में "शारीरिक चिकित्सा" के अन्तर्गत हमने उस बात का विशद रूप से वर्णन किया है कि विज्ञान मनुष्य को क्या-क्या लाभ पहुँचा सकता है? इसलिए दोनों जगह अच्छी तरह अध्ययन करने से हम भली-भांति जान सकते हैं कि किस प्रकार से अपनी, अपने प्रियजनों तथा दूसरों की सहायता कर सकते हैं।

पौष्टिकता (Nutrition) :—इससे अभिप्राय यह है कि हमें अच्छी तरह से भोजन करना चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं कि बहुमूल्य भोजन ही उत्तम भोजन है परन्तु वह भोजन जो हमारे लिए व्यक्तिगत रूप से स्वाभाविक है वही हमारा उत्तम भोजन है। एक के किये जो अमृत है दूसरे के लिए वही विष हो सकता है। दाल चपाति खाने वाले प्रायः मुर्गे और बतख खाने वालों की अपेक्षा अधिक हृष्ट पुष्ट और सुदृढ़ पाये जाते हैं। वैज्ञानिक पौष्टिकता से अभिप्राय अपने आहार को बहुमूल्य व गरिष्ट बना लेना मात्र है। मशीन द्वारा साफकिए चावल और डबल रोटी में पोषक तत्व बहुत कम होता है। गरिष्ट वस्तुएँ हमारे कमजोर आमाशय के लिए दुष्पाच्य होती है। कई वस्तुएँ बहुत मूल्यवान होने के कारण हम प्रयोग में लाने में असमर्थ होते हैं तब क्या किया जावे? यहाँ विज्ञान हमारी सहायता करता है। हमारे द्वारा प्रस्तुत अल्बोसांग दिन में दो बार आधी चम्मच से एक चम्मच तक लेने से हमारे भोजन में सभी जीवन तत्व तथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लवण आदि पूरे हो जाते हैं जो कि हमारी स्वास्थ्य रक्षा के लिए आवश्यक हैं।

भोजन का पचना (Digestion) :—भोजन का अच्छी तरह पच जाना अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी है। हम क्या खाते हैं और किस प्रकार खाते हैं इसी के ऊपर हमारी पाचन क्रिया निर्भर रहती है। हम अज्ञान के कारण अभक्ष्य वस्तुएँ खाते हैं और भक्ष्य पदार्थों को भी अनुचित रूप से खा जाते हैं। कोई चीज गले के नीचे तब तक न उतारी जाये जब तक वह चबाकर मुंह में लुगदी-सी न बना ली जाय। भोजन अच्छी प्रकार चबा कर खाया जावे तो आवश्यकता से अधिक नहीं खाया जा सकता। दांतों की खराबी से भी अजीर्ण हो जाता है और अजीर्ण के कारण दांत खराब हो सकते हैं। इसीलिए यदि आपको दांत ठीक रखने हों तो पाचनशक्ति का ध्यान रखें और पाचनशक्ति ठीक रखनी हों तो दांतों का ध्यान रखें।

पाचन सम्बन्धी रोग प्रायः धोखा देने वाले होते हैं। जो मनुष्य अच्छा खाते हैं (निश्चय ही अधिक खाते हैं) और फिर करते हैं कि हमारी पाचनशक्ति बहुत उत्तम है। हो सकता है कि वे बहुत बुरी तरह अजीर्ण से ग्रस्त हों। पाचन सम्बन्धी योग प्रायः अधिक चाय या काफी पीने और धूम्रपान करने से भी हो जाते हैं।

भोजन का सात्म्यीकरण (Assimilation) :— आहार का ठीक प्रकार से सात्म्यीकरण न होना तब कहा जाता है जब कि मनुष्य अच्छा भोजन खाता है और उसे अच्छी तरह हज़म भी करता है, परन्तु फिर भी जीर्ण शीर्ण दिखाई देता है। इसके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई व्यक्त व अव्यक्त कारण है जिनका विस्तृत वर्णन रोगों की चिकित्सा प्रकरण करेंगे ।

स्नायुविक विकार (Nervous disturbances) :—हमारे अच्छे स्वास्थ्य के नियमन करने में बहुत कुछप्रभाव स्नायु-मण्डल का भी होता है । वर्तमान सभ्यता ने हमारे मस्तिष्क और स्नायु-मंडल पर काफी बुरा प्रभाव डाल रखा है । यहां तक कि नवजात शिशु भी इससे पीडित होते हैं । स्नायुविक विकारों से बचने की सर्वोत्तम प्रकृतिक चिकित्सा यह है कि नियमित जीवन, गहरी निद्रा तथा मस्तिष्क शीतल रखा जावे अर्थात् सांसारिक चिंताओं से बचना आवश्यक है । मस्तिष्क शान्त तभी रह सकता है जब कि जीवन का वास्तविक रूप सामने रखा जावे । यदि हम जीवन का उद्देश्य विलासिता, नाम पाना या धन बटोरना ही बना लें तो किसी दिन ये ही सब चीजें हमारी शत्रु बन जाती है । यदि हम कर्त्तव्य पालन को जीवन का ध्येय माने तो जिस ईश्वर ने यह कर्त्तव्य हमें सौंपा है, वह हमारी सहायता करता है, जिससे हम अपनी जिम्मेदारी को समझकर मनुष्यतापूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं । यह है जीवन की दार्शनिकता का रूप और इसके निभाने के लिए हमें प्रकृति की शरण में जाना होगा और दुर्बल स्नायु-मंडल को विज्ञान की अमूल्य सम्पत्ति द्वारा लाभान्वित करना होगा ।

स्नायु विकार :—स्वाभाविक व अस्वाभाविक दोनों कारणों से हो सकते हैं । बीमारी मानसिक श्रम, अधिक परिश्रम चिंता शोक तथा अनेकों जीवन के उत्थान और पतन जिनसे हम प्रतिदिन ग्रस्त रहते है-ये हैं स्वाभाविक कारण और अस्वाभाविक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण है-प्रकृति विरूध आचरण, अमित व्यय, अप्राकृतिक मैथुन तथा हर प्रकार की अति। प्रकृति के नियमों की अवहेलना करके कोई भी मनुष्य दण्ड से वच नहीं सकता।

इसके अतिरिक्त स्नायुविक विकार-पौष्टिकता का अभाव अपच तथा कोष्ट वद्धतां के कारण भी हो सकते हैं। और उन कारणों के दूर करने से निवृत्ति भी हो सकती है इसके अलावा स्नायुविक विकारों से पाचन क्रिया शक्ति (जठराग्नि) स्वात्म्यी-कारण शक्ति, मल विसर्जन क्रिया शक्ति कुंठित होना तछा रक्त दूषित होने की भी संभावना है। यह अन्योन्याश्रम दोष हैं तथा चिकित्सा शास्त्र की एक कठिनतर समस्या है।

"आधुनिक चिकित्सा विज्ञान का नया रास्ता" नामक इस संक्षिप्त उद्धरण में हर किसी बीमारी में स्नायुविक मंडल की चिकित्सा की प्राधान्यता बताई गई। इसमें लिखा गया है कि ईसा मसीह से करीब पांच सौ वर्ष पूर्व जब सोक्रटीस महाशय सैनिक सेवा से निवृत्त होकर वापस आये थे तब अपने देशवासियों से कहा कि चिकित्सा विज्ञान की एक पहलू में देखा जाय तो असभ्य ग्रेवियन्स (Thracians) आगे वढे हुए हैं, उनकी धारणा है कि "मन की स्थिति को सुधारे विना शरीर स्वस्थ नहीं बन सकता" आगे चल कर वे इस तरह कहते हैं कि "इसी कारण से हेल्लास" (Hellas) के चिकित्सक कई रोगों की चिकित्सा नहीं कर पाते क्योंकि वे समग्र चिकित्सा विधि से अनभिज्ञ हैं"।

Journal of the American Medical Association
8th March 1947.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त दूष्टि :– जैसा कि हमने देखा है कि कोई भी वस्तु रक्त को दूषित कर देती है और दूषित रक्त स्नायुविक रोग तथा पाचन क्रिया के विकार इत्यादि उत्पन्न करता है। चिकित्सा के प्रकरण में हमने रक्त के दूषित होने के बहुत से कारणों पर प्रकाश डाला है जिसमें दो बहुत आवश्यक नीचे दिये जाते हैं।

जीर्ण विषम ज्वर (Chronic Malaria) :– इस रोग से भारतवर्ष में बहुत क्षति पहुँच रही है। साधारण लोगों को यह मालूम नहीं है कि मलेरिया का विष शरीर में वर्षो छिपा रहता है किसी व्यक्ति को मलेरिया २५ दिन पूर्व या २५ सप्ताह पूर्व आया हो यह सम्भव हैं कि वह गुंप्त रूप से शरीर के भीतर अनेक प्रकार की क्षति पहुँचा रहा हो। पुराने अथवा छिपे हुए मलेरिया का एक बिशेष लक्षण है कि इसके अत्यल्प प्रभाव से ही रोगों की पाचक शक्ति विगड़ जाती हैं। किसी-किसी में ज्वर के लक्षण बने रहते हैं दूसरों में थर्मामीटर से पारा ऊपर नहीं चढ़ता।

उपदंशज विष (Veneral Poison) : का शरीर में होना। जिन लोगों के गनोरिया रोग अथवा सिफलिस हो चुका है, और जिन्होंने उसके विष से शुद्ध करने के लिए पूरा इलाज नहीं कराया हैं उनका न केवल स्वास्थ्य ही अच्छा रहता अपितु रोगी की चिकित्सा में भी कई तरह की बाधाएँ पहुँजती हैं। चिकित्सा विद्वानों के कथानुसार उपदंशज विष शरीर में कई वर्षों तक सक्रिय रूप से छिपा रहता हैं। इसलिए जिन लोगों को दुर्भाग्य से यह रोग हो चुका है और आरम्भ में ठीक चिकित्सा की गई हो, उनको रक्त शुद्ध के लिए कई वर्ष तक औषध सेवन करते रहना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए। उन्हें इस भ्रम में न पड़ना चाहिए कि रोग के लक्षण विशेष न देख कर वे सर्वथा रोग मुक्त हो गये हैं। ऐसा लिखकर हम उन लोगों को भयभीत करना नहीं चाहते। हम केवल इस कटु सत्य को स्पष्ट कर उनके खोये हुए स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त करने के वे साधन बता रहे हैं जो की विज्ञान सम्मत और हमारे अनुभव द्वारा सर्वथा उत्तम, सरल, हानिरहित तथा विश्वास योग्य सिद्ध हो चुके हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेषज गुण धर्म संग्रह

द्वितीय विभाग

साधारण व्यवहार विधि :– प्रत्येक औषधि की मात्रा (विशेष कर यदि मात्रा औषधि प्रसंग में न निर्दिष्ट की गई हो) बच्चों के लिए १/४ गोली से १/२ गोली और वयस्कों के लिए आधी से एक गोली तक देने चाहिए। साधारणतः मध्यम मात्रा का प्रयोग ही उचित है परन्तु जहाँ बहुत शीघ्र दवाई के प्रभाव की आवश्यकता हो या रोग तीव्र हो जैसे उच्च ताप, उदर शूल इत्यादि में पूरी मात्रा में दे सकते हैं। साधारणतः औषधि एक से तीन घंटों के अन्तर से सेवन करनी चाहिए। रोग, की तीव्रता को देखकर निर्णय करे। परन्तु जीर्ण रोगों में चार घंटे या अधिक अन्तर रखें। तरुण रोगों में छोटी मात्रा थोड़ी-थोड़ी देर देने से अच्छा लाभ होता है। ज्यों-ज्यों रोगी की दशा सुधरती जावें, दवाई का अन्तर बढ़ाते जावें और औषधि की मात्रा कम करते जावे। ऐसा करना आवश्यक है क्योंकि प्रकृति को अपना कार्य करने का अवसर मिल सके। हमारे दवाई के नाप वाले चम्मच के बड़े सिरे में एक ग्रेन पवाई आती हैं और छोटे सिरे में आधा ग्रेन। दोनों के माप चम्मच के सिरे किनारों तक भरे हों न चोटी कि तक लदें हों। यदि थोड़ा कम ज्यादह हो जावे तो कोई क्षति नहीं। दवाई जिव्हा के उपर रखकर थोड़ा पानी पी लिया जावे अथवा पानी या दूध में घोलकर पी लो या शहद मिला कर चाट लें जैसा कि प्रत्येक औषधि के बारे में बताया गया है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपान :—औषधि क्रिया को कम करने या बढ़ाने के लिए होता है। औषधि को गरम जल में घोल कर या औषधि मुंह में डालकर ऊपर थोड़ा गरम पानी पी लेना शीघ्र प्रभाव दिखाता है। दवाई को गरम पानी ने घोलकर देने से (चाहे बाद में पानी ठंड भी हो जावे) उत्तम लाभ होता है। दूध के साथ मिलाकर देने से औषधि की प्रतिक्रिया की सम्भावना नहीं होती और तीव्रता कम हो जाती है। रोगी दुर्बल हो या कोमल प्रकृति का हो या विशेष कर जब रोगी किसी प्रकार की तीव्रता, प्रतिकिया, या गरमी सी अनुभव करे तो एक से पाँच चाय के चम्मच भर दूध में (विशेष रूप से आयोविन, मेडिटॅब) घोलकर देना चाहिए। कभी-कभी मात्रा अधिक होने से भी उपरोक्त प्रतिक्रियाएँ देखने में आती हैं। उस दशा में मात्रा घटा देनी चाहिए। १/४ से १/२ चम्मच भर मधु भी एक उत्तम अनुपान है, विशेषकर छाती और फेफड़े की बीमारियों में अथवा जहाँ पर उत्तेजक प्रभाव की आवश्यकता है।

काल पथ्य इत्यादि (Time, Diet, etc) :— रोग निवारक औषधियाँ खाली पेट अथवा आंशिक खाली पेट अर्थात् खाना खाने से आधे से एक घंटा पूर्व अथवा दो से तीन घंटे बाद अच्छा फल देती है। पौष्टिक औषधियाँ या तो खाना खाने बाद दी जावे अथवा किसी तरल खाद्य में मिलाकर खाना उचित है। पथ्यापथ्य के लिए कोई निषेध नहीं है जो अनुकूल पड़े खाओ, जो अनुकूल न पड़े मत खाओ। उग्र पीड़ाओं में हल्का और तरल भोजन ही श्रेष्ठ है। जठराग्नि सम्बन्धी रोगों में आहार के समुचित प्रयोग पर ही आरोग्य निर्भर रहता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्रण (Combinations) :–सभी औषधियाँ एक दूसरे के साथ मिलाकर प्रयोग की जा सकती हैं। बुद्धिमत्ता के साथ मिश्रण करनें में ही औषधियों की सफलता निर्भर रहती है। आवश्यकता के अनुसार विशेष परिस्थितियों में दो या तीन तरह की औषधियों का विशेष मिश्रण तैय्यार किया जा सकता है। पर इस मिश्रण का अनुपात ठीक रखना होगा, जैसे एक अधिक मात्रा में दुसरी कम मात्रा में इत्यादि। इंजेक्शन लगाने के लिए भी इसी प्रकार मिश्रण किए जा सकते हैं।

घर्षण या खरल करना (Trituration):- वनस्पति खनिज औषधियाँ भी होम्योपैथी की तरह चीनी के साथ खरल करके किसी भी शक्ति (Potency) में तैयार की जा सकती हैं। एक एम. डी. उपाधिधारी डाक्टर, जिन्होंनें होम्योपैथी का अच्छा अध्ययन किया है हमें लिखा है कि हमारी मेडिटॅब तथा अल्बोसाँग ३ × शक्ति में प्रयोग करने से क्षम रोग में अधिक उत्तम फल देते हैं। हमारी परमाणुकृत यौगिक औषधियों में इस दरजे तक शक्ति संजारित की गई है कि सभी लोगों के अनुकूल पड़े।

औषधि बाक्स(Medicine Chest) :- प्रत्येक बाक्स में आठ औषधियाँ रहती है, जिनको नम्बर एक से आठ तक विना जाता है। सेवन विधि १४ भाषाओं में छपीं हुई छोटी सी पुस्तकों में मिलती है। ये दवाइयों के बाक्स सारे भारतवर्ष में सरकार तथा धर्मार्थ संस्थाओं द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सेवा कार्य के लिए प्रयोग किये जा रहे हैं साधारण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहस्थ भी इसे घरेलू इलाज के तौर पर बरत रहे हैं। इस प्रसंग में प्रत्येक गृहस्थ के योग्य हमारी 'पूर्ण औषधालय' नामक पुस्तिका देखे।

वनस्पति-खनिज औषधियाँ बहुत शीघ्र प्रभाव दिखाती हैं। नये रोगों में शीघ्र गति से तथा पुराने रोगों में कुछेक घंटों में लाभ देती हैं। रोगों में एक बार जब दवाई का प्रभाव प्रकट हो गया हो, और रोग कमी के लक्षण दिखाई दें, तो सामान्य मात्रा में दवाई देना भी पर्याप्त होता है। इससे औषधि प्रभाव उन्नति बनी रहती है तथा प्रकृति को रोग नाश में सहायता मिलती है वनस्पति खनिज औषधियाँ पूर्ण रूप से निरापद हैं शिशु और गर्भिणी तक को अधिक मात्रा में देने भी कोई हानि नहीं पहुँचती।

मिट्टी की पुल्टिस (Mud Poultices) :– चिकित्सा के उद्देश्य से मिट्टी का व्यवहार भारतवर्ष में कई वर्षों से चला आ रहा है। प्रयोग विधि इस प्रकार है। चिकनी मिट्टी को बारीक पीस कर पानी मे छान लो और गाढी तह बना कर किसी मोटे कपड़े पर बिछाकर ज्वर और पेट की पीड़ा में पेट के ऊपर लगा दें। आमवात, अण्ड शोथ तथा वेदना युक्त शोथ इत्यादि में पीड़ा स्थल पर लगा दो। गरम जल के साथ मिला कर गरम-गरम लगाना ही अच्छा होता है। परन्तु जब रोगी ठंडे जल में लगाना पसन्द करे तो कोई हानि नहीं है। इस पुल्टिस को एक घंटे से दस घंटे तक रोगी की सुविधा के अनुसार रखा जा सकता है। कभी-कभी आक्रांत स्थान पर मिट्टी का प्रलेप देने से ही लाभ हो जाता है। मिट्टी का सम्पर्क चमडी से रखना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक हैं । हमने देखा है कि केवल काली या लाल मिट्टी गरम या ठंडे जल से लगाने से उत्तम लाभ होता है ।

सेंक (Fomentation) शुष्क अथवा गीले सेंक की अपेक्षा कवोष्ण सेंक अधिक लाभकारी है । ईंट के टुकड़ें को आग में गरम करें । एक भीगे कपडे (नीचोड़े हुए) की दो-तीन तह करके उसमे ईंट के टुकडे को लपेट दो, फिर उस पर सूखें कपड़े की कई तह लपेट कर पीड़ा स्थल सेंकों । जैसे-जैसे ऊपर की तहें ठंडी पडती जाये उनको हटाते जाओ । इस तरह सेंकने से, पीड़, पेट का दर्द तथा खांसी से बहुत लाभ होता है । आमवात तथा इसी प्रकार की दूसरी आवश्यकताओं में गीले कपड़ों की भीतरी तहों में थोड़ा नमक छिड़क दें अथवा कपड़ों को नमकीन जल में भिगो लें ।

मल्हम् (Ointment) :-बाह्य चिकित्सा अर्थात् मल्हम् आदि द्वारा बाहरी इलाज से भीतरी इलाज में सहायता अवश्य मिलती है परन्तु वास्तविक आरोग्य भीतरी चिकित्सा द्वारा ही सम्पन्न होता है न कि बाह्य चिकित्सा से । तथापि ऐसे दृष्टान्त है कि एक मात्रा बाहरी इलाज से उपकार अथवा आशुफल प्राप्त हुआ है जैसे गले या कान में तीव्र शूल, आकस्मिक शोध अथवा किसी प्रकार प्रदाह इत्यादि में । इस लिए यह साधारण नियम बना लेना चाहिए कि भीतरी चिकित्सा के साथ बाहरी सहायता अवश्य ली जावे । हमारी औषधि नं. ८ (हर्बीअल्फ) या हीनत इत्यादि से मल्हम् तैयार करने के लिए साधारण नियम यह है कि एक भाग औषध पाँच से बीस भाग किसी तेल इत्यादि या सत्वर लाभकारी गुण के लिए हमारे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिपैटों (Ripanto) के साथ अच्छी तरह मिलाना चाहिए। जैसे-जैसे आराम होता जावे औषधि का परिणाम कम करते जावें। हमारे रबजान (Rubzon) चेसाल (Choesol) व्यथा और शूल में अच्छे गुणकारी सिद्ध होते हैं। विशेष कर फुप्फुस के रोग, गले व छाती, टांसील बढ़ जाने तथा आमवात आदि पीड़ाओं में अत्यन्त लाभदायक होते हैं।

सूई लगाना (Hypodermic Administration) :— वनस्पति खनिज औषधियों को इंजेक्शन द्वारा देने से बड़ा अभिष्ट फल मिलता हैं। इन औषधियों के इंजेक्शन हानि रहित वा पीड़ा रहित होते है तथा किसी प्रकार की भी प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करते। विशेष विवरण के लिए हमारा 'इंजेक्शन वाली औषधियां' शीर्षक पत्रक पढ़ें। ये सभी इंजेक्शन दो प्रतिशत घोल वाले मिलीग्राम की बन्द शीशियों में तैयार मिलते हैं। आवश्यकतानुसार रोग की उग्र दशा में ६ से २४ घंटों के अन्तर से अथवा सामान्य दशा में ४ दिन के अन्तर से इंजेक्शन लगाए जा सकते हैं। नियम यह है कि जब आराम मिलना आम्भ हो जावे तो प्रकृति को अपना काम करने का अवसर देना चाहिए।

———

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनस्पति-खनिज औषधियों का विवरण

अगर-को (AGAR-CO)

अपस्मार, शिशु और बच्चों के ऐंठन हिस्टीरिया व तत्-संबंधी अन्य विकार न केवल स्त्रियों में अदितु वैसी प्रकृति वाले पुरुषों में भी उपयुक्त है। अपस्मार की चिकित्सा के लिए दिन में 'बाइटल एसेन्स' तथा रात के सोते समय 'अगर-को' दें और इस प्रकार एक साल तक या अधिक समय तक चालू रखें। हिस्टीरिया की भी यही चिकित्सा है।

सूक्ष्म मात्रा में अगेरिकस (Agaricus) :– आक्षेप को रोकता है और आक्षेप युक्त विकारों में तथा हिस्टीरिया में शांतिप्रद प्रभाव रखता है। लिलियम (Llium) का वस्ति स्थित अंगों (Pelivic Organs) पर प्रबल प्रभाव पड़ता है और गर्भाशय तथा डिम्ब के विभिन्न विकारों में भी यह लाभदायक है। इथ्यूसा (Aethusa) क्षोभ, बेचैनी तथा शिरोभ्रम को शान्त करता है।

मात्रा :– वयस्कों के लिए १/२ टिकिया, भोजन से आधा घंटा पूर्व दिन में तीन वार।

अल्बोसांग (ALBO-SANG)

उपयुक्त आहार न मिलने तथा अनुचित पोषण विधि से पीड़ित बच्चों व वयस्क लोगों के लिए उपयुक्त है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्बोसांग बहुत हीं सस्ता तथा वैज्ञानिक रीति से बनाया हुआ पुष्टिकार खाद्य-पदार्थ है जो कि साधारण भोजन की उत्तमता को अधिक बढ़ाता है। इसके प्रतिदिन सेवन से शरीर की क्षीणता दूर हो कर रोगी अच्छे स्वास्थ्य का अनुभव करने लगता है। आहार ग्राह्य-शक्ति को अल्बोसांग उत्तेजित कर जरूरी खोए हुए रज़न को शीघ्रगति से पुनः प्राप्त करता है। इसे काफी, चाय, दूध दही, मक्खन, दलिया, फलों का रस अथवा कोई भी सरल पदार्थ या केवल पानी के साथ मिला कर भोजन करने से पहले या बाद में ले सकते हैं।

निर्धनों को ठीक भोजन नहीं मिलता और धनिकों को अच्छा खाना हज़म होता। वैज्ञानिक भाषा में इसका तात्पर्य यह है कि या तो अपनी निर्धनता के कारण अथवा पाचक-शक्ति कीं दुर्बलता के कारण हमारे शरीर के कोषों को वह नोषक-तत्व मिलते नहीं जिनकी शरीर को आवश्यकता रहा करती है। इनलिए अपने दैनिक आहार को वैज्ञानिक रीति से पुष्टिकारक बनाता नितांत आवश्य है।

हमारा दैनिक आहार चाहें कम रहे उसके साथ अल्बोसांग लिया जाय तो उसकी उत्तमता के गुण बढ़ जाते है।

अल्बोसांग के सेवन करने से शरीर को कैल्शियम, फास्फेट्स तथा अत्यन्त जरूरी विटामिन मिल जाते हैं। इनके अलावा इसमें कुछ महत्वपूर्ण आयुर्वेद की जड़ी-बूटियाँ-अश्वगंध, ब्राह्मी, तालिसपत्र और इश्रमूल आदि मिलाई गई हैं। जिससे इसके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभदायक गुणों की अभिवृद्धि हुई । साबित किया गया है कि ये औषधियां बच्चों के कृशांगी हो जाने, बुढापे की कमजोरी, साधःरणशक्ति हीनता, मस्तिष्क के थक जाने या विस्मरण, मांसपेशियों के शिथिल होने, तथा अनजाने में शुक्रपात आदि कई तरह की कमजोरियों पर अच्छा प्रभाव डालती है। इस तरह देशी जडी–बुटियों का एक उत्तम बलवर्धक मिश्रण से अल्बो-सांग बना है जिसमें जरूरी खनिज-द्रव्य तथा मुख्य विटामिन मिलाए गये हैं। निसर्ग तत्व से रोगी पीडित व्यक्ति या अधिक परिश्रम करके थक गये लोगों को इस केसेवन करने से नव चेतन-शक्ति मिल जाती है तथा उनके जीर्ण शिथिल देह में फिर से तेज या ओज संचारित हो जाता है और समय से पहले हो स्वास्थ्य के बिगड़ जाने से अल्बोसांग उनकी रक्षा करता है।

प्रयोग

सभी रोगों में :–सभी रोगों में तथा रोग मुक्त अवस्था में अल्बोसांग शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढाता है और रोगी की जीवन-शक्ति को स्थिर रखते हुए रोग से शीघ्र छुट-कारा पाने में सहायता पहुंचाता है।

रक्तहीनता में :–रक्तहीनता या पांडुरोग में अल्बोसांग के थोडे दिनों के सेवन से ही शीघ्रगति से रक्त वृद्धि होती है। साधारण कमजोरियां और रोग-मुक्त अवस्था की दुर्बलता में खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त करने में शीघ्र सहायता देता है।

शिशुओं के लिए :–शिशुओं को ताजे दूध ने अल्बोसाँग मिला कर पिलाया जा सकता है, जिससे दूध खरीदने के अधिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यय से बच जाते हैं। शिशु अच्छे पनपते हैं और उनको पाचन शक्ति बढ़ती है। टट्टी खुल कर आती है तथा वे हृष्ट-पुष्ट नजर आते हैं।

बच्चों के लिए :—बढने वाले बच्चों में जो कैल्शियम तथा फास्फोरस की जरूरत होती है वह अल्बोसांग के सेवन से पूरी होती हैं। हजम करने की शक्ति बढने से वे खूब खा-पी सकते हैं। शरीर स्वस्थ रहने के कारण वे खूब बढ सकते और हृष्ट-पुष्ट बन जाते हैं।

धात्रियों के लिए :—अल्बोसांग के सेवन से बच्चे को दूध पिलाने के माता की जिस शक्ति का लोप होता है इससे सहायता मिलती हैं। दूध खूब बडता है। गर्भिणी स्त्रियों को विशेष स्थिति अर्थात् गर्भावस्था, उसकी अभिवृद्धि तथा शिशु को दूध पिलाने कीं दशा में कैल्शियम व विटामिन 'डी' की अतिरिक्त आवश्यकता होती है वह इसके सेवन से पूरी होती है।

मस्तिकष्क श्रम करने वालों के लिए :—शारीरिक, मानसिक, तथा स्नायुविकों का शक्तियों संतुलन ठीक बना रखने के लिए अल्बोसांग की बडी आवश्यकता होती है। अधिक परिश्रम करने से पैदा होने वाली शारीरिक तथा मानसिक खिन्नता के सामना करने की शक्ति इससे मिलती हैं।

वृद्धों के लिए :—वृद्धावस्था में अपनी जीवन शक्ति को स्थिर बनाये रखने में अल्बोसांग का सेवन करना आवश्यक है। यह एक शक्ति वर्धक तथा पुष्टि कारक ओषधि (TONIC) है जो अच्छे स्वास्थ्य को बनाये रखने में मदद देता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा

शिशुओं के लिए :– चाज के चम्मच का चौथा भाग दिन में दो बार।

बालकों के लिए :– चाय के चम्मच का आधा भाग दूध के साथ दिन में दो बार।

बडों के लिए :– एक चाय का चम्मच भर या दो टिकयां दिन में दो बार। सेवन विधि प्रत्येक डिब्बे या शीशे के साथ रहती है।

सुविधा और बचत के लिए अल्बोसांग टिकियों के रूप में भी बनाई गई है। द्रो टिकियाँ जो कि बडे आदमीं की मात्रा हैं, एक चाय के चम्मच भर पौडर के समान हैं। इनमें खांड न रहने के कारण मधुमेह के रोगी भी इसका उपयोग कर सकते हैं।

अमिग्लिया (AMYGLIA)

यह औषधि हार्धिक धमनी का प्रसार कर हृतशूल (Angina Pectoris) में लाभ पहुँचाती है। शिरःशूल या रक्त चापधिक्य (High Blood Pressure) में विशेषकर जब तुरन्त आराम की आवश्यकता हो, तब यह मुख्य सहाकारी दवा सिद्ध होता है अमिग्लिया रक्त वाहिनियों के प्रसार द्वारा रक्त के दबाव को कम करतीं है, इसीलिए जब 'फैनोकेल्साइन' या 'मेडिटॅब एन्सेस' द्वारा सिरदर्द में आराम न आवे तो 'अमिग्लिया' दें।

अमिग्लिया की एक मात्रा अपस्मा का दौरा आरम्भ होने से पूर्व जिव्हा के नीचे रख लेने से बहुधा अपस्मार का दौरा रुक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। आधे सिर के दर्द (Migraine) में भी इसी प्रकार प्रभाव होता है। अमिग्लिया आक्षेप अन्य रोगों जैसे, कष्टार्त्तवा-दमा, काली खांसी और बच्चों के आक्षेप भी लाभप्रद है।

मात्रा : $\frac{1}{2}$ टिकिया दिन में तीन वार।

अराटिनम (AURATINUM)

गर्भाशय विकारों के लिए। ऋतुस्राव बन्द हो या क्रम से समय पर न आता हो तो पल्सटिला (Pulsatilla) वे अच्छा फायदा होता है। कष्टार्तवा में भी यह उपयुक्त हैं। अधिक चित्त विक्षोभ से पीडित रोगियों के लिए यह पल्सटिला एक अमूल्य औषधि है। वातशूल संबंधी तथा सभी पीडाओं के निवारण के लिए यह एक वडा ही उपकारी है।

तूजा (Thuja) और पल्सटिला दोनों के साथ-साथ सेवन करने से रक्तचाप (Blood Pressuac) को स्वाभाविक स्थितिमें, रखने में वडी सहायता मिलती है। सत्वर आराम पाने के लिए रोगी को अमिग्लिया (Amyglia) देने से अच्छा फायदा होता है। स्नायुविक कंपन तथा उत्तेजित अवस्था को शान्त रखने में अराटिनम वडा ही उपकारी सिद्ध हुआ है। पुरानी संन्धि शोथ अर्थात् गंठिया की चिकित्सा में यह अत्यंत लाभप्रद है।

मात्रा :–वयस्कों के लिए $\frac{1}{2}$ से एक टिकिया दिन मे तीन बार खाली पेट भोजन से आधा घंटा पूर्व और सोते समय देना है। इंजेक्शन देना हो तो एक एम-एल (ML) चौबीस घंटों में एक बार दें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेंजोमोन्स (BENZOMONES)

आस्थमा (Asthma) अर्थात श्वास के दौरे में तुरंत लाभ-प्राप्ति के लिए ।

प्रयोग :– दमा के दौरे की तीव्रतर दशा में बड़ा ही उपयुक्त है रोगी को फौरन आराम पहुँचाने के लिए सफलता–पूर्वक इसका उपयोग किया जाता हैं । पुरनावृत्त श्वास के दौरों के लिए यह एक निरोधक औषधि है ।

अरुषा (Adhatoda vasica) :– कफ नाशक तथा फे फडों पर असर देनेवाले रोग क्रिमी व्याप्त निरोधक महत्वपूर्ण औषधि हैं । असगंध (Asgandh) और दतुरा (Datura) ये दोनों सूखी खांसी तथा ऐंठने वाली श्वास के दौरे की पीड़ा से मुक्त करने व शांतिप्रद गुणकारक औषधियां हैं ।

सांस लेने में तकलीफ होती है और फेफड़ों के संवंधी नाजुक अंगों को सबल रखनें में 'एफिड्रिन हाइड्रोक्लोराईड' (Ephedrine Hydrochloride) सत्वर आराम पहुंचाता है । इसलिए दमा के दौरे से तुरंत छूटकारा पाने के लिए बेंजोमोन्स उपयुक्त दवा है । जब तक जरूरत होती रहती है तब तक रोगी को डेस्मा (Desma) (पुराना व्यवहारिक नाम आस्थमा कांपौंड) खिलाते रहना चाहिए ।

मात्रा :– इंजेक्शन द्वारा शिशुओं के लिए $\frac{1}{4}$ एम. एल. (ML), तथा वयस्क लोगों को १ एम. एल. (ML) चौबीस घंटों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में एक बार, अगर श्वास के दौरे जारी रहे तो चौबीस घंटों के अंतर से फिर इंजेक्शन दे सकते हैं।

बायो–साल (BIO-SAL)

शिशु संबंधी रोग विकारों के लिए ग्राइप मिक्शचर (Gripe Mixture) बच्चों के पेट में दर्द, अफारा अर्थात् पेट फुलना, खट्टे डकार, नींद नहीं लगना, बालाक्षेप तथा दांत निकलने के समय के विकार आदि के लिइ उपयुक्त है।

बायो–साल बच्चों के उदर–शूल के लिए तुरंत आराम पहुंचाने की बढ़ी ही उपकारी दवा है। अतिसार से रक्षा करती है, तथा पाचन संस्था का सशक्त बनाती है जिससे न केवल उनकी दांतों को संक्रामिक रोगों से बचाती है अपितु साधारण रोग निरोधक शक्ति को बढ़ाती हैं।

शिशु तथा बच्चों की मंदाग्नि से बचाने के लिए एक बहु–मूल्य औषधि मिश्रण है। सुबह व रात के समय इसका निरंतर सेवन करने से अम्लता रुक जाती है, भूख बढ़ती है तथा हजम करने की शक्ति अच्छी बनी रहती है। रोग की अवस्था मे तथा स्वस्थावस्था में भी विराम देते हुए कभी–कभी इसका सेवन करना लाभदायक है।

दांत निकलते समय पैदा होने वाले सामान्य विकार बायो-साल के सेवन से निवृत्त हो जाते हैं। यह क्रम पाचन को ठीक रखती है तथा अतिसार से बचाती है। शिशु संबंधी रोग विकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कभी-कभी तीव्रतर परिणाम में उपस्थित होते हैं उन सभी से वायो-साल रक्षा करती है।

बायो-साल में बेहोश करने वाले या किसी तरह के हानि कारक द्रव्य नहीं हैं। यह एक विश्वसनीय उत्तम दवा है जिससे शिशुओं का पेट फुल जाना, बालाक्षेप तथा पाचन शक्ति की कमजोरियाँ दूर हो जाती हैं। अतः बायो-साल एक शाँतिप्रद तथा गुणकारक दवा है जो शिशुओं में अम्लता और पेट के भीतरी क्षोभ के कारण होने वाले सभी पीडाओं का निवारण करता है।

भूख बढ़ाने के लिए वायो-साल, दूध पिलाने से कुछ मिनिट पहले दे सकते हैं। इसका स्वाद अच्छा है पर मिठास के लिए थोडा शक्कर मिलाया जा सकता है। वच्चा यदि बाहर का दूध पीता है तो बोतल में थोडा वायो-साल मिलाकर पिलाया जा सकता है। इस की खुशबू तथा मिठास के कारण सभी वच्चे इसे बड़े चाव से पीते हैं।

बायो-साल एक उत्तम ग्राइप वाटर (Gripe Water) है। डाक्टरों ने इसकी बड़ी सराहना की है ओर शिशु व छोटे बच्चों के जठराग्नि संस्थान के विकारों को दूर करने के लिए एक विश्वसनीय घरेलू औषध के रूप में मशहूर हुआ है।

मात्रा :—नवजात शिशु के लिए आधा चम्मच, १ से ६ मास तक के शिशु के लिए आधा चम्मच तथा ६ मास १ वर्ष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक एक चम्मच और २ वर्ष के लिए एक से दो चम्मच भर देना है।

ब्रह्माडाइइन (BRHAMDINE)

सामान्य रूप से गर्भाशय के सभी रोग विकारों के लिए और विशेषकर श्वेतप्रदर के लिए उपयुक्त है। यदि ऋतु स्राव अधिक हो तो कम और कम हो तो अधिक जाता है। इसके सेवन से मासिक धर्म नियमित हो जाता है। अगर ऋतु स्राव अत्यधिक हो तो चिनियम-को (Chinium–Co) दें।

लोधरा (Lodhra) का प्रयोग हर तरह के मासिक ऋतु धर्म संबंधी विकारों में किया जाता है। अनियमित ऋतु स्राव में विशेष रूप से इसका उपयोग किया जाता है। रक्तप्रद तथा श्वेतप्रदर में यह एक वलवर्धक रसायन के रूप में काम आता है।

अशोका छाल (Ashoka) गर्भाशय विकारों के लिए शामक होती है। यह सीधा गर्भाशय संस्था के माँस पेशी सुत्रों पर असर देती है। गर्भाशयास्तः स्थित पतली तह तथा अण्डाशय सम्बंधी सूक्ष्म तंतुओं पर इस का उत्तेजक प्रभाव पडता हैं। गर्भाशय के विकारों में यह बड़ा ही उपयोगी है। रक्तप्रद में विशेष रूप से लाभ पहुँचाती है।

असगंध (Asgandh) सामान्य शक्ति-हीनता मेंलाभदायक है बालतगर (Valerian) नाडी मंडल पर असर देने वाला एक वहुमूल्य रसायन है जो आक्षेप निवारक प्रभाव रखता है। इसके अलावा उपरोक्त सभी औषधियों का प्रभाव पीला दतूरा से बढ़ाया गया हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा :—१ से २ टिकिया सुबह और सोते समय दें।

चेसाल (CHESOL)

मांस पेशियों के सम्बन्धी दर्द पीडाओं तथा ब्रांकाइटीस (Bronchitis) अर्थात् फेफडों की सूजन आदि में बाह्य प्रयोग (मालिश) करने के लिए उपयुक्त है।

प्रयोग :—चेसाल महत्बपूर्ण देशी जडी-बूटियों का केन्द्रीकृत सार है। संधिवात गठिया, जोड़ों के जकड़ जाने, फेफडों की सूजन, खांसी, सिरदर्द आदि में बाह्य प्रचार के लिए बड़ा ही उपकारी तेल है। शरीर के जिन अंगों में दर्द या पीड़ा होती है उस जगह के त्वचा के ऊपर भाग में चेसाल लगाकर अच्छी तरह मलना चाहिए। फेफड़ों की सूजन में सोते समय छाती पर लगाना चाहिए।

मांस पेशियों के कृश हो जाने या केवल पेशियों का सुन्न हो जाने से उन भागों पर दिन में एक या दो बार मालिश करने से संतुष्ट लाभ मिलता है। नाजुक त्वचा पर खास कर बच्चों के ऊपर एक-दो बार चेसाल के मलने के बाद किसी अन्य तेल से मालिश करके उसका प्रभाव कम किया जा सकता है।

चिनियम-को (CHINIUM–CO)

यह बहुत ही लाभदायक औषधि है।

१. यह औषधि शिशु तथा बच्चों के लिए विशेष रूप से तथा सामान्य रूप से स्त्री तथा कोमल प्रकृति वालों के लिए उपयोगी है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. अधिक मात्रा में रक्त स्राव, चाहे वह गर्भाशय हो या अर्श के कारण या नाक, मुंह के रास्ते हो, अथवा पेचिश से हो।

३. पीड़ाकारक रोगों में, विशेष रूप से स्त्रियों को गर्भाशय पीड़ा या डिम्ब प्रणाली पीड़ा में अथवा उदर निम्न भाग की साधारण पीड़ा में उपयुक्त हैं।

मात्रा :-१/२ से १ टिकिया बड़ों के लिए, दिन में तीन बार।

डांन्जिन् (DANGINE)

मुख्यतः काली खांसी (Whooping Cough) के लिए उपयुक्त है।

मात्रा :—साधारण मात्रा बच्चों को १/४ से १/२ टिकिया-चार घंटे में एक बार दें। रोग की तीव्रता में उक्त मात्रा के अनुसार २ घंटों की अवधि में एक बार देना जरूरी है। यदि दो-तीन दिन में रोगी को पर्याप्त आराम न मिले तो हमारी औषधि पिपारिड (Piparid) की एक मात्रा दें जिससे आंतों में कई रोग कारक कृमि रहती हो तो बाहर हो जाती है।

साधारण रोग निरोधक शक्ति को बढ़ाने तथा रोग से जल्दी आराम पाने के लिए दूध के साथ अल्बोसांग मिला कर दिन में दो बार दें।

आक्षपयुक्त तकलीफों से बचाने वाली तथा कफ निकालने वाली जडी-बूटियों से डांन्जिन् बनाया गया है। अतः यह क्लेश-कारक तथा आक्षेप युक्त खांसी में लाभदायक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेसिल (DECIL)

डेसिल सिरदर्द, दांत दर्द, मांस पेशियों के दर्द साधारण सर्दी, जुकाम आदि से त्वरित मुक्ति के लिए उपयोगी है।

इसका उपयोग सफलतापूर्वक पुराने व दीर्घकालीन सिर-दर्द में किया जा सकता है। ड्राइसबेस (Driesbach) और फइफर (Pfeiffer) का कथन है कि भयंकर सिर दर्द काफाईन (Caffeine) की वापसी के कारण पैदा होता है। यह सिर दर्द साधारण प्रकार के सिर दर्द से भिन्न है और इसे काफाईन से ही दूर किया गया हैं।

इस प्रकार डेसिल सिर दर्द, दांत दर्द, माँस पेशियों का दर्द साधारण सर्दी जुकाम आदि से शीघ्र व त्वरित छुटकारे के लिए अत्यंत उपयोगी दवा है। चाहे यह दर्द किसी कारण हुए हों।

मात्रा :—१ से दो टिकिया वड़ों के लिए, यदि आवश्यकता हो तो प्रति ३ या ४ घण्टों के बाद दोहराते रहें।

डेस्मा (DESMA)

पूर्व परिचित नाम है आस्थमा कम्पाउण्ड (Asthmo Compound) जो दमा तथा जीर्ण खांसी के लिए उपयुक्त है।

लक्षण :—उत्तम देशी औषधियों का मिश्रण होने के कारण डेस्मा निम्नलिखित रोगों की अवस्थाओं में विशेष गुण-कारी सिद्ध हुई है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. जीर्ण श्वास के दौरों को रोकने।

२. पुरानी खांसी के निवारण करने जब कि खांसी के दौरे उधृत रूप में सताते हों।

३ श्वास के दौरे में तुरंत छुटकारा पाने के लिए १/२ टिकिया से एक टिकिया तक एक-एक घंटे के अंतर में दौरे से मुक्त होने तक इसका प्रयोग करना लाभदायक है।

डेस्मा आक्षेप हर कफ नाशक तथा फेफड़ों के कीटाणु व्याप्त निरोधक दावा है। इसमें किसी प्रकार के हानिकारक द्रव्य नहीं है। इसलिए जीर्ण रोगों में भी सुरक्षित रूप से प्रयोग करने लायक है।

मात्रा :—वयस्क लोगों के लिए १ से २ टिकियाँ दिन में तीन या चार वार तथा वच्चों के लिए आधी टिकिया से एक टिकिया दिन में तीन वार दें।

डयासिन (DIASYN)

अतिसार, प्रवाहिका या संग्रहणी के लिए उपयुक्त है।

प्रयोग :—सभी तरह के अतिसार-एमोबिक (Amoebic अर्थात् एक कण वाला सूक्ष्म क्रिमि से होने वाला तथा बॉलिलरो (Bacillary) याने बेलन रूपी सूक्ष्म क्रिमि सम्बन्धी संग्रहणी में अतिसार अथवा पेट जलने का रोग, म्यूकस कोलिटीस (Mucous Colitis) अर्थात् आंतों में श्लेष्मिक अधिकता में तथा बिलियरी (Biliary) अर्थात् पित्तसंबंधी विकार तथा आंतों के भीतरी क्षोभ आदि में उपयुक्त हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औषधि सिद्धांत :—कुर्चि और बैल ये दोनों मशहूर प्रवाहिक निरोधक औषधियां हैं। आयुर्वेद में उपयुक्त दशमूल (Dasamul) में बेल एक द्रव्य है। अनेक पाश्चात्य तथा भारतीय वैद्यों ने अपनी चिकित्सा विधि के प्रयोगों में सिद्ध किया है कि प्रवाहिका के रोग विकारों में उपयुक्त एक प्रभावशाली दवा है। इनमें मुख्य ये हैं-सन् १८८१ में आर. सी. दत्त, तुलवालश (Tull walsh) (१८९१), कन्हय्यालाल डे (१८९६) नावेल्स (Knowals)(१९२८) तथा केयस (Caius) और महेशकर आदि।

सोनागेरु (Sonageru) ;—आंत्र बाहिका को आराम पहुँचाने वाली तथा दस्त रोकने वाली औषधि है। बालहार्ड आंतों में शूल या मरोड़ के साथ होने वाली पीड़ा को दूर करती है तथा पाचक शक्ति पर अच्छा असर देने वाली हैं। डयासिन आंतों की श्लेष्मिक झिल्ली की रक्षा करती है और आहार नालिका के विष को सोख लेती तथा सूक्ष्म रूप में पाचक शक्ति को बढ़ाने वाली है।

बैरिबारिस (Besberis) ;—भी दस्त रोकने वाली है। यह बॉसिलरी (Bacillary) संग्रहणी तथा सांक्रामिक अतिसार में फैलाने वाली कृमियों को रोकनें वाली है तथा निरोधक प्रभाव रखती है। हैजा (Cholera) में लगातार होने वाले दस्त के अन्तर को भी यह क्रमबद्ध कर देती है।

जब पाचन शक्ति की खराबी के कारण अतिसार होता हो तो 'डयासिन' के साथ 'सालफास' मिला कर देना लाभदायक है।

मात्रा ;–१ से २ टिकियां हर चार घंटे में एक बार वयस्क लोगों के लिए तथा उसी अन्तर से बच्चों को १/२ से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ टिकिया देना है। रोग को तीव्रतर स्थिति में चमडे के निचले भाग में 'डायसिन' के इंजेक्शन देना लाभकारी होता है।

एन्ट्रोप्स (ENTROPS)

दांतों के रोग (Pyorrhoea) :–विकार तथा सूजन की दशा में केवल बाहरी चिकित्सा के लिए उपयुक्त है।

लक्षण या चिन्ह :–एन्ट्रोप्स एक प्रभावशाली किटाण व्याप्ति निरोधक तथा पलोरिया की प्रारंभिक दशा में होने वाली पीड़ा या दर्द को रोकने वाली और सूजन तथा फोडों के निकलने की अवस्था में होने वाले स्पर्श या व्याप्क रोग और पुरानें टाँसिल्स संबंधी रोग विकार आदि में उपयुक्त दवा है। फेनाल (Phenol) व कपूर ये दोनों बाहरी प्रयोग के लिए बड़े ही उपयुक्त किटाणु व्याप्त निरोधक द्रव्य है। ये दोनों मिलकर बहुत हद तक सूक्ष्म जीवाणु व्याप्त क्रिया में लाभदायक सिद्ध होते हैं। इस तरह स्पर्श या सांक्रामक रोगों को रोकता है तथा खून निकलने वाले या मुलायम मसूढों को शांत कर आराम पहुंचाता हैं। यही नहीं इसमें जो द्रव्य मिलाये गये हैं वे दर्द या पीड़ा से सत्वर आराम पहुंचाने वाले हैं।

लगातार एन्ट्रोप्स के प्रयोग से मुंह से दुर्गन्ध नहीं निकलेगी क्योंकि यह दुर्गन्ध को या सडाने की स्थिति से रोकता है।

नाक के अंदर की ग्रंथियों (Adenoids) के बढ़ जाने से श्वास लेंने में जो तकलीफ होती है या दूसरी तरह के नासिका संबंधी रोग विकारो में एन्ट्रोप्स की कुछ ही बुंदे नथुनों में डालने से आसानी से मुक्त हो जाते है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग विधि :–पयोरिया की प्रारंभिक दशा में दांतों को अच्छी तरह ब्रुश से साफ करके एक चाय के चम्मच भर एन्ट्रोप्स मुंह में डाल कर कुछ मिनट तक कुल्ली करने की तरह हिलाते रहें। इस के बाद एक या दो मिनट तक अंगूली से मसूढ़ों की मालिश करें।

सूजन व फोड़ों के इलाज के लिए एन्ट्रोप्स में रुई की पट्टी (Cotion Packs)तर करके सूजन की जगह पर रख कर बार-बार उसे बदलना चाहिए,

इस दावा को पानी मिलाकर किसी भी अवस्था में पतली नहीं बनाना चाहिए। अगर कभी आवश्यकता हो तो शुद्ध फली के तेल में मिलाएँ। रोशनी से दूर ठंडे स्थान में रखना चाहिये। प्रयोग से पहले ठीक तरह मिलाना चाहिये। आँखों को यह दावा नहीं लगानी चाहिए।

फ्लूजन (FLUZEN)

सर्दी जुकाम तथा इंफ्लूएंजा के लिए उपयुक्त में।

लक्षण :–शारीरिक पीड़ा व दर्द, ज्वर और आमवात् संबंधी व संधिशोथ निवारण के लिए यह सैलिसिलेमाइड (Salicylamide) लायक औषधी द्रव साबित हुआ है। कहा गया है कि मानुष्य शरीर के लिए सैलिसिलेटस् (Salicylates) के योगों की अपेक्षा सैलिसिलेमाइड अधिक अनुकूल पड़ता है litteretal ibid 1951, 101, 191, Wegmann, Shcweiz-med Wehncer,150, 80, 67) सैलिसिलेट के योगों से सैलिसिलेमाइड संधिशोथ व गटिया के इलाज में अपेक्षित या

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक फल देने वाला सिद्ध हुआ है (Wieland, med klin, 1949, 44, 1530, Wegmann, Liteer) फ्लूजन में सॅलिसि-लेमाइड के साथ कुछ चुनी हुई प्रसिद्ध देशी औषधियाँ मिलाई गई हैं। "डा. ऑसियाण्डर ने (Dr. Osiader) कहा था कि जायफल (Nutmeg) ज्वर निरोधक औषधि द्रव है। और डा. पाँरासेंलसेस् (Dr. Paraceisus) लोनिसरूम (Loniers) तथा मंथ्यूलस(Mathiolus) कहा था कि यह जायफल जठर संबंधी विकारों में अच्छा काम आने वाला रसायण (Tonic) है। (The Indian Meteria Medica by Dr. Nadkarni) काली कटुकी तथा लहसून भी फुफ्सुस संबंधी तरह के रोग विकारों की चिकित्सा में सफलतापूर्वक प्रयोग में लाये गये।

इस तरह सर्दी, जुकाम तथा इंफ्लूएंजा में मांस पेशी की पीडा व दर्द में फ्लूजन काम देने वाली एक चुनी हुई दवा हैं। प्रारंभ दशा में इसको कुछेक मात्रा लेने से रोग का आक्रमण रुक जाता है तथा रोगोत्तर दशा में होने वाली कम-जोरी, दुर्बलता, खांसी या पुराना नजला आदि से भी बच सकते है।

मात्रा :—एक टिकिया वयस्कों के लिए हर चार घंटों में तथा बच्चों को आयु अनुसार दें।

गॅस्ट्रोमोन (GASTROMONE)

विशेषरूप से यह औषधि आमाशय रोग, आमाशायिका व्रण उदरशूल, वायुफुल्लता, मंद जठर, वात संबंधी अजीर्ण रोग आदि में उपयुक्त है। गॅस्ट्रोमोन संग्रहणी व बच्चों के हरे दस्त आदि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगों के लिए अत्युत्तम दवा है। आंत तथा आमाशय के तीव्रतर रोगों की चिकित्सा में बहुत गुणकारी है।

साधारण रूप से यह आंत तथा आमाशय संबंधी रोग निवारक औषधि है तो जब यकृत का कार्य शिथिल होने पर इसका अच्छा प्रभाव होता हैं। शारीरिक दुर्बलता के साथ-साथ जब आमाशय की अम्लता की वृद्धि अथवा कम हो गयी हो तब उस संस्थान संबंधी सूक्ष्म तंतुओं पर अपना प्रभाव दिखाकर दोनों दशाओं में समानता लाकर आरोग्य प्रदान करती है।

मात्रा :- वयस्कों को १/२ से एक टिकिया दस से बीस मिनट भोजन करने से पूर्व या तुरंत बाद में दें।

ग्राण्डी–को (GRANDI–CO)

हृदय संबंधी रोगी विकारों के लिए–जब हृदय की गति अनियमित हो, नाडी की गति मंद या तेज चलती हो और थोडे से परिश्रम से ही सांस फूल जाए यह उपयुक्त है।

ग्राण्डी–को मुख्यतः हृदय को शक्ति देने वाली रसायन है। यह हृदय की मांसपेशी को बल देती है और दिल के स्पंदनों को क्रमवद्ध करके अतिशय कंपनों से छूटकारा देती है तथा कुछेक मात्राओं में ही सांस के फुलने को रोक देती है। इसमें बेहोश करने आदि कोई दुर्गुण नहीं है। हृदय के कार्य की अनियमितता के लिए विशेष लाभप्रद हैं। दिल का धडकना, आंखें बाहर निकल आना, जैसा-मलगण्ड (Graves' Disease) तथा हल्के हृच्छूल के लिए यह अत्युत्तम दवा है।

'ग्राण्डी–को' आमाशय को उत्तेजित नहीं करती, यह हृदय की मांस पेशियों की चालक शक्ति को बढाती है तथा धमनी के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दवाव को तेज कर नाडी को बल देती हैं। यह जलोदर रोग में विशेष लाभदायक है। क्योंकि यह मूत्रवर्धक है। यह हृदय तथा वृक्क संबंधी रचनात्मक कार्य में भी गुणकारी हैं।

मात्रा :— बड़ों के लिए १/२ से १ टिकिया दिन में तीन बार दें। हृदय की अतिशय धड़कन तथा हृदय विकृति अन्य श्वास रोग में विराम देते हुए सेवन करना लाभकारी होगा।

हीलन HEALAN

हीलन (Healan) :—कर्णस्राव तथा व्रण में केवल बाहरी प्रयोग के लिए उपयुक्त है।

लक्षण :— हीलन एक किटाणुनाशक छिड़कने की (पाऊडर) बुकनी है। यह ऐडोफार्म (Iodoform) फिडकरी (Alum) बोरिक ऐसिड (Boric Acid) तथा हल्दी Turmeric का एक मिश्रण (बुकनी) है। जब इसे घाव पर लगाते हैं तो ऐडोफार्म फुल कर अपना काम करने लगता और घाव पर क्षोभ उत्पन्न नहीं करता अपितु उसमें फैलाने वाले कीटाणुओं की उत्पत्ति को रोक देता है। घाव को साफ और सूखा रखता है तथा उसमें रिसने की प्रवृत्ति को भी रोकता है। इसके फफुंदी नाशक तथा बंक्टीरिया कीटाणु नाशक द्रव्यों के कारण कर्णस्राव में सत्वर प्रभाव पड़ता है और शीघ्र गति से आराम मिलता है। हीलन को प्रधानता देते हुए अन्य टैल्कम पाऊडरों में मिला कर भी उत्तम फल प्राप्त किया जा सकता है। इसे नाजुक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वचा पर भी निस्संकोच प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि इससे कोई संतापकारी गुण पैदा नहीं होते।

प्रयोग :—व्रण, फोडे या छप पर भी निरापद इसका प्रयोग किया जा सकता है। पुराने कर्णस्राव में यदि कान से लगातार पीप निकलता हों तो रुई के फोहें (Swab) से उसे साफ करें तथा कान को हीलन से हल्का-सा भर दें और कान में रुई दबावें। दो-एक दिन के बाद कान को साफ कर सकते हैं। अगर चंगा न हो तो इसी तरह दवा करें। प्रोयः तीसरी बार भरने की आवश्यकता नहीं होगी।

हेमोप्लेक्स (HEMO–PLEX)

कीटाणु, नाशक, विष हर तथा संक्रामक रोग विकारों की चिकित्सा व निरोध करने में उपयुक्त रोग हर औषधि है।

लक्षण :—सूजन व कीटाणु व्याप्त तथा रक्त का विषैला करने वाले रोग विकारों में उपयुक्त है। हेमो-प्लेक्स के सेवन से किसी तरह की अवांछित प्रतिक्रिया नहीं होती। रोग चाहे कितना भी पुराना क्यों न हो इसका अच्छा प्रभाव जरूर पड़ता हैं। डाक्टरों ने हेमो-प्लेक्स से अपेक्षित फल पाकर इसकी तारीफ की है।

प्रसव समय में रक्त दूषित होने में तथा कीटाणु जनित विष ज्वरों में हेमो-प्लेक्स तापमान को उतार देता हैं अर्थात् ज्वर को काबू में रखता है। मवाद वाले सभी रोगों में या जिनमें मवाद पड़ जाने की सम्भावना हो जैसे जल जाने से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने वाले फोड, क्षत, कण्डु, खुजली, व्रण और घाव आदि तथा सांक्रामिक, विषैले रोग विकारों में फुफ्फस व टांसिल की सूजन आदि में भी हेमो-प्लेक्स न केवल अच्छा गुणकारी है वरना उनका निरोधक भी है।

सेवन विधि :—सभी किटाणु जनित विष व्याप्त रोग विकारों में बड़ों के लिए एक से तीन ग्रेन तक तीन घंटों के अंतर से दें। अन्य रोगों में तीन से बाहर घंटों के अंतर से ज्यों-ज्यों रोगी चंगा होता जावे दवा की मात्रा कम करते जावें। शिशु तथा बच्चों के लिए आधी मात्रा काफी है। रोग की उग्र दशा में मात्रा बढ़ा कर दुगुनी की जा सकती है तथा क्रमशः ज्यों-ज्यों रोगी सुधरता जावे मात्रा घटाना चाहिए।

हर्बल बिटर्स (HERBAL BITTERS)

यकृत के कार्य की शिथिलता, भूख की कमी, स्वाभाविक पित्ताधिक्य तथा कोष्ठ बद्धता के लिए उपयुक्त है।

लक्षण :—जब यकृत ठीक काम न करता हो, उदर व आंतों की क्रिया शिथिल होकर दुर्गंध पैदा होता हो और अनियमित रूप से पित्त पैदा होता हो तो हर्बल बिटर्स यकृत संस्थान को उत्तेजित कर काफी मात्रा में पित्त रस की उत्पत्ति करता है। साधारणतया आमाशय तथा आँतों की शिथिलता में हर्बल बिटर्स उपयोगी दवा है। मलेरिया के दुष्प्रभाव से जिनकी पाचक शक्ति कमजोर हुई हो और कब्ज बना रहता हो उनके लिए लाभदायक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन या नाश्ता करनें से आधा घंटा पहले हर्बल बिटर्स एक से दो टिकियाँ तक सेवन करनें से यकृत की क्रिया सतेज बनती तथा उसकी शिथिलता दूर हो जाती है। आमाशय व आंतों की क्रिया तथा पाचक रसों को उत्तेजित कर स्वाभाविक पित्ताधिक्यता का निवारण करती है। साथ-साथ कब्ज को दूर करती है। इन सभी अच्छे गुणों के कारण हर्बल बिटसे पुरानें अजीर्ण, कामला तथा यकृत के संकोच (Cirrhosis of Liver) में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है।

अतिशय पित्ताधिक्यता तथा कब्ज अधिक हो तो ऐसी स्थिति में सोते समय हर्बल बिटर्स की एक अतिरिक्त मात्रा लेना नितांत श्रेयस्कर है। उम्र के अनुसार बच्चों को इसकी मात्रा घटा या वढा सकते हैं।

हर्बो–सल्फ़ (HERBO-SULPH)

कण्टु, फोड़ा व नासूर व्रण खुजली आदि के लिए उपयुक्त है।

लक्षण :–कण्डू, फोडा व नासूर, खुजली तथा अन्य त्वचा संबंधी विकारों में यह हर्बोसल्फ बड़ी ही उपकारी दवा है। विविध त्वचा संबंधी रोग विकारों में गुणकारी होने के कारण कई भारतीय वैद्यों नें कॅलोट्रापिस (Calotropis) को वेचिटबुल मरक्युरी (Vegetable Mercury) अर्थात् वनस्पति पारा कहते हैं। यह हमारे चिकित्सा बक्स (Medicine Chest) की ८ नंबर वाली औषधि है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहारी प्रयोग :—कण्डु, फोड़ा व नासूर तथा खुजली आदि में बाहरी प्रयोग के लिए एक भाग हर्बोसल्फ पाँच भाग वैसलीन में मिलाकर मलहम के रूप तयार करें। अच्छे फल प्राप्ति के लिए हमारे ('रिपंटो') (Ripanto) में मिलावें। रुग्न-स्थान को गरम पानी (Warm Water) से धोकर साफ़ मुलायम कमड़े से पोंछ कर मलहम लगाना चाहिए।

सेवन विधि :—वयस्क लोगों के लिए—खुजली या व्रण आदि में रक्त दुष्टि को दूर करनें के लिए आधी से एक टिकिया दिन में तीन बार दें।

हार्मोपिरिन (HORMOPIRIN)

प्रद्राह या सूजन, श्लेष्मिक सर्दी की अवस्था, संधिवात गंठिया, नाडीशूल तथा ज्वर आदि में उपयुक्त है।

लक्षण :—ब्रांकाइटीस, इंफ्लूएंजा, टांसिल्स, फेरांजाइटस अर्थात श्वास प्रणाली, फफ्फुस और अन्न प्रणाली जब आक्रान्त हो, जोडों की सूजन, नाडीशूल तथा अज्ञात कारणों से हमेंशा शिर में होनें वाली पीड़ा आदि के लिए हार्मोपिरिन एक बहु-मूल्य मिश्रण है। चाहे कोई भी कारण से ज्वर हो तो आराम पानें के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं। हार्मोपिरीन की ज्वर निरोधक क्रिया से कोई अवांछित प्रतिक्रिया नहीं होती।

'कॅलोट्रोपिस' एक योग्य आक्षेपहार, कफनाशक, तथा स्वेदजनक औषधि है। यह 'वासिका' के प्रभाव को बढाती है। इन दोनों को अन्य प्रसिद्ध मूलिकाओं के साथ, क्वीनीन सल्फेट,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मिलाया गया है। हार्मोपिरिन गंठिया, नाडीशूल तथा अन्य पीढाएं, टांसिल्स, कफ संबंधी रोग विकारों में बहुत ही उपयुक्त दवा है।

मात्रा :—वयस्कों के लिए एक टिकिया, वच्चों को १/२ से एक टिकिया दिन में तीन बार दें।

आयोबिन (IOBINE)

बार-बार होने वाला नजला-जुकाम, टांसिल, त्वचा रोग तथा आतशक-सुजाक रोग विकारों में उपयुक्त है।

कैलोट्रोपोस (Calotropis) सारसप्रेत्ना (Sarsaparlii) और चिरायता (Chirata) का सम्मिलित प्रभाव रोगों को दूर करने के लिए अतिशय लाभकारी सिद्ध हुआ है। रक्त शोधक तथा त्वचा रोगों को दूर करने के लिए सारसप्रेत्ना तो प्राचीन काल से ही मशहूर है। विशेष रूप से शारीरिक कमजोरी के साथ जव वजन कम होता है तो आयोबिन का सेवन करना अच्छा है। आयोबिन एक वहुमूल्य रक्त शोधक रसायन (Tonic) है। इसके नियमित सेवन से त्वचा का वदरंग भी दूर हो जाता है।

यकृत की कार्यशिथिलता तथा आतशक रोग विकारों में आयोबिन अच्छा गुणकारी दवा है। रक्त हीनता में इसका सेवन लाभदायक है। आयोविन टिकियां और इन्जेक्शन के रूपों में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपलब्ध है। उपरोक्त सभी स्थितियों में अल्बे-साँग के साथ-साथ इसका सेवन करने से शीघ्र गति से आराम मिलता है।

मात्रा :—वयस्कों के लिए $\frac{1}{2}$ टिकिया दिन में तीन बार और बच्चों को १/४ टिकिया दें। इंजेक्शन १/४ एम एल. (MI) बच्चों के लिए तथा एक एम. एल. (MI) वयस्कों के लिए २४ घंटों के अंतर से दें।

आयोक्विन (IOQUIN)

मलेरिया के लिए उपयुक्त है।

लक्षण :—आयोक्विन मलेरिया के लिए उपयुक्त दवा है। किरायत, कालीगटुकि, नीम तथा कालीमिर्च ये सब मशहूर ज्वर हर औषधियां हैं जो मिलकर न केवल जूड़ी ताप की बारीको रोकती हैं परन्तु इसका कडवापन पित्त निस्सारक भी होता है तथा इससे पाचक संस्थान क्रियाशील बनकर भूख को बढ़ाती है। डॉ. फेंलिंग तथा नादर्कणि ने कहा था "चिरायता में ज्वर निवारक, अतिसार निरोधक तथा पाचक संस्थान को ठीक करने के विशेष गुण होते हैं।" ये ही मलेरिया को दूर करने के लिए बहुत ही जरूरी है तथा खासकर उन बीमारियों के लिए अत्यंत आवश्यक हैं जो बार-बार बुखार से पीडित होते हैं।

मलेरिया की क्विनीन बहुत पुरानी दवा है जो आजकल भी इसकी चिकित्सा में बड़ा ही उपकारी सिद्ध हुई है। आयोक्विन में क्विनीन सल्फेट बहुत थोडी मात्रा में मिला है। हमारे गाइड में बतलाया गया औषध निर्माण की विशेष प्रणाली के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार इसका प्रभाव बढाया गया हैं। इसके प्रयोग से कोई बुरा असर नहीं होने पाता। आयोक्विन हमारे चिकित्सा बक्स की औषधि नं. २ है।

मात्रा :—वयस्कों के लिए १/२ से १ टिकिया हर चार घंटों में दें। बच्चों को १/२ टिकिया देना चाहिए। बुखार की स्थिति में भी आयोक्विन का सेवन कर सकते हैं।

ज्वर निरोधक :—जिन स्थानों में मलेरिया फैला हुआ है वहाँ के रहने वाले वर्षा के मौसम में आयोक्विन की एक खुराक हर रात सोते समय लें तो ज्वर निरोधक का काम करती है।

इंजेक्शन के लिए आयोक्विन एक एम-एल. (MI) शीशियों मे तयार मिलती है।

काँफ्लोज़ान (KOFLOZAN)

कांफ्लोजन गले, सप्त गन्धी व नाक के अन्दर का भाग आदि के सूजन में प्रयोग किया जाता है।

कॉफ्लोजान एक निरोधक दवा है। यह गले की सूजन, सप्त गन्धी (अन्न आहिका को मिलाने वाला मुंह का रन्ध्र) की सूजन नाक के रन्ध्रों के सूजन में उपयोग की जाती है। यह अनेक निरोधक एवं उपशमनकारी औषधियों से युक्त होने के कारण मुंह और नाक से संबंधित रोगों को बढ़ने से रोकता तथा निवारण करता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह खांसी, लम्बे समय से होने वाली खांसी के लिए भी प्रयोग की जा सकती है।

मात्रा :—प्रति ३ या ४ घण्टों से एक टिकिया मुंह में चूसना चाहिए।

कॉफ़लीन (KOFLYN)

खांसी के लिए उपयुक्त है।

लक्षण :—श्वासनली प्रद्राह, खांसी, सर्दी, कण्ठनली, ब्रांकाइटिस संबंधी रोग विकारों में गुणकारी दवा है। इसके अलावा दर्द के साथ सूखी खांसी तथा ऐंठनेवाली पीडा के साथ होनेवाली खांसी में भी आराम पहुँचाता है।

इसके निर्माण में जो प्रसिद्ध देशी मूलिकाएँ इस्तेमाल की गई है वे सभो कफ़ नाशक तथा फूफ्फस संबंधी रोग निरोधक हैं। हचूमा और अरुषा—ये दोनों अपने विशेष गुणों के कारण सूखी तथा ऐंठनेवाली पीड़ा के साथ होनेवाली खांसी को रोकने तथा आराम पहुँचाने में लाभकारी हैं। कॉफ़लीन एक सुरक्षित व गुणकारी दवा है। इसके प्रयोग से बलगम डीला होता है तथा श्वास लेने में आराम मिलता है। इस तरह बार-बार होने वाली आक्षेपयुक्त खांसी को दूर करके आराम पहुँचाता है।

मात्रा :—वयस्कों के लिए १/२ से १ टिकिया दिन में तीन बार दें और बच्चों के लिए उम्र के अनुसार मात्रा कम या बढ़ा सकते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काननोटोमाइत (KYNOTOMINE)

कामला के लिए उपयुक्त है।

काइनोटोमाइन का विशेष प्रभाव यकृत पर होता है। यह पित्त प्रणाली पर कीटाणु व्याप्त निरोधक का काम करता है और कुछ ही दिनों प्रदाह जनित कामला के सारे लक्षणों को दूर कर देता है इस स्थिति में होने वाली कोष्ठ बद्धता को दूर करने 'हर्बल विटर्स' का सेवन करना लाभदायक हैं।

रेवंदचिनि (Revandchini) :—एक दस्तावर द्रव्य है और उसके प्रस्फुट गुण मंदाग्नि परं अच्छा प्रभाव दिखाते हैं। गंदक (Gandak) पित्त को बढाता और रेंचक के रूप में दस्त साफ होने में मदद पहुंचाता है। बलहर्दे फैला हुआ यकृत पर अच्छा असर देता है। काली-कटुकी अपने विशेष गुणों के कारण इसके अन्य द्रव्यों के गुण को उत्तेजित कर उनके प्रभाव को बढ़ाता है।

पुनरनवा एक प्रसिद्ध मूत्रवर्धक द्रव्य है और कई कारणों से होने वाली वात विकार तथा जलोदर रोग में आराम पहुंचाता है। विशेष कर यह यकृत विकार की प्रारंभिक दशा में, आँतों के ऊपर की झिल्ली तथा मूत्राशय को लाभ पहुंचाता है।

मात्रा :—वयस्कों के लिए १ टिकिया दिन में तीन बार दें। बच्चों को उम्र के अनुसार मात्रा निर्णय करें।

यह शक्कर लिपित टिकियों के रूप प्रस्तुत की गई है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेगनाइन (MAGNINE)

अम्लपित्त के लिए आमाशयिक तथा पक्वाशयिक व्रण, वमन भाव; मायु फल्लता के साथ होने वाली मंदाग्नि पैत्तिक शिरःशूल, हृदय दाह तथा वातिक अजीर्ण के लिए उपयुक्त दवा है।

निर्माण विधि :– अम्लत्व हटाने का वैद्य शास्त्र में गत कुछ वर्षों में कई मुख्य परिवर्तन लाये गये। स संबंध में पुराने सरल तथा शीघ्र गुणकारी द्रव्यों जैसा–कार्बोनेट्रस, आक्साइड्स और सुरक्षित क्षार आदि द्रव्यों से सोखने वाले तथा दीर्घकालतक अम्लत्व हटाने में क्रियाशील रहने वाले द्रव्यों को अधिक महत्व दिया गया है। अम्लत्व हटाने वाले आदर्श द्रव्य के कई विलक्षण गुण माने गये हैं। जो द्रव्य पानी के प्रयोग में भी अटल रहे घुलने न पावे, तथा कार्बनटाक्साइड को हिलाये (फैलाये) बिना अम्लता को दुर्बल करने की क्षमता रखे तथा मृदु (नम्र स्वभाव) पदार्थ हो, इसके अलावा यह द्रव्य किसी दूसरे द्रव्य में सोखन योग्य न रहे और उस द्रव्य के अम्लत्व के मूल प्रमाण में भिन्नता (परिवर्तन) न लावे तथा दस्तावर या कोष्ठबद्धता के गुण जिस में न हो–आदर्श द्रव्य माना गया है।

मेग्नीशियम ट्रैसिलिकेट पानी में माँड के सदृश पतला, चिपचिपाने वाला बनता है और हाड्रोक्लोरिक एसिड से जब मिलाया जाता है तो आपसी क्रियाशीलता से मेग्नीशियम क्लोराइड तथा हाइड्रेटेड सिलिकिक एसिड को पैदा करता है। इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाइट्रेटेड सिलिकिक एसिड में अम्लता को हटाने वाले प्रस्फुट गुण पाये जाते हैं जो औषधि की क्रियाशीलता को बढाते हैं।

अलुमिनियम :–हैंड्राक्सैड-जिल इस तरह का अम्लत्व हटाने वाला एक आदर्श द्रव्य है जो प्रधान आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। उदाहरणार्थ कार्बन डायक्साइड की उत्पत्ति नहीं होती, उदरस्थ पदार्थों में क्षार गुण पैदा नहीं होता और साथ-साथ क्रियाशीलता की अवधि को भी बढाने का फायदा मिलता है।

ऊपर के द्रव्यों का बेल्लडोना सिक्कम एक सहायक द्रव्य है जो हैपरक्लोरिया तथा हैपरहाड्रासिस में आमाशय ग्रंथियों के अतिशय स्रावों को कम कर देता है। आमाशय तथा अंतो की मुलायम मांसपेशियों की अनावश्यक अधिक गतियोग को कम करता है जिसकी आमाशयिक व्रणों में बडी आवाश्यकता होती है।

मात्रा :– वयस्कों के लिए २ टिकिया भोजन करने से २ घंटे पूर्व या भोजन करने से तुरन्त बाद और बच्चों के लिए १ टिकिया दें। निगलनें से पहले टिकिया को चूसें।

मेडिटॅब (MEDITAB)

यह दुर्बलता के साथ होने वाली खांसी में उपयुक्त है।

लक्षण :– मेडिटॅब एक प्रभावशाली श्लेष्म निस्सारक दवा है। यह कफ को पतला करने में सहायक करता है और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास योग्य कीटाणु प्रतिशोधक है पुरानी खांसी की अवस्था में "कॉफलींन" देना चाहिए। विशेष रूप से इसका प्रयोग पुराना श्वासनली प्रद्राह में लाभकारी है। राज्यक्ष्मा की खांसी में इसकी छोटी-सी मात्रा एक चम्मच भर दूध या शयद में मिला कर दें। यह श्वास रोग की खांसी में भी लाभदायक है। जबकि खांसी कष्टदायक तथा दौरे के रूप में सताती है तो "डान्जिन" और "डेस्मा" का क्रम रखें। इसके साथ "रब्जान" या "चेसाल" छाती पर मलना चाहिए और सुविधा के अनुसार रूक्ष स्वेद सा बाष्प स्वेद करें।

मात्रा :—वयस्कों के लिए १/४ से १/२ टिकिया दिन में दो या तीन बार दें। इसे थोडे शहद या दूध में मिलाकर देना श्रेयस्कर है।

मैडिकेटेड टूथ पाऊडर

(MEDICATED TOOTH POWDER)

दांतों के रोग विकारों के लिए आदर्श दंत मंजन है। मुलायम मसुडों के रोग विकारो का निवारण कर यह आराम पहुँचाता है। इसके नित्य प्रति प्रयोग से पयोरिया (Pyorrhoea) नहीं होने पाता क्योंकि यह दांतों को साफ रखता है और उन्हें मजभूत करता है। उनमें कीटाणुओं को पनपने नहीं देता। इस तरह यह दांतों को सुरक्षित रखता है। इस मंजन को अंगुली से लगाना उत्तम हैं क्योंकि ऐसा करने सें मसूढों को समुचित मर्दन होता है। बाद में चाहे तो सफाई के लिए दांतों के अन्दर और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर ब्रुश का प्रयोग किया जा सकता है। मंजन लगाने के बाद ५–१० मिनिट तक कुल्ला न करें। रात्रि में सोने के पूर्व तथा सुबह उठते ही इसका प्रयोग किया जाये तो अच्छा होगा।

विशेष सूचना :–मेडिकेटेड ट्रथ पाऊडर से धीरे-धीरे और पर्याप्त समय में "पयोरिया" ठीक हो जाता है। इसलिए जब मसुढ़ों में पीप अधिक हो तो 'ऐन्टोप्स' का प्रयोग रात क सोने से पूर्व करने से बहुत जल्दी लाभ होता है। इस बात का दृष्टांत हैं कि जबकि सारे दांतों के बीच पीप भरा हुआ था तो प्रातः और रात्रि में 'एन्टोप्स' के लगाने से तीन से पाँच हफ्तो के अन्दर सर्वथा ठीक हो जाएगा।

मरसीना (MERSINA)

मधुमेह के लिए उपयुक्त दवा है

विविध वनस्पतियों से निर्मित औषधि 'मरसीना' एक गुणकारी मधुमेह निरोधक दवा है। मधुमेह से पीडित अधिकांश रोगियों में इसके सेवन से रक्त-शर्करा का परिणाम क्रिया कम होती है तथा कार्बोहाइड्रेट्स के सम्यक विपरिणाम में सहायता मिलती है। 'मरसीना' केवल गुणकारी ही नहीं परन्तु सुरक्षित दवा भी है।

चिकित्सक द्वारा बतलाए गयें पथ्य के सामान्य नियमों का पालन होना चाहिए। रोगी नियमित रूप से मूत्र-परीक्षा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करवाते रहें और समय-समय पर रक्त शर्करा की भी जाँच होते रहना चाहिए।

प्रत्येक रोगी के लिए मात्रा का निर्णय अलग-अलग होता है। नियमित रूप से दो या तीन महीने तक मरसीना के सेवन के बाद मात्रा कम करना उत्तम प्रतीत हुआ है। समय-समय पर मिलने वाली मूत्र-परीक्षा रिपोर्ट पर ध्यान देना तथा उनको सुरक्षित रखना अत्यन्त जरूरी है।

मरसीना के प्रभाव से यकृत की क्रिया भी सुधरती है और रोगी की दुर्बलता दूर होकर उसका शरीर स्वस्थ रहने लगता है। इसके सेवन से रोगी चंगा होने का अनुभव करता है। मधुमेह की चिकित्सा मरसीना से सरल भी हो गयी है क्योंकि यह टिकियों के रूप में है और बिना किसी असुविधा के खाई जा सकती है।

मधुमेह की चिकित्सा में 'मरसीना' का प्रयोग लाभकारी सिद्ध हुआ है। जीर्ण मधुमेह में जो 'इंसुलिन' की चिकित्सा पा रहे रोगी को इंसुलिन के साथ-साथ कुछ हफ्ते तक मरसीना दे सकते हैं जिससे बहुत जल्दी ही इंसुलिन से पाक्षिक या पूर्ण रूप में छुटकारा मिल सके। मूत्र-परीक्षा की रिपोर्ट के आधार पर ही मधुमेह के रोगी मरसीना का सेवन शुरू करें तो अच्छा होगा।

मधुमेह की चिकित्सा के लिए 'मरसीना' एक सुरक्षित दवा है फिर भी कुछ तरह के रोगियों में इसकी रक्त शर्करा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपरिणाम क्रिया धीमी होती है। इसलिए तीव्र व तरुण मधुमेह, 'कीटासिस् (Ketosis) तथा अत्यंत संकटपूर्ण व्याधियों में इसका प्रयोग लाभदायक नहीं है।

मात्रा :– २ से ४ टिकियां दिन में तीन वार दें। इसकी दो मात्रा तो मुख्य भोजन से आधा घंटा पहले देना लाभदायक है। तीसरी खुराक सुविधा के अनुसार सुबह या रात्री को लें।

रक्त में यदि शर्करा अधिक होता शुरू में इसकी भारी मात्रा अर्थात् चार-चार टिकियां दिन में तीन वार लेना आवश्यक है। यह मात्रा धीरे-धीरे इतनी कम कर देनी चाहिए जिससे मूत्र में शर्करा आवे।

मेथिलायोड (METHILIOD)

यह ज्वर की तीव्रता को कम करता है। प्रलाप पेट के फूलने को दूर करता है। रक्तस्राव तथा अन्य उपद्रवी को रोकता है।

मेथिलायोड मुँह पकने, गले की खराश तथा टांसिल के बढ़ जाने आदि में गरारे करने से वड़ा लाभ मिलता है। इसका प्रभाव शीघ्र होता है। पानी की दो-चार बूंदों से मिला कर इसका गाढा-सा लेप वना कर उसे रुई की फुरेरी से रुग्ण स्थल पर अर्थात् गले के अन्दर व टांसिल पर लगावें। संधिवात जनित रोगों में 'अयोविन' तथा 'हार्शीपिरिन' के साथ देना लाभदायक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर्वोप्लेक्स (NERVO-PLEX)

यह स्नायु, मंडल के पेचीदा रोगों के लिए केवल इंजेक्शन के रूप में ही उपलब्ध है।

लक्षण :– क्षीण स्नायु, नींद नहीं लगना, मानसिक खिन्न स्नायुविक उद्वेक तथा हिस्टीरिया प्रवृत्तिवाले बीमारों की चिकित्सा में नर्वोप्लेक्स उपयुक्त है। वालतगरा सूक्ष्म रूप से मन को शान्ती प्रदान करके वेदना छुटकारा देता है।

नर्वोप्लेक्स स्नायु कि कमजोरियों की चिकित्सा में तथा उन रोगियों की चिकित्सा में सहायकारी है जो अस्थिर स्वाभाव व वतोन्मन्तता की सत घर्षणा से पीडित रहते हैं।

ऐंठने वावी पीड़ा तथा जीर्ण श्वास के दौरे व अक्षेप-युक्त खांसी में नर्वोप्लेक्स तुरन्त लाभ पहुँचाती है। यह वात-नाडी की पीढ़ा व शूल में भी आराम देती हैं।

प्रयोग :–वयस्कों के लिए १ एम. एल. (MI) २४ घंटों के अन्तर से त्वचा के निचले भाग मे इंजेंक्शन देना है। जैसे-जैसे बीमार की हालत सुधरती है तो चार दिन के विराम से इंजेक्शन देना चाहिए।

नेवोल्स (NEVOSS)

प्रकृति विरुद्ध आचरण द्वारा अथवा स्वाभाविक शक्ति के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिशय व्यय के कारण होने वाले स्नायु विकारों में उपयुक्त है।

किसी भी प्रकार के अधिक परिश्रम, आकस्मिक हर्ष व विषाद, भावावेग तथा अतिशय मद्यपान आदि के फलस्वरूप होने वाले अत्यधिक मानसिक व शारीरिक श्रम से उत्पन्न स्नायु दुर्बलता व शिथिलता की चिकित्सा में उपयुक्त लाभकारी दवा है।

वहुमूत्र में अर्थात् वार-वार पेशाब आता हो तो नेवोस्स उस पर नियंत्रण रखता है याने अन्तर को बढ़ाता है। मधुमेह के निस्तेज रोगियों के लिए भी अच्छा फल देता है।

जीवन शक्ति की कमी व व्याग्रता या व्याकुल चित्तरहने के कारण अनजानें में होने वाली शुक्रपात तथा अत्यधिक भोग लालसा या कामवासना के नियंत्रण करने के लिए नेवोस का सेवन करना अत्यन्त लाभकारी हैं।

मात्रा :—वयस्कों के लिए १/२ से १ टिकियां तीन से चार घंटे के अंतर से दें। दूध के साथ नेवोस्स का सेवन करना अत्यन्त गुणकारी सिद्ध होता है।

ओलोसिन (OLOSYN)

केवल वाह्य प्रयोग के लिए-स्नायु मंडल संबंधी विकारों में उपयुक्त है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात में सोने से एक-दो घंटे पहले केश तेल के रूप में सिर में उंगलियों से मालिश करने से बड़ी गहरी नींद लगती है। ओलोसिन नाडी संस्थान के विकारों को तथा उद्वेलित, अशांत स्थिति में सूक्ष्म रूप से शान्तिदायक का काम करता है। स्नायु संबंधी अगोचर दर्द व पीड़ा विशेषकर सिर में होने वाली पीड़ा से साधारणतया मुक्त कर देता है।

अपस्मार, हिस्टीरिया तथा नाडी मंडल की दुर्बलता की चिकित्सा में ओलोसिन लाभकारी दवा है। सिर पर लगाने के अलावा ओलोसिन की कुछ बूंदें दोनों कानों में दिन में एक बार डाले बशर्ते कि कान के परदे कुछ खराब न हों।

ओलोसिन एक भेवज तेल का सार है जिसमें गजगा (Bonduc) भांगरा (Eclipta) तथा (Neem) के पत्तों का रस मिला है। इनमें जो द्रव्य मिलाये गये हैं उनसे बाहरी प्रयोग व त्वचा पर मालिश करने से लाभकारी गुण प्राप्त कर सकते हैं। हफ्ते में एक बार एक भाग ओलोसिन पांच से दस भाग के किसी मीठा तेल में मिला कर बच्चे व वयस्क लोग स्नान करने से पहले शरीर पर मालिश कर सकते हैं। मांस पेशियों तथा नाडी मंडल पर अच्छा प्रभाव डालने वाला यह ओलोसिन पुराने त्वचा रोग विकारों में शान्ति प्रदान करता है। यह बालों के झड़ने में लाभदायक सिद्ध हुआ है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेनोकॅल्साइन (PHENOCALCINE)

ज्वर निरोधक तथा दर्द व शूल आदि पीड़ाओं को निर्मूलन करने वाली दवा है।

फेनोकॅल्साइन कई प्रकार के साधारण रोग विकारों में प्रयोग करने लायक दवा है जैसे–सिरदर्द, वातशूल, संधिशोथ बुखार, गंठिया, कान में दर्द, दांत की पीड़ा, मांस पेशी तथा वातनाडी पीड़ा को शान्त करता है। विना किसी प्रतिक्रिया गुण के यह पीड़ा से तुरन्त आराम पहुँचाता है।

विशेष रूप से इंफ्लूएंजा में फेनोकॅल्साइन से बड़ा लाभ मिलता है। सालिसिलामइट सें ज्वर की तीव्रता कम होती है तथा सिरदर्द व मांस पेशियों की पीडा से छुटकारा मिलत। है। 'जवाकर' के बहलता से ऐसे परिवर्तनशील द्रव्य पाये जाते हैं जिससे 'फेनोकॅल्साइन' की गुणकारी शक्ति बढ़ जाती है। इसलिए उचित रीति से मात्रा कम कर दी जाती है।

सर्दी व बुखार की स्थिति को ठीक करने में फेनोकॅल्साइन अच्छा प्रभाव दिखाता है। यह सुरक्षित दवा है इसलिए बच्चों से लेकर बूढ़ों तक इसका सेवन कर सकते हैं। मानसिक आवेग तथा क्षीण स्नायु के रोगियों को इसे "वाइटल-एसेन्स" के साथ नित्य प्रति देना लाभदायक हैं। तीव्रतर पीड़ा की स्थिति में "फेनोकॅल्साइन" के बदले में डेसिल देने से प्रत्याशित फल प्राप्त होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा :—१ से २ टिकिया वयस्कों के लिए तथा १/२ से १ टिकिया बच्चों के लिए।

पिपारिड (PIPARID)

आंतों के महीन केचुओं तथा कृमियों के लिए।

पिपारिड आंतों की कृमियों केचुओं को नष्ट करने वाली शक्तिशाली औषधि है।

पिपारिाजिन अपनी सुरक्षा, कार्यदक्षता, स्वाद, प्रयोग में सरलता और सस्ते मूल्य के कारण बड़ी मात्रा में सन्तोषजनक कृमिनाशक औषधि है। उसकी कार्यगति विशेष रूप से कृमियों केचुओं को नष्ट करने वाली है।

कृमियों के कष्टों निवारण के लिए शाम के भोजन के उपरांत एक टिकिया मात्रा पिपारिड पर्याप्त है, जिसके प्रभाव से कृमियां अगले दिन पुरीषोत्सर्ग के समय निकल जाती है। अंतडियों के सभी भागों की कृमियों के पूर्णतया नाश के लिए लगभग पाँच घंटे लगते हैं। इस औषधि का मांस पेशियो पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पडता, जिस कारण अब तक प्राप्त सभी दवाओं में यह अत्यन्त सुरक्षित है। अगर रोगी की आंत की गति सामान्य है ती उसे किसी विरेचन की आवश्यकता नहीं है, किन्तु मलों का अवरोध होने पर दवा का प्रभाव नष्ट होने से पहले ही विरेचन भी देना चाहिए। यह दवा किसी डाक्टर के निर्देश पर कृमियों केचुओं से अत्याधिक कष्ट की दशा में एक सप्ताह तक दी जा सकती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृमियों द्वारा आंशिक मल बन्द होने पर बच्चों को यह दवा खाने को दी जा सकती है। ज्वर की दशा में कृमियों से आँत में पड़े छिद्रों को दूर करने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।

फ्रांस में पिपराजिन और उसके लवणों के नये प्रयोग कृमियों के कष्ट से शान्ति पाने के लिए किये जाते हैं और आजकल इसका प्रयोग तीन सप्ताह तक प्रतिदिन जारी रखा जाता है, किन्तु दूसरे सप्ताह में नहीं दी जाती। (अर्थात् दूसरे सप्ताह में दवा न देकर चाहे तो अगलें एक सप्ताह भी दवा जारी की जा सकती है।)

एक्सट सीना का साथ ही प्रयोग होने पर दूसरे किसी निरेचन की जरूरत नहीं पडती। उससे एक ही बार पूरी कृमियां पूर्णतया निकल जाती है। आंतों की गति में बाधक तत्वों के परिणाम स्वरूप पानी के कम पीने फलतः आंतों के अन्दर बनते धनत्व को दूर करके मलद्वार को साफ करने में सीना सहायक होता है।

इसी प्रकार कृमिनाशक औषधियों तथा सीना एक्सट के मेल से तैयार किया हुआ पिपारिड कृमियों से कष्ट को दूर करने के लिए अत्युत्तम दवा है और इसका उपयोग बच्चे तथा वयस्क दोनों कर सकते हैं।

मात्रा :– वयस्कों के लिए प्रतिदिन दो से चार टिकियां। बच्चों के लिए आयु के अनुसार एक से दो तक टिकियाँ। चिकित्सा की अवधि चिकित्सक को निर्धारित करना होगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसजेन्ट (RASGENT)

नेत्र के समस्त रोगों के लिए उपयुक्त है। अन्य नेत्र औषधियों के अतिरिक्त इसके प्रयोग से नेत्रों को ठंडक मिलती है, नेत्र स्वच्छ होते हैं और शीघ्रता रक्त प्रसरण ठीक होकर सूजन और पीड़ा से नेत्रों को आराम मिलता है तथा सभी नेत्र विकार दूर हो जाते हैं।

प्रयोग विधि :– रसजेन्ट की एक या दो ग्रेन की मात्रा एक चम्मच भर उबाले हुए पानी में घोलकर दो-तीन बार दोनों नेत्रों में डालते रहना चाहिए। केवल दुःख के नेत्रों में ही नहीं अपितु दूसरे नेत्र में भी उक्त विधि से बनाया हुआ रसजेन्ट का मिश्रण डालना चाहिए क्योंकि दोनों नेत्र आपसी सम्बन्ध रखते हैं। एक मात्रा रसजेन्ट सोते समय रात्रि को खिला दें।

रसजेन्ट के उपयोग से मुहासे-फुन्सी, फोडे, कण्डू, गले की सूजन तथा सांक्रामक अतिसार में लाभ मिलता है।

व्रण या फोडे की चिकित्सा में रसजेन्ट की एक मात्रा का सेवन काफी है। यदि वांछित फल न दिखाई पडे तो चार-छे घंटे के बाद और एक मात्रा देनी चाहिए। मगर फोडा कम होना आरम्भ हो जाय तो दूसरी मात्रा न दें।

रेमेडी नंबर्स (Remedy Numbers) :-ये आठ औषधियाँ जनता की औषधि-चिकित्सा सेवा कार्यक्रम के लिए तैयार की गई हैं। विशेष विवरण के लिए हमारा पूरा चिकित्सालय नामक पत्रक पढ़ें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके नाम इस प्रकार है ।

रेमेडो नंबर १–सलफॉस, रेमेडी नंबर २–अयोक्विन नंबर ३–डायासिन, नंबर ४–फ्लूजन, नंबर ५–कॉफलीन, नंबर ६–फेनोकैल्साइन, नंबर ७–वाइटल एसेन्स, और नंबर ८–हर्बो सल्फ ।

रेमोरिन (REMORIN)

तरुण या पुराने आमवात, कटिशूल, संधिशोथ गठिया, गृध्रसी तथा स्नायु वेदना, वातशूल आदि में उपयुक्त है । इसके अलावा सिर दर्द व शरीर में कहीं भी किसी तरह का दर्द क्यों न हो और जिसका पता न लगता हो या शिरोवेदना हो तो यह गूणकारी सिद्ध होता है । केवल इंजेक्शन के रूप में रेमोरिन की चिकित्सा करते समय बीच-बीच में "हार्मोपिरिन" की एक मात्रा खिलाना अत्यन्त लाभकारी होती है ।

रेमोरिन में चिराता, धतूरा, सरपेंटीना और कुचिं मिले हुए हैं । सबके विशेष गुणों ने इसे एक विश्वासनीय, सुरक्षित व अत्यंत गुणकारी दवा बना दिया है जो हल्के रूप में शामक संधिशोथ निरोधक, आक्षेप हर तथा ज्वर निरोधक औषधियों का मिश्रण है ।

रेमोरिन में परिवर्तन शील द्रव्य गुण होने के कारण-साधारण दुर्बलता, स्नायु शिथिलता, तथा मांस पेशियों में होनेवाली शक्ति क्षीणता में यह एक रसायन के तौर पर काम करता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा :– वयस्कों के लिए एक एम. एल. (I MI) २४ घंटों के अंतर से दें। बच्चों की उम्र के अनुसार मात्रा देनी चाहिए।

रिपंन्टो (RIPANTO)

केवल बाह्य प्रयोग के लिए है। जलने से फफोला, कण्डु, व्रण, एक्जिमा तथा बच्चों के होने वालें "स्कांल्डस" (Scalds) झुलसने के रोग विकार आदि में उपयुक्त मल्हम है।

रिपंन्टो एक अद्‌भुत मल्हम है जिसमें शामक तथा पीडा हरण वाले द्रव्य मिले हुए है। इसमें प्रबल क्रिमि नाशक तथा शीघ्र गति से घाव भरने की शक्ति हैं। इसलिए निम्न प्रकार की स्थितियों में यह विशेष गुणकारी होता है।

आग से जलना और झुलसना :–आक्रान्त स्थान पर मोठी तह में रिपंन्टो लगावे। यदि जल जाने के तुरन्त बाद ही इसे लगाया जाय तो इसके शामक द्रव्य फोडे होने से बचाते हैं तथा पीडा को कम करके बुरी हालत से रक्षा करते हैं। रिपंन्टो में त्वचा को मुलायम करनेवाले विशेष गुण पाये जाते हैं। इसलिए फोडा भर जाने तक सुबह और शाम में इसे लगाना अत्यंत आवश्यक है।

कण्डू, घाव, एक्जिमा, शय्या-व्रण आदि आक्रांत स्थान को गरम पानी से धोने के बाद नरम कपडे से पोंचकर सुबह व शाम को मल्हम का लेप लगावें सद्य व्रण और क्षत पर मल्हम लगा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर पट्टी बांध दें। यह एक विश्वासनीय कृमि नाशक होने के कारण घाव में पीप नहीं पड़ती तथा जहरीला भी नहीं बन सकता।

पैर में होनेवाले गोखरू :-(Corns) पर रिपंन्टो लगाने से नरम पडकर धीरे-धीरे मिट जाते हैं। इसी तरह चेहरे पर के काले दाग वगैरह भी मिट जाते हैं क्योंकि यह त्वचा को नरम रखता है। रात्रि, सोने से पहले थोडा रिपंन्टो अपने चेहरे पर लगाकर धीरे-धीरे मालिश करें।

खुरदुरे व कर्कश त्वचा वाले हथेली व पैर के तलुवे पर रात में सोने से पहले रिपंन्टो नित्य प्रति लगावें। रिपंन्टो के विशेष मुलायम करने के गुण से वहां का चमडा नरम बन चाता है।

रिपंन्टो में मिलाये गये "ओलियम लिनि" (Oleum Lini) तथा "ओलेंम सीसमी (Oleum Sesami; आदि बढिया तेल हैं जिसमें घाव भरने के विशेष गुण पाये जाते हैं और इनमें त्वचा को मुलायम करने तथा शान्ति देने के गुण होते हैं। बवासीर (Piles) के रोग में इससे उनके ऊपर रात्रि में सो जाने से पहले लगाने से तथा "स्पोलेक्स" की एक मात्रा खाने से बड़ा लाभ मिलता है।

रिपंन्टो (Collapsibie Tube) में मिलता है जिसके साथ प्रयोग विधि की सूचनाएं मिलती हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रबजान (RUBZON)

सर्दी-जुकाम, खांसी तथा दर्द व पीडा में शान्तिदायक औषधि (लेप) है और यह केवल बाहरी प्रयोग के लिए है।

रबजांन सुप्रसिद्ध औषधियों का बना एक अत्युत्तम कष्ट निवारक योग्य लेप है। विशेष विधि से बनाया हुआ इसके मुख्य आधार द्रव्य 'पेट्रोलेटम' (Petrolatum) तथा 'लेनोलिन' (Lanolin)से इसका प्रभाव दीर्घकाल तक सुरक्षित एवं अत्याधिक गुणकारी होता है। बडी आसानी से ये लेप लगा लिया जा सकता है। शीघ्र चर्म में प्रवेश करता है और इसके लगाने से त्वचा या कपडे पर कोई दाग नहीं लगता है। नाक या नथुनों में इसके लगाते ही सर्दी जुखाम व खांसी से शान्ति मिलती है तथा छाती पर दबाव की पीडा से फौरन चुटकारा मिलता है। सिर दर्द में यह शीघ्र गति से आराम देता है। गरम पानी में इसे थोडा मिला कर उसके भाप को सूंगने से श्वास नलीं दाह (ब्राकाइटीस) में बडा लाभकारी गुण मिलता है। संधिशोथ व मांस पेशियों की ऐंठनेवाली पीडा में रबजांन की मालिश करने से अत्याधिक गुण पाये जाते हैं।

विशेष रूप से संधिशोथ, गंठिया, कटिशूल वातिक वेदना गृध्रसी, स्नायुपीडा आदि में रबजांन लाभकारी है।

हमेशा रबजांन अपने पास रखें ताकि शीघ्र, सस्ती व सुरक्षित चिकित्सा प्राप्त हो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सालफांस (SALPMOS)

मंदाग्नि तथा पाचन संस्थान संबंधी रोग विकारों के लिए उपयुक्त है।

लक्षण :–सालफांस मंदाग्नि, उदर शूल, पित्ताधिक्यता, अफ़ारा, पेट फूल जाना, अतिसार तथा कब्ज आदि में गुणकारी दवा है। पेट के अन्दर क्षोभ उत्पन्न होने तथा पाचन संस्थान संबंधी और उससे पैदा होनेवाले अन्य रोगों के निवारण व चिकित्सा के लिए सालफांस अत्युत्तम औषधि है।

निर्माण :–प्रसिद्ध देशी मूलिकाओं का यह एक उत्तम मिश्रण है। जो द्रव्य इसमें मिलाए गये हैं वे सब जठराग्नि वर्धक तथा पाचन संस्थान की क्रिया-शक्ति को बढानेवाले हैं। इस मिश्रण में कडुवापन के रसायन तथा पाचन शक्ति को उत्तेजित करने वाले गुण पाये जाते हैं। नित्य प्रति इसके सेवन करने से पित्ताधिक्यता क्रमबद्ध होकर स्वाभाविक कब्ज भी दूर हो जाता है।

सालफांस जठर रस उत्पत्ति को उत्तेजित करता है। इसकी दीर्घकाल तक की चिकित्सा को बच्चों से लेकर बूढों तक सभी बरदाश्त कर सकते हैं। सालफांस सारी पाचन संस्थान को मजबुत बनाकर अजीर्ण रोग को दूर करता है। इस तरह साल-फांस एक उत्तम जीर्णकारी रसायन बन गया है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा :–पाचन संबंधी विकारो में १ से २ टिकियाँ भोजन करने के बाद तथा मंदाग्नि में भोजन करने से पहले इसका सेवन करना चाहिए। बच्चों को उम्र के अनुसार मात्रा कम ज्यादा कर सकते हैं।

शिशुओं के पाचन संबंधी विकारों के लिए हमारा ग्राइप मिक्शर बयो-साल (Bio-Sal) उत्तम औषधि है।

सेन्जाइन (SENZINE)

नपुंसकता, स्नायु दुर्बलता तथा अतिशय नाडी स्पंदनों में उपयुक्त दवा है। यह सेन्जाइन काम शक्ति के हरास में उसका पुनः संचार करने वाला एक विश्वासनीय रसायन है। यह उत्तेजक नहीं हैं अपितु सूक्ष्म शामक प्रभाव दिखाने के कारण खोई हुई काम शक्ति फिर से प्राप्ति होती है। इससे स्वाभाविक उत्तेजना मिलती है।

इस मिश्रण में मिले हुए औषधि द्रव्यों के कारण से सेन्जाइन एक योग्य रसायन बना है जिसके सेवन स्नायु-मंडल को काफी बल मिलता है तथा सूक्ष्म रूप से कामोद्दीपक का प्रभाव देती है।

यह एक उत्तम परिवर्तनशील द्रव्यों वाली दवा है जिसके कारण खोई हुई काम शक्ति पुनः प्राप्त होती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग :– भोजन करने से एक घंटा पहले तथा रात्रि में सीते समय 'सन्जाइन' का सेवन करना गुणकारी है।

मात्रा :– शामक तथा वीर्य वर्धक के तौर पर १ टिकिया प्रत्येक भोजन के पूर्व देना चाहिए। तथा कामोद्दीपक के तौर पर १ सें २ टिकियां दिन में तीन बार दें।

स्किनमेन्ट (SKINMENT)

दाद पैरों की खुजली, विचर्चिका (Psoriasis), और कई तरह के कीटाणुओं से होनेवाले चर्म रोगों के विकारों में उपयुक्त मल्हम है।

बेंजाइक (Benzoic) और सालिसिलिक अम्ल (Salicylic Acid) सूक्ष्म मात्रा में ही कई तरह के कीटाणुओं के नाशक द्रव्य हैं जो बहुकाल से विविध चर्म रोगों की चिकित्सा में प्रयोग किये जाते हैं। वाईटफील्ड आइन्टमेन्ट (Whitefields ointment) में ये उक्त द्रव्य मौजूद हैं जिसका आधार द्रव्य पंराफिन (Paraffin) है। यश प्रसिद्ध मल्हम अस्पतालों व दवाखानों में त्वचा सम्बन्धी कई तरह के रोग विकारों की चिकित्सा में बहुत समय से इस्तेमाल किया जा रहा है।

उपर्युक्त आम्ल द्रव्यों के साथ स्किनमेंट में और तीन क्रियाशील द्रव्य-सलफर (Sulphur), इक्थाम्मोल (Icthammol)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा डिथ्रनाल (Dithranol) मिलाये गये हैं जो दाद, खुजली एग्जिमा आदि कई तरह के फैलाने वाले चर्म रोगों की चिकित्सा में उपयुक्त होते आये हैं। इक्थम्मोल का सरल द्रव्य सूक्ष्म रूप से कई तरह के कीटाणुओं को नष्ट कर देता है जो पुराने चर्म रोगों की चिकित्सा के विशेष लाभकारी है। वैसे ही डिथ्रनाल एक प्रभावशाली क्रिमिनाशक द्रव्य है जो खासकर दाद, पैरों की खुजली तथा 'सोरियासिस' में गुणकारी है। सूक्ष्म मात्रा में भी सही इसके रासायनिक द्रव्य विशेष प्रभाव रखते हैं इसलिए बहुत समय से इस चिकित्सा में उपयुक्त किये जाने वाला दवा क्रैसाराविन (गोवा पाऊडर) से भी यह अधिक महत्वपूर्ण है।

इस तरह स्किनमेंट उक्त विशेष गुण वाले पांच द्रव्यों के मिश्रण से बना है जो कई तरह के कीटाणुजन्य चर्म रोग चाहे तरुण या पुराना क्यों न हो—जैसे—व्रण, दाद, कण्डू या खूंजली एग्जिमा तथा सोरियासिस आदि की चिकित्सा में सफलता पूर्वक प्रयोग में लाया गया है। इसका और एक विशेष गुण यह है कि वह त्वचा पर कोई क्षोभकारी दुष्ट प्रभाव नहीं लाता है। इन पांच रासायनिक द्रव्य का आधार द्रव्य जो सोखने का स्वभाव रखता है वह रुग्ण स्थान पर सीधे व आसानी से प्रवेश कर शीघ्र गति से आराम पहुंचाता है।

प्रयोग विधि :—रात्र को रुग्ण स्थान पर थोडा स्किनमेंट से धीरे-धीरे मालिश करें और सुबह उसे धो डालें। इस प्रकार तब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक करें जब तक कि त्वचा का रंग स्वभाविक न बने । तीव्र स्वभाव वाले चर्म रोग जैसा-दाद, पैरों की खुजली (Mycotic Infection) रुग्ण स्थान को अच्छी तरह धोकर और सुख जाने के बाद दिन में दो बार यह मल्हम लगावें । स्वच्छता तथा शारिरिक स्वास्थ्य की ओर ध्यान रखना जरूरी है । अन्य कार्बोलिक साबुन आदि का उपयोग न करें ।

अन्य उपयोग :– एग्जिमा, अतिशय खुजली, लूपस (एक प्रकार का चर्म रोग) मुहासे, पुरानी, कण्डु, दुष्ट व्रण, बालों का गंजापन आदि विकारों में भी स्किनमेंट एक उपयुक्त मल्हम है ।

स्पोलेक्स (SPOLAX)

दाने के रूप में कोष्टबद्धता तथा अर्श रोग (piles) के लिए उपयुक्त दवा है ।

स्पोलेक्स पाचन संस्थान को मजबूत बनाता है । मल वहिष्कार क्रिया को क्रमबद्ध कर अंदरूनी विषैले मलिन को बाहर निकाल देता है ।

नियमित जीवन व्यतीत करने वाले लोगों में भी कोष्टबद्धता आंतों की दुर्बलता से जो कि मंदाग्नि के कारण पैदा होती है, पर्याप्त मात्रा से कम आहार के सेवन से अथवा आहार संबंधी की गई छोटी-सी त्रुटि से आंतों की वहिष्करण शक्ति के कम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोर हो जाने के कारण भी हो सकते हैं। स्पोलेक्स के द्वारा इन सभी दशाओं में लाभ होता है। यह जठराग्नि को उत्तेजित करता है। मल के परिणाम की वृद्धि करता, आंत्र मार्ग को चिकना करता है, बृहदन्त्र के निचले भाग में स्वाभाविक गति शीलता लाकर नरम मल को बिना कष्ट के निकाल देने में सहायक होता है। मल विसर्जन के समय कंथना या जोर लगाना ठीक नहीं है। विशेषकर अधिक रक्त चाप से पीडित रोगियों के लिए अत्यन्त नष्ट कारक होता है। स्पोलेक्स के सेवन से यह दोष दूर हो जाता है।

जिनको कोष्टबद्धता, कमजोरी या कमजोर पाचन शक्ति के कारण या वातिक अजीर्ण या स्नायुविक या विकार या हमेशा बैठे रहकर काम करने की आदत या मानसिक श्रम या वृद्धावस्थासी बनी रहती है उनके लिए स्पोलेक्स विशेषकर अनुकूल रहता है। स्पोलेक्स आतों के पानी चूसकर फूल जाता है और इस प्रकार प्राकृतिक रूप से मल बहिष्करण कार्य में सहायता पहुँचाता है। इससे भूख बढ़ती है तथा रोगी स्वस्थ बनता और उसके चेहरे पर प्रसन्नता की लाली दौडती है।

स्पोलेक्स अर्श आदि से पीडित रोगी को तुरन्त आराम पहुँचाता है तथा रोग जड़ से मिटाने में सहायक होता है। स्पोलेक्स से यकृत की क्रिया-शक्ति ठीक होती है। शारीरिक स्थिति के अत्याधिक गर्मी को दूर करता है। कम मात्रा में सेवन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने से प्रवाहिका तथा दौरे वाली खांसी में लाभदायक सिद्ध हुआ है।

प्रयोग विधि :–एक से तीन चम्मच भर स्पोलेक्स के दाने फांक कर एक गिलास पानी के साथ रात में भोजन से दो घंटे पूर्व दें या सोते समय, कब्ज अधिक रहने पर एक चम्मच औषधि भोजन से दो घंटे पूर्व सुबह और शाम को देना चाहिए। इससे अगले सवेरे पायखाना खुलकर हो जायेगा। आवश्यकता अनुसार मात्रा घटा या बढा भी सकते हैं।

सल्फासिन (SULFASEN)

संक्रामिक रोग विकारों को चिकित्सा में उपयुक्त है।

लक्षण :– यह ब्रांकाइटीस, निमोनिया, व्रण, टांसिल्स फारंजाइटीस कान की सूजन तथा सिन्यूसाइटिस आदि में उपयुक्त दवा है। आंतों के संबंधी संक्रामिक रोग विकारों में भी इसके प्रयोग से अच्छा फायदा मिलता है। मूत्राशय संस्थान संबंध संक्रामिक रोगों में भी इनका अच्छा प्रभाव पड़ता है।

इस में मदार (Madar) के रहने से कोई प्रतिक्रिया प्रभाव या बुरे पड़ने की संभावना कम की गई है।

सल्फासिन एक विश्वासनीय तथा सुरक्षित सूक्ष्म क्रिमि-नाशक दवा है। सूक्ष्म मात्रा में होने के कारण वास्तव में इससे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई अन्य परिणाम नहीं निकलते । इससे क्रिष्टलूरिया के कारण मूत्राशय संस्थान को अस्वस्थ होने से यह बचाता है ।

आमतोर पर सल्फासिन एक रोगहर दवा है जो रक्त दूषित होनेवाले प्रत्येक स्थिति में गहरा असर दिखाता है । रोग निवारक के तौर पर हो या चिकित्सा विधि में हो इसके निरंतर सेवन के बाद भी कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता ।

मात्रा :—बच्चों के लिए १/४ एम. एल. (ML) तथा वयस्कों के लिए १ एम. एल. चौबीस घंटों के अंतर से दें । रोगी की अवस्था सुधरते जाने पर इन्जेक्शन देनें का समयांतर भी बढाते जाना चाहिए ।

(हेमो-प्लेक्स व आयोडीन का प्रयोग भी साथ-साथ किया जा सकता है ।)

टेक्साइन (TAXINE)

स्वाभाविक कोष्ठबद्धता तथा यकृत की शिथिलता के लिए उपयुक्त है ।

मात्रा :—पित्तज शिरःशूल, जीर्ण पित्तनली प्रदाह तथा आंतों की सड़न को दूर करती है । इस में कॅसकरा (Cascara) होने से विशेष रूप से आंतों की दीवार की पेशियों को मजबूत करने में सहायक होती है । इस लिए यह प्रतिदिन उपयोगी नहीं है ।

(7)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेचक दवा के तौर पर टेक्साइन के सेवन से, बाद में कोष्टवद्धता नहीं होती। नियमित कब्ज में इसका सेवन आंतों की क्रिया को सहज, स्वाभाविक तथा नियमित करने में सहायक होता है। टेक्साइन यकृत तथा पाचन संस्था अन्य अंगों को स्वस्थ एव कार्यक्षम बनाती है।

'टेक्साइन' सातलु फल (Peach) की खुशबूदार, स्वादिष्ट रेचक दवा है।

यह बच्चों को भी दी जा सकती तथा गर्भावस्था में भी सेवन करने योग्य एक उत्तम रेचक दवा है।

मात्रा :—वस्यक लोगों के लिए १ से २ टिकियां तथा वच्चों के लिए १/२ से एक टिकिया दें। जव इससे आंतों का काम सहज रूप से हो कर कुछ फायदा दिखने लगे तो आवश्यकतानुसार मात्रा कम या जादा वढ़ा सकते हैं। इसे रात में सोने से पहले या भोजन से दो घंटे पूर्व लें।

तूरई-को (TURAI-CO)

यह एक सुरक्षित तथा प्रभावशाली मूत्रक औषधि है। यह वृक्कों की तथा मूत्रवाहक संस्थान की श्लेश्मिक झिल्ली को उत्तेजित करती है। मूत्रक होने अलावा 'तूरई-की' कीटाणु नाशक भी है। यह मिश्रण मूत्र प्रणाली पर 'हल्का-सा' शामक भी देता है और मूत्र विसर्जन के समय होने वाले दर्द या जलन को दूर करने में सहायक बनता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा :—वयस्कों के लिए १/२ टिकिया दिन में तीन बार।

वाइटल एसेन्स (VITAL ESSENCE)

ऐंठने वाली पीड़ा को दूर करके शान्ति देने वाली औषधि है।

लक्षण :—प्रलाप, स्नायुविक घबराहट, ऐंठने वाली पीड़ा, नींद नहीं लगना तथा मांसपेशियों तथा जोडो के होने वाली पीड़ा को दूर करने में उपयुक्त है।

निर्माण :—भारतीय चिकित्सा विधि में 'असगंध' एक प्रसिद्ध कामोद्दीपक तथा स्नायुविक मंडली को शान्ति प्रदान करने वाला रसायन है। 'छोटा चांद' (Choto chand) भी एक मशहूर औषधि है जो रोगी उग्रावस्था, मानसिक विकारों से होने वाली बेचैनी व स्नायुविक घबराहट दूर करने में लाभकारी है। बालतगरा' विशेषकर नींद नहीं लगने तथा बेचैनी में गुणकारी दवा है। यह अपस्मार व मिरगी और वातोन्माद व मूर्छावस्था में भी उपयुक्त और गुणकारी दवा है 'खुरासानी अजवाइन' ऐंठने वाली पोड़ा का निरोधक द्रव्य है।

इस तरह वाइटल एसेन्स एक विश्वसनीय, स्नायु बलकारक रसायन सिद्ध हुआ है। कुछ दूसरे आधुनिक दवाओं की अपेक्षा इससे कोई अनपेक्षित बुरा प्रभाव नहीं होता। मन के सहज स्थिति को खराब किये बिना ही उसके ऊपर होने वाले दबाव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था आवेग को दूर करके आराम पहुँचाता है। बहुत समय तक इसके सेवन करने पर भी कोई अनपेक्षित प्रतिक्रिया नहीं पड़ती।

दिन के समय में ही "वाइटल एसेन्स" का सेवन करना लाभदायक है। इससे कोई आदत नहीं पड़ती। वाइटल एसेन्स रोगी में पीड़ा की अनुभूति का काम करता है। इसलिए पुराने सिरदर्द (वातिक शिरशूल) और अन्य स्नायु संबंधी पीड़ा व दर्द को निवारण करने में सहाकारी होता है।

मात्रा :-वयस्कों के लिए १ से २ टिकियाँ दिन में तीन बार दें। उम्र के अनुसार बच्चों के लिए मात्रा कम या जादा बढा सकते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगों की चिकित्सा

तृतीय भाग

भूमिका :– हम चिकित्सा की प्रकृति की व्याख्या कर रहे हैं जिसका अध्ययन उन सभी तथ्यों के साथ-साथ करना चाहिए जिसका उल्लेख 'वर्गीकरण' शीर्षक के नीचे किया गया है। इससे आपको उन मूलभूत सिद्धांतों का दिग्दर्शन प्राप्त होगा जिन पर विभिन्न औषधियां प्रभाव करती हैं। तभी आपकी समझ में आयेगा कि इलाज वास्तव में कितना सरल है तथा कितनी कम दवाओं के क्रम द्वारा और कितने कम व्यय से आप कितनी बडी सेवा कर सकते हैं। इसमें वास्तविक सुविधा यह हैं कि यह सारा कार्य बड़ा सरल बनाया गया है और साधारण दवाओं के द्वारा बडी-वडी बीमारियों पर काबू पाने का प्रयत्न विद्यमान है और इस बात पर बल देने के लिए हम यह बात दुहराते हैं कि अधिक मात्रा की अपेक्षा थोडी मात्रा के प्रयोग से अधिक उत्तम एवं शीघ्र परिणाम पाये जाते हैं। दवाओं की प्रयोग विधि द्वितीय भाग में सामान्य निर्देशों के रूप में दी गई है।

इस भूमिकात्मक टिप्पणी द्वारा हम आपके मस्तिष्क पर अपनी यह इच्छा अंकित करना चाहते हैं कि हम इन सब बातों को साधारण व सरल बनाना चाहते हैं। हमारा मुख्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य यह होना कि दुखी जनों की सहायता करना न कि अपनी महत्त्वाकाँक्षा को पूरा करना। यद्यपि हमें प्रत्येक वस्तु का सच्चाई, परिश्रम एवं समझदारी से अध्ययन करना चाहिए पर उसमें नम्रता की भावना का अवश्य होना चाहिए।

शारीरिक चिकित्सा (Constitutional Treatment) :— रोगी की चिकित्सा रोगी की सुविधा पर निर्धारित होनी चाहिए न की रोट चिकित्सा पर' इसलिए किसी भी रोग की चिकित्सा में सोंच विचार कर अपने दिमाग द्वारा निम्नलिखित वातों का संतुलन करना चाहिए जिनका विशेष विवरण इस गाइड के प्रथम भाग में दिया जा चुका है। रोग को दूर करने की कोई भी मुख्य औषधि आप निर्धारित करें परन्तु उसके साथ अवश्य ही शारीरिक पोषण की ओर ध्यान दें और आवश्यकता हो तो पाचन क्रिया और स्नायु मंडल को सुधारने की दवाई अवश्य दें। कई डाक्टरों ने सूचित किया है कि प्रत्येक रोग में मुख्य रोगनाशक औषध्रि के अतिरिक्त सदा ही 'सॉलफाँस' या 'वाइटल एसेन्स' या दोनों ही साथ-साथ देने से उत्तम लाभ हुआ है।

१. पोषण :— अल्व्रोसांग के सेवन से पोषण वढता है तथा यह प्रकृति की निजी औषधि है। पथ्यापथ्य की दृष्टि से हमने तीन प्रकार के भोजन लिखें हैं परन्तु पक्का नियम कोई नहीं समझना चाहिए। परिस्थितिवश और आवश्यकतानुसार उनमें परिवर्तन किया जा सकता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ्य नं. १ :– प्रातःकाल तीन भाग दूध, एक भाग चाय या काफी, अल्बोसांग, आवश्यकतानुसार चीनी और उसके साथ डबलरोटी या चपाती और कुछ फल खायें। मध्यान्ह और सायंकाल के भोजन में जिस भोजन से अभ्यस्त हो खा सकते हैं। जिन व्यक्तियों की पाचन शक्ति कमजोर हो वे दोपहर और रात्रि के भोजन से पहिले या बाद 'सांलफांस' का प्रयोग करें। यह भोजन व्यवस्था उत्तम स्वास्थ्यप्रद है। मस्तिष्क संबंधी कार्य करने वाले यदि दोपहर बाद एक प्याला चाय पी लें तो अच्छा है परन्तु इसके साथ कुछ खाना नहीं चाहिए जब तक कि वास्तविक भूख न हो। प्रातः और दोपहर के भोजन के बीच में थोडा फलों का रस अल्बोसांग मिलाकर ले सकते हैं।

पथ्य नं. २ :–प्रातः और रात्रि को तीन भाग दूध, एक भाग चाय या काफी अस्बोसाँग मिलाकर ले और इसके साथ चपाती या डबलरोटी इत्यादि जैसा कि पथ्य नं. १ में दिया गया है। मध्यान्ह में कोई भी भोजन इच्छानुसार या जिसके अभ्यस्त हों अर्थात् दोपहर को पूरा भोजन तथा प्रातः और रात्रि दो लघु भोजन। यह व्यवस्था ५० या ६० की आयु के व्यक्ति तथा जिनकी परिपाक शक्ति दुर्बल है उनके लिए उत्तम है। जैसे-जैसे पाचन शक्ति सुधरती जावे तो रात्रि का भोजन भी चालू किया जा सकता है। इस भोजन के द्वारा खोया हुआ स्वास्थ्य शीघ्रता से पुनः प्राप्त होता है। वृद्धिजन कई वर्ष कम आयुवाले दिखाई देते हैं तथा स्वयं अनुभव भी करते हैं। बूढे लोगों के लिए एकाहार का नियम अति उत्तम है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ्य नं. ३ :—हल्का भोजन, दूध दलिया, फलों का रस इत्यादि तीन-चार घंटे अन्तर से थोड़ा अल्बोसांग मिलाकर दें। यह पथ्य रोग की दशा में तथा आमाशय रोगों की चिकित्सा में अथवा आमाशय और आन्तों के उग्र प्रदाह (Acuta Gastro-Enteritis) में देवें। इस पथ्य के सेवन से शीघ्र आरोग्य प्राप्त होता है तथा परिणाम स्थायी होता है।

२. परिपाक (Digestion) :— सभी पाचन सम्बन्धी विकारों में 'सालफॉस' एक मुख्य औषधि है जिनकी पाचन शक्ति दुर्बल हो और थोडी सी अनियमिता से अजीर्ण हो जावे उनके लिए 'गैस्ट्रोमोन' अच्छा है। अम्लपित्त, खट्टे डकार, अफारा, उग्र शूल तथा उस पीडा के लिए, जो कि खाने से कुछ घंटे के बाद या रात के समय आवे, 'मैंगनाइन' हितकारी हैं।

३. विपरिणाम (Assimilation) :—यदि कोई व्यक्ति अच्छा खाते-पीते और अच्छा हजम कर लेता है फिर भी दुबला-पतला नजर आवे तो समझा जाता है कि उसकी विपरिणाम क्रिया ठीक नहीं है ऐसी दशा में अल्बोसांग और गैस्ट्रामोन देने से वह ठीक हो जाता है।

४. सात्मीकरण (Sensitization) :— इससे अभिप्राय यह है कि आमाशय को उन आहार द्रव्यों के हजम करने के लिए अभ्यस्त न बनाना जो रोगी के लिए स्वाभाविक होने पर भी वह कदाचित सहन नहीं कर सकता। इस स्थिति में गैस्ट्रो-मोन इसकी विशेष औषधि है। इसके प्रयोग के बाद क्रमशः उन वस्तुओं का सेवन करावें जो पहिले सहन नहीं होती थी। इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार कुछ दिनों तक करें और कुछ समय के लिए फिर बन्द कर देवें। फिर आरम्भ करें और बीच-बीच में रोकते रहें, इससे आमाशय अभ्यस्त हो जावेगा और हजम करने लगेगा।

५. मल त्याग (Elimination) :— अर्थात् नियमित रूप से आंतों का मल बाहर फेंकना अथवा कोष्ट बद्धता न होना। अल्वो-सांग और गैरट्रोमोन स्वाभाविक रूप से कोष्ठ शुद्धि करते हैं। स्पोलेक्स बडे व कमजोर व्यक्ति, व दुर्बल मस्तिष्क से कार्य करने वाले, कोमल स्वभाव तथा उन व्यक्तियों के लिए अत्युत्तम है जो पर्याप्त मात्रा में भोजन का सेवन नहीं कर सकते और जिससे मल का यथोचित परिणाम नहीं बन पाता और साथ ही अर्श के रोगियों में लाभदायक है।

बच्चों और युवकों के लिए टैक्साइन का प्रयोग करें। हर्बल बिटर्स भी कोष्ठ शुद्धि करने के लिए अच्छी औषधि है। साथ ही यह न भूलना चाहिए कि जो औषधि पाचन क्रिया सुधारती हैं, वह मल शुद्धि भी करती है।

६. मानसिक स्नायुविक विकार (Nervous Disturbances) :—मानसिक विकारों के द्वारा पोषण, पाचन तथा मलत्याग में विकृति हो सकती है और साथही रक्त दुष्टि भी हो जाया करती है। पोषण की कमी, पाचन शक्ति की दुर्बलता तथा कोष्ठबद्धता के द्वारा जैसे स्नायु मण्डल के विकार हो जाते हैं उसी प्रकार जो इन तीनो को ठीक करता है उससे स्नायु विकार भी स्वयं ठीक हो जाएगी। स्नायु विकृति आज कल कोष्ठ बद्धता रोग के समान ही एक विशेष समस्या बन गई है,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस लिए इस ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वाइटल एसेन्स इसकी एक मुख्य औषधि है। इसे थोडी मात्रा में आहार के बीच के समय में सेवन करना चाहिए और रात को सोते समय भी एक मात्रा ले लेना उत्तम है। साधारणतया दिन में एक या दो मात्रा थोडे परिणाम में सेवन करना पर्याप्त है खासकर यदि अल्वो-सांग भी साथ में सेवन किया जावे। शक्ति बढाने के लिए पंच ग्रेन मात्रा में द्रव्य भोजन या फलों के रस के साथ लिया जा सकता है।

७. रक्त दूष्टि (Blood Changes) किटाणु विष के कारण रक्त दूषित हो जाता है और इसके विशेष औषधि हार्मोपिरिन हेमोप्लैक्स तथा सल्फासिन हैं। रक्त दूष्टि गनोरिया और सिफलिस के कारण भी होती है, जबकि वे उग्र दिशा में हो जिनकी चिकित्सा आगे उन शीर्षक के अन्तर्गत देखें। इनके अतिरिक्त, कुछ एक आभ्यन्तरिक छिपे हुए कारणों से भी रक्त दूषित हो जाता है जिनमें साधारणतया कण्डू, एग्जिमा दद्रु तथा रूक्षा पिडिकाएँ आदि जैसे 'सोरियासिस' भी कहते हैं सम्मिलित हैं। बाहरी लेप आदि औषधियां केवल सहायक मात्र हैं परन्तु भीतरी औषधियों का प्रयोग ही रोग निर्मूल कर सकने में समर्थ हैं। हमारा अनुरोध है कि व्यर्थ अपने धन को खर्च न करें। ये शारीरिक रोग हैं और इनकी चिकित्सा भी शारीरिक तत्व के अनुसार ही होनी चाहिए।

लेकिन सबसे बड़ा विष शरीर के भीतर मलेरिया का है जो चाहे तरुण अथवा पुराने क्यों न हो वह वर्षों तक गुप्त रूप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में छिपा रहता है। यह विष शरीर में कई रूप धारण करता है तथा कई रोगों के स्वरूप में प्रकट होता है। जिस व्यक्ति के रक्त में इस प्रकार के मलेरिया का विष हो· वह इसके प्रभाव को उदर विकार, दन्तशूल, अतिशय तथा इंफ्लूएंजा या किसी भी अन्य रोग में अनुभव करता है और जब तक इसके गुप्त प्रभाव को हटाया न जावे तब तक अच्छी से अच्छी दवाई भी लाभ नहीं देती। इसलिए इन मलेरिया ग्रस्त रोगों में सब उपयुक्त औषधियाँ बन्द करके 'आयोक्विन' देना आरम्भ कर दें। इससे वह कष्ट दूर होगा और पहिले वाली औषधियां भी सन्तोषजनक रूप से तथा शीघ्रता से कार्य करने लगेंगी।

औषध व्यवस्था (How to Prescribe) :–रोग तरुण व जोर्ण दो प्रकार के होते हैं। तरुण रोगों में रोग विशेष या लक्षणानुसार विशेष औषधि दी जाती है। जैसे ज्वर के लिए ज्वर की औषधि, अतिसार के लिये अतिसार की औषधि, श्वास के दौरे के लिए उसकी विशेष औषधि या कुछ औषधियों का मेल जो दौरे की दशा को ठीक करें तथा सूजन की स्थिति को ठीक करने उस संबंधी दवा देना चाहिए। प्रायः एक मात्रा औषधि देने से रोग दूर हो सकता है या एक अथवा दो दिन सेवन करा पर्याप्त हैं। ये साधारण रोग है। कई तरुण रोग इस प्रकार के होते हैं जो जल्दी ठीक नहीं होते। उनकी निर्दिष्ट अवधि होती है और वह रोगी की प्रतिरोधक शक्ति को क्षीण कर देते हैं जैसे दीर्घकाल स्थाई ज्वर-टाइफाइड, न्यूमोनिया, श्वासनली प्रदाह इत्यादि। ऐसी दशा में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार की औषधियों की आवश्यकता होती है। प्रत्यक्ष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औषधि रोग के लिए तथा अप्रत्यक्ष औषध जीवनी शक्ति की रक्षम के लिये, और इन दोनों के साथ-साथ प्रयोग करने से अपेक्षाकृत शीघ्र आरोग्य प्राप्त होता है। पुराने रोगों में रोगी की शारीरिक और मानसिक अवस्था का पूर्णतया ध्यान रखना पड़ता है।

आधुनिक वैद्यशास्त्र ने माना है कि हम जो आहार खाते है वह सब रोगों के लिए एक प्राकृतिक औषधि है। इसी प्रकार अल्वो-सांग भी हमारे साधारण आहार को मुख्य आहार बनाता है और यह आरोग्य के लिए बहुत अच्छी प्राकृतिक औषध है। अल्बो-सांग बीमारी के समय में देह की और जीवन क्रियाओं को निरोधक शक्ति प्रदान करता है और बीमारी से बचाता है।

इसलिए हम संक्षिप्त में इसके यौगिक मिश्रणों के बारे में विवरण देते हैं।

१) अल्वो-सांग आहार को बहुत शक्तियुक्त बनाता हैं।

२) यौगिक को पाचन क्रिया में सहायता पहुंचाते हैं। चनियम-को, डायसिन, गैस्ट्रोमीन, हरबल-विटर्स, काईनोटीमाइन मेंग्नाइन, पिपारिड, सालफास, स्पोलेक्स, टेक्साइन।

३) यौगिक जो स्नायुमंडल कों क्रियाओं में सहायता पहुँचाते हैं, अगर-को, अमीग्लिया, डेसिल, हार्मोपिरिन, नर्वोप्लेक्स, नेवोस्स सेन्झाइन तथा वाइटल एसेन्स।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४) अल्फो-सांग, हेमो-प्लेक्स, आयोविन, आयोक्वीन, मेडिटब, रासजेन्ट, हरबोसल्फ, तथा सल्फासिन रक्त शोधक हैं।

५) यौगिक जो श्वासोश्वावास क्रिया में सहायता देता है। बेंन्झोमोन्स, डॉन्जिन, डेस्मा, प्लूजन, हार्मोपिरिन, काफलीन, मेडिटब ।

६) योगिक जो मूत्र क्रिया में सहायता करती है— नेवोस्स, स्पोलेक्स, तुराई-को ।

७) यौगिक जो याता-यात अर्थात् रक्त प्रसरण की क्रियाओं में सहायता करती है । अमीग्लिया, अराटिनम् ग्रेन्डोको ।

विविध औषधियों का विवरण हमने वर्ण माला के क्रमानुसार किया है न को उसके आवश्यकता को समझकर ।

इन दवाइयों की आवश्यकता का विवरण हमने चिकित्स-प्रकरण में समझाया है अतः इस भाग के विषयों में सारांश रूप को इस प्रकार पढ सकते हैं ।

१) तरुण रोगों में एक प्रधान औषध अथवा लक्षणानुसार मिश्रित औषधियाँ रोग को दूर कर देती हैं ।

२) तीव्र रोग और शरीर को दुर्बल कर देने वाले रोगों में शारीरिक पोषण, पाचन शक्ति व स्नायुमण्डल की ओर विशे ध्यान देना चाहिए ।

३) रोग की प्रत्यक्ष औषधि चाहे एक निर्धारित करें, परन्तु वह तब ठीक कार्य करती है जब रोगी को जीवनी शक्ति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी उसमें सहायक हो। इसीलिए चिकित्सा में रोगी के पोषण की दशा में ध्यान देना आवश्यक है।

(४) अन्तिम बात यह है कि यदि एक से अधिक औषधियों को एक साथ ठीक रीति से मिलाया जावे तो वे परस्पर एक-दूसरे के गुणों को बढ़ाती है, और प्रायः इस प्रकार का मिश्रण ही चिकित्सा में शीघ्र गति से रोग को दूर कर देता है।

औषधि कैसे दी जावें (Dispensing) ;—चूर्ण रूप की औषधियों का मिश्रण बना कर देना सुविधाजनक हैं। फिर भी चूर्ण और टिकिया बीच-बीच में दी जा सकती हैं। शिशु के लिए ½ टिकिया से आधी टिकिया तक बच्चों के लिए १ से २ टिकियां, तथा बड़ों के लिए २ से ४ टिकियों तक, चार औंस जल के घोल कर उसकी ४ मात्रा बना लेनी चाहिए। दृष्टांत-पाचन शक्ति के विकारों में वयस्क रोगी के लिए सॉलफॉस २ से ३ टिकियाँ जल औंस, एक औंस मात्रा हर तीन घंटे बाद देवें। इसी प्रकार मलेरिया ज्वर में दो टिकियाँ आयोक्विन जल ४ औंस, मात्रा आधा औंस हर एक से तीन घंटे के अंतर से दें। आयु और रोग की दशानुसार मात्रा नियमित करें। आवश्यकतानुसार चूर्ण कर मिश्रण बनाया जा सकता है।

उपयुक्त दवाइयों का मिश्रण करना भी एक कला है और प्रत्येक रोगी की स्थिति के अनुसार मिश्रण करें। यदि किसी रोगी को ज्वर, अतिसार और अत्यन्त दुर्बलता हो तो स्वभावतः ही प्रथम ध्यान देने योग्य अतिसार होगा, और दूसरे दरजे पर दुर्बलता और अन्त में ज्वर। इसलिए योग-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार होगा, डायसिन १ टिकिया, वाइटल एसेन्स १ टिकिया तथा फ्लूजन १/२ टिकिया अर्थात् सब मिलाकर ४ औंस जल में घोल लेना चाहिए और आधा से एक औंस मात्रा १ से ४ घंटे के अंतर से देना चाहिए। इसी प्रकार मान लो यदि ज्वर तेज है और साथ में अतिसार है तो मुख्य औंषधि फेनोकैल्साइन (या डेसिल) और थोड़ी मात्रा में डायसिन या सॉलफॉस। अपने अनुभव के अनुसार इस प्रकार के मिश्रण बनाकर तैयार भी रखे जा सकते हैं। औषधियों को उचित अनुपात में मिलाकर अच्छी प्रकार खरल करके अथवा पन्द्रह बीस बार तारों की बारीक छलनी से छानकर शीतलों में भरकर लेबिल लगाकर रख देना चाहिए। एक क्रिश्चियन पादरी महोदय गाँव वालों की चिकित्सा के लिए धर्मार्थ औषधालय चला रहे हैं और मुख्य रूप हमारी 'जन औषध सेवा' विभाग की आठ औषधियों का ही प्रयोग कर रहे हैं। एक बार स्थानीय सरकारी डाक्टर ने औषधालय देखने की इच्छा प्रकट की। जब उसे एक छोटे से कमरे में छोटी सी अलमारी के अन्दर थोडी सी दवाइयां शुद्धता के साथ रखी मिलीं तो अत्यन्त आश्चर्य से उसने कहा कि "क्या आप इस छोटे से औषधालय से इतनी बडी सेवा कर रहे हैं ?"

)——(

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्णमाला के क्रमानुसार निर्धारित चिकित्सा

अर्द्ध विभेदक (Migraine) :—इसे आधा सीसी, पैथिक शिरशूल इत्यादि नामों से पुकारते हैं। दर्द का दौरा आरम्भ होते ही पैनीकैल्सान और वाइटल एसेन्स की बडी मात्रा गरम जल में घोल कर जल्दी जल्दी अर्थात् कम अंतर सेना चाहिए। डेसिल १ से २ गोली हर तीन घंटे के पश्चात् और माथे पर रब्जान लगाना चाहिए। रोग की तीव्र दशा में रोगी को अंधेरे कमरे में लिटा रखना चाहिए। आक्रमण से पूर्व अमिग्लिया की एक बड़ी मात्रा देने से दौरा रुकने में सहायक है।

दौरे के बीच के काल में वाइटल एसेन्स १ टिकिया और गैस्ट्रोमोन १/२ टिकिया में दिन में तीन बार दे। नर्वोप्लैक्स भी सहायक औषधि है। बहुत पुराने रोगियों में हर्बल-बिटर्स का नियमित रूप से सेवन विशेष लाभदायक होता है। पाचन क्रिया और कोष्ट बद्धता की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। शारीरिक और मानसिक अधिक परिश्रम न करना चाहिए। साथ ही स्निग्ध आहार या कोई भी ऐसी वस्तु जिसके सेवन से दौरा पैदा होता हो उसे सेवन न किया जावे। नेत्रों में विकृति रहने पर ऐनक लगाना चाहिए।

लक्षण :—आधा सीसी एक प्रकार की सिर की पीडा है, जिसमें नजर को खराबी, जी मतलाना या वमन भी रहता है। इसमें असह्य सिर पीडा के दौरें प्रायः हुआ करते हैं। कभी-कभी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर के एक ओर कनपटी पर हुआ करती है परन्तु बाद में दोनों ओर फैल जाती है कभी-कभी आराम होने से पहले दृष्टि खराब हो जाती है या संज्ञा शक्ति विकृत हो जाती है अथवा कुछ कमजोर-सी मालूम होती है या कभी-कभी रोगी ठीक भी अनुभाव करता है। बहुत से लोग जो इससे पीडित होते हैं, अनुभव करते हैं कि यदि उन्हें नींद आ जावे तो जगाने पर यह पीड़ा जाती रहती है। दौरे भिन्न-भिन्न अन्तर से होते हैं।

अर्श (Piles) :—अधिकांश रोगियों को स्पोलेक्स के प्रयोग से तुरन्त लाभ होता है। और धीरे-धीरे रोग नष्ट हो जाता है। पाचन शक्ति को ठीक रखा जावे और अधिक न खाया जावे लेकिन पानी खूब पीते रहना चाहिए। कोष्ट वद्धता तथा उस संबंधी सभी विकार अर्श रोग के कारण ही होते हैं। मलत्याग के समय बल देने पर भी यह हो सकता है।

जब खून आ रहा हो तो दिन में दो बार 'चिनियम-को' देना चाहिए। सोते समय तथा मलत्याग के पश्चात् अंगुली से रिपेन्टो मल्हम लगाना चाहिये। इससे वेदना शान्त होती है और रक्त बन्द हो जाता हैं। हरबोंसल्फ देने से भी वेदना और जलन शान्त होती है और मस्सों में रक्त आना भी बन्द हो जाता है।

बाह्य अर्श :—गुदा के चारों ओर छोटे-छोटे कठोर मस्से त्वचा की सलवटों में हो जाते हैं, उनके मध्य में फूली हुई शिराओं रक्त जम जाये तो मस्से सूज जाते हैं, स्पर्श सहन नहीं होता और बहुत दर्द होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभ्यान्तरिक अर्श :–गुदा के अन्तर की तरफ होते हैं। जब वह बाहर निकल आते हैं तो असह्य दर्द होता है। खून भी रिसने लगता है और हालत खराब हो जाती है। खून की कमी होकर पाण्डु भी हो जाता है।

आकस्मिक एवं संकट रोग (Sudden & Emergency Diseases) :–अचानक उत्पन्न होने वाले रोगों में चिनियम-को का व्यवहार करना चाहिए। इन रोगों से हमारा अभिप्राय यह है कि रोगी अकस्मात बीमार पड जाता है, उनके कोई पूर्व लक्षण या चिन्ह प्रकट नहीं होते और रोग चाहे कोई भी हो। ऐसे समय रोगियों के लिए 'काइनोटोमाइन' एक भरोसे को औषधि है। हमारे चिकित्सा बक्स की सेवन विधि पुस्तक में हमने औषधि नं. ७ का निरूपण आकस्मिक रोगों के लिए निर्दिष्ट किया है। इसके विषय में अनेक संरक्षकों द्वारा अच्छी सफलता की सूचना मिली है।

आमवात ज्वर (Rheumatic Fever or Acute Rheumatism):–वह एक प्रकार की ज्वर अवस्था है जिसमें हृदय तथा सन्धि में तीव्र शोथ उत्पन्न हो जाता है। कभी-कभी आक्रमण से पूर्व गले में खरावी हो जाती है और बाप में घुटने की सन्धि में सूजन, वेदना और लाली हो जाती है। उसके बाद शेष सन्धिया आक्रांत होने लगती है और पहली संधियाँ ठीक हो जाती हैं। सन्धियों में आक्रमण के साथ तापमान में भिन्नता होती रहती है। हृदय की पेशियों के आक्रान्त होने पर प्रायः तापमान और अधिक बढ़ जाता है तथा श्वास कष्ट होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेसिल तथा हार्मोपेरीन के तीन-तीन घंटे बाद प्रयोग करने से रोग की अवधि घट जाती है। चेसाल की मालिश करके ऊपर से हल्का-सा ढक देना चाहिए। इससे सन्धियों की पीड़ा में लाभ होता है। शरीर में जहां कीटाणु जनित विष से सूजन आदि होती है उसके प्रति ध्यान देना चाहिए तथा बहुत लम्बे काल तक आराम देने की आवश्यकता होती हैं। नमी वाले मकानों में नहीं रहना चाहिए।

आमवात–गुध्रसी–कटिशूल (Rheumatism-Sciaca-Lumbago) :–डेसिल और हार्मोपेरीन इन रोगों के लिए अमोघ औषधि है। चूंकि इन रोगों के साथ वातानाडी मंडल का भी सम्बन्ध रहता है इसलिये वातानाडी मंडल पर प्रभाव डालने वाली औषधियों का भी विवेचनापूर्वक प्रयोग करना चाहिये। फेनोकेल्साइन इन रोगों की साधारण औषधि है जिसका प्रभाव आयोबीन और मैथिलियोड के मिलाने से जल्दी आराम होता है। चेसाल तथा रव्जान के प्रयोग से जल्दी आराम होता है। सूजन होने पर कभी-कभी इससे तुरन्त लाभ होता है। पाचन क्रिया तथो कोष्ठ शुद्धि का ध्यान रखना चाहिए। साधारण प्रयोग के लिए रिमोरीन एक एम. एल. (1 ML) इन्जेक्शन २४ घंटे के अन्तर से देना सुविधाजनक है।

आमाशय और अंत्रोरोग (Stomach-Intestines) :– इन विकारों का सम्बन्ध हमारी पाचन क्रिया से है, जो कि मुख में चबाने से लेकर आमाशय और अन्त्रो तक जारी रहती है। पाचन क्रिया उसे कहते हैं, जिसके द्वारा आहार रक्त में मिलने के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग्य बनता है तथा शरीर के तत्तुओं द्वारा आत्मीकृत होता है। आहार को पहले दांतों द्वारा चबाया जाता है ताकि पाचन रस उन पर क्रिया कर सके। मुख के अन्दर लार ग्रन्थियों द्वारा लार रस का स्राव होता है। लार रस से मांडदार आहर का कुछ अंशों में पाचन होता है। आमाशय के भीतर आमाशयिक पाचक स्रावों से अच्छी प्रकार मिलकर आहार के प्रोटीन का पाचन होता है। जब आमाशय स्थित आहार द्रव्य कुछ अम्बभाव को प्राप्त होते हैं तो आमाशय का बाहर द्वार खुल जाता है और आमाशय स्थित द्रव्य आगे छोटी आंतों में चले जाते हैं। छोटी आंतों में फिर पित्त, क्लोमरस तथा अन्त्र स्रावों द्वारा परिपाक होता है। इस प्रकार से परिपक्व अन्न रस को छोटी-आंतों के ग्राहक टीकाणु शोषण कर लेते हैं। जलीय भाग का अधिकांश भाग बडी आंतों द्वारा शोषण होता है।

स्वाभाविक भूख और हल्के भोजन द्वारा भी परिपाक क्रिया में सहायता मिलती है। अधिक खाना त्याग दें, अच्छी प्रकार चबा कर खायें तथा खाते समय किसी प्रकार की मानसिक चिन्ता न करें। परिपाक क्रिया के सम्बन्ध में विशेष विवरण 'शारीरिक चिकित्सा' प्रकरण तथा विपरिणाम, सात्मीकरण नथा कोष्ट शुद्धि आदि शीर्षक के अंतर्गत पढें। यहां हम कुछ विशेष रोगों के सम्बन्ध में वर्णन करते हैं।

उदरशूल (Stomach-Ache) :- साधारणतया सालफास जल के साथ देना पर्याप्त है। दूसरे विकारों में सालफास, फैनो-कैल्लाइन और वाइटल एसेन्स हर चार घंटे बाद या जब अवश्यक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो देना चाहिए। आमशय में जलन में साथ दर्द हो तो मैग्नाइन दें।

मन्दाग्नि (Loss of Appetite) सालफास या हर्बल बिटर्स खाना खाने से आधा घंटा पूर्व दे। कोष्टबद्धता दूर करें। आवश्यकता होने पर अल्बो-सांग दें। उचित मात्रा में व्यायाम करें। अधिक धूम्रपान छोड़ दें और यदि वातनाडी मंडल भी आक्रांत हो तो उसकी चिकित्सा करें।

अजीर्ण (Dyspepsia) :— सालफास आधा घंटा खाने से पूर्व तथा गैस्ट्रोमोन खाने के तुरन्त बाद। आहार नियमित रखे। कब्ज दूर करें। ऐसे लोगों को, जो कि उद्योगहीन जीवन व्यतीत करते है, खाने से पूर्व कुछ तेजी से घूम लेना चाहिए। दुर्बल व्यक्तियों को अल्बो-सांग दें।

वातिका अजीर्ण (Nervous Dyspepsia) अनेक स्थलों में देखा गया है कि बहुत से आभ्यन्तर क्षत रोगी वस्तुतः वातिक अजीर्ण के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं होते एवं आहार के पूर्व वाइल एसेन्स और आहार के पश्चात गैस्ट्रोमोन देने से शीघ्र लाभ होता हैं। मैग्नाइन भी दिया जा सकता है। हल्का भोजन लेना चाहिए।

अफार (Flatulence) :—वायु के निगलने से अफारा होने के अतिरिक्त अपच, कोष्टबद्धता या अधिक खा लेना है इसके अन्य कारण है। कारण को हटा देना ही चिकित्सा है। साधारणतः भोजन से आधा घंटा पूर्व सालफास १ टिकिया भोजन के बाद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैस्ट्रोमोन १/२ किया देने से अफारा मिट जाता है। भोजन के साथ पानी नहीं पीना चाहिए।

आमयशयिक व पक्वाशयिक क्षत (Gastric & Duob-enal Ulcr) :—इसका दूसरा नाम पेपटिक क्षत है। इस रोग में आमाशय के अन्दर निरन्तर अम्लता की उत्पत्ति होती रहती है। आमाशय तथा ड्यूओडिनम की भीतर स्थलों में क्षत की उत्पत्ति हो जाती है। इसी को पेप्टिक क्षत कहते हैं। दोनों की चिकित्सा एक जैसी ही है। मैग्नाइन हर चार घंटे के बाद अथवा जब कभी वेदना हो गैस्ट्रोमोन खाने से एक घंटा पूर्व और दो घंटे बाद। पथ्य नं. ३ जब तक आवश्यकता हो देवें। रोगी पन्द्रह दिन तक बिस्तर पर ही रहे। धूम्रपान अथवा मदिरा सेवन सर्वथा निसिद्ध है। रोगी के अच्छा हो जाने के बाद भी गुरु भोजन का सेवन न करना चाहिए तथा चटनी अचार स्नेहयुक्त तली हुई वस्तुएं तथा मसालेदार खाद्य पदार्थ न देवें। ठीक हो जाने पर कीटाणु दूषित कारण की और ध्यान देकर चिकित्सा की जानी चाहिए।

आमाशय क्षत लक्षण :—कौडी प्रदेश में खाना खाने के एक से दो घंटे बाद तीव्र वेदना होती है जो कि वमन हो जाने पर शान्त होता है। वमन के साथ रक्त भी आता है पेट के ऊपर किसी विशेष स्थल पर छूने मात्रा से असह्य पीडा होती है, यहाँ तक कि बिछौने के कपडों का स्पर्श सहन नहीं होता। यह एक विशेष लक्षण है। यह स्थान प्रायः कौड़ी प्रदेश में अनुभव होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्वाशयिक क्षत लक्षण :–कौडी प्रदेश में शूल कभी-कभी अत्यन्त तीव्र और खाना खाने के ३ से ४ घंटे बाद होता हैं जब कि आमाशय खाली हो जावे। रोगी पीडा से रात्रि दो बजे जाग उठता है। भोजन कर लेने पर यह पीडा शान्त हो जाती है। यह वेदना दिन और रात में एक निश्चित समय पर होती है। नाभी के ठीक ऊपर दाहिनी ओर असह्य पीडा का स्थल होता है।

आमाशय प्रदाह या अजीर्ण (Gastritis) :– रोगी को बिस्तरे पर गरम रखो। यदि अनुपयुक्त भोजन के हेतु से ऐसा हुआ तो विरोचन द्वारा कोष्ठक शुद्ध कर लो परन्तु यह ध्यान रखो कि अपेण्डीसाइट्स रोग होने पर विवेचन न दो। रोगी को सरल पदार्थ या केवल जल थोडी मात्रा में देना चाहिये। और एक या दो टिकिया मैग्नाइन देवें। जब रोग की तीव्रता कम हो जावे तो पथ्य नं. ३ देवें।

लक्षण :–इसके साथ प्रायः आमाशय में वेदना, जी मतलाना, वमन और बाद में अतिसार हो जाता है। कदाचित तापमान बढ़कर ज्वर हो जाता है परन्तु साधारण रोगी कमजोर रहता है। वमन के साथ अधिक कफ होता है और कभी-कभी रक्त भी मिला रहता है।

अतिसार (Diarrrhoea):–कारण के अनुसार चिकित्सा करें। यह दुष्पाच्य आहार से भी हो सकता है। तीव्र आक्रमण होने पर २४ घंटे केवल जल पर रखें। औषध नं. ३ और सलाफास हर चार घंटे बाद दें। संक्रामित अतिसार में रासजेन्ट दें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ में ज्वर रहने पर हेमोप्लेक्स देना चाहिए है। बच्चों के हरें दस्तों से गैस्ट्रोमोन और विनियम-को देवें।

लक्षण :—मल पतला होकर वार-बार आता। यह अनेक रोगों में हो जाता है। आंतों की सूजन के कारण होता है। परन्तु भोजन का न पचना भी इसका कारण है। स्नायु मंडल की विकृति भी इसका कारण हो सकता है। ग्रहणी दोष, अन्त्रपूच्छ प्रदाह या तेज ज्वर के आरम्भ में भी दस्त लग जाते हैं। गीष्म ऋतु में जब कि खाने पीने की वस्तुएं जल्दी सड़ जाती हैं, तथा आंतों में शोथ हो जाता हैं अतिसार अधिक होता है। पुराने दस्त राज्यक्ष्मा अथवा क्यान्सर के द्योतक हैं।

प्रवाहिका (Dysentery) :—डायासिन हर चार घंटे बाद देवें। रोगी को बिस्तरे में आराम से गरम रखे और सरल भोजन दें। चावल चरारोट तथा जौ का पानी दें। पका हुआ केला बिना दूध की चाय पर्याप्त जल देना चाहिये। अधिक तीव्र वेग में हेमोप्लेक्स मिलाया जा सकता है। तरुण और पूरातन प्रवाहिका में सालफास उपयोगी है।

लक्षण :—साधारण प्रवाहिका में बार-बार दस्तों के साथ रक्त आता है। पेट में दर्द, ज्वर, सिर दर्द, कमजोरी तथा अधिक प्यास लगती है। वमन भी हो सकती है।

जब अतिसार कम हो जाता है तो रोगी को बिना मिर्च मसाले के सात्विक आहार देना चाहिए जिसमें प्रोटिन ज्यादा तथा चर्बी कम हो। चारों ओर की सफाई पर ध्यान देना चाहिए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग व्याप्ति को रोकना तथा उससे रक्षा पाना जरूरी है। इसके लिए आहार पदार्थों को दूषित होने से बचाना तथा सांक्रमिक रोगों को फैलाने वाले माक्खियों का नाश करना पहला कर्तव्य है।

अन्त्र पुच्छ प्रदाह (Appendicitis) :—(विशेषतया जब थाल्य क्रिया प्राप्त न हो सके) चिनियम-को और हेमोप्लेक्स के मिश्रीत प्रयोग या पर्यायक्रम से देने से ठीक हो सकता है। जब कि ज्वर ज्यादा हो सल्फासिन सहायक है। कोष्टवद्धता के लिए थोडी मात्रा जल का एनीमा दें। विरेचन का प्रयोग करें।

लक्षण और चिन्ह :—पहले नाभि के चारों ओर वेदना आरम्भ होती है। उसके बाद पेट के दाहिनी ओर निचले किनारे में स्थिर हो जाती है। वमन, सामान्य ज्वर कोष्टबद्धता अथवा अतिसार होता है। अन्त्रपुच्छ या उपान्त्र के स्थान पर कठिनता तथा छूने से दर्द होता है।

ग्रहणी (Spure) :—गैस्ट्रोमोन १ टिकिया आयोबिन १/२ टिकिया मिलाकर दिन में तीन बार देवें। पेट पर चिकनी मिट्टी की पुल्टिश बाँधने से शीघ्र आराम होता है। आहार में दूध और फलों के प्रयोग से अत्यन्त सफलता मिलती है। निशास्तावली तथा स्निग्ध वस्तुएँ वर्जित है। अंल्बो-सांग्र तथा वाइटल एसेन्स से बहुत लाभ होता है।

लक्षण :—दीर्घकाल से प्रातः पतला मल और साथ में जिव्हा और मुख पक जाते है। पेट में वायु या आफारा होता हैं और खून की कमी हो जाती है। माल पाण्डू वर्ण, परिणाम में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक झागदार और बड़ी बदबू लिए होता है। अजीर्ण और दुर्बलता हो जाती है।

अन्त्र शूल (Intestinal Colic) वेदना कम करने के लिए गरम जल की बोतल या सेंक द्वारा पेट पर उष्णता पहुंचावें। रोगी को बिछौने पर लिटावें और आराम दें। खाने को कुछ न दे। जब रोग का निदान ठीक हो जावे तो बाटल एसेन्ट तथा चिनियम-को १ टिकिया गरम जल में मिला कर दें। सालफास गरम जल में मिला कर थोड़ा-थोड़ा लेने से दर्द मिट सकता है। विरेचन द्वारा कोष्ठबद्धता दूर करें।

लक्षण :—यह आंतों में फैल जाने से तथा आमतौर से कोष्ठबद्धता, अजीर्ण या सर्दी के कारण होता है। छोटी आंतों में होने वाले दर्द के ऐंठने वाला शूल मरोड के साथ होता है। यह दर्द कौडी प्रदेश या नाभि स्थान में होता हैं। बडी आंतों का दर्द पेडू प्रदेश पर होता है। अन्त्र शूल में दबाने से आराम मिलता है। पेट हवा से फूल जाता है। कभी-कभी इसके बाद अतिसार या कोष्ठबद्धता हो जाती है।

मल विषमता (Auto-Intoxication) :—उस दशा का नाम है जब अपने ही वस्तुओं द्वारा पाचन शक्ति खराब होके मल साफ न होने तथा मल बहिष्कर-क्रिया ठीक न होने से, शरीर में विष पैदा होने लगता है। इससे स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। इस अवस्था में सिर दर्द, चक्कर आना, अफारा और अजीर्ण, पांड़ु, मांस पेशियों में पीडा, त्वचा के विकार शारीरिक व

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक गिरावट, घबहराट और बेचैनी होती हैं। खाने के बाद गैस्ट्रोमोन और रात्रि भोजन से दो घंटे पूर्व स्पोलैक्स देवें। किसी-किसी रोग में वाइटल एसेन्स की भी आवश्यकता होती है।

क्रिमि (Worms) :— सॉल-फांस से क्रिमि रोग रुकता है और शान्त भी होता है। अनेक रोगों क्रिमि उपद्रव स्वरूप बन जाते हैं। हमने इसे श्वास नली प्रदाह, ब्रांको-न्यूमोनिया तथा आमाशयिक ज्वर आदि में पाया है। कोई भी रोग हो यदि क्रिमि रोग के लक्षण साथ मिले तो पिपारिड एक या दो मात्रा लेने से अत्युत्तम परिणाम दिखाई देते हैं।

लक्षण :-क्रमि रोग के मुख्य लक्षण यह है :—स्नायुविक विकार जैसे चिड़चिड़ापन, दान्त किटकिटाना, नाक रगडना इत्यादि। बच्चा अकारण ही रोता चिल्लाता है। चिड़चिड़ा हो जाता है, पेट फूलता है, रक्तहीनता हो जाती है, भूख कम हो जाती है तथा हल्का ज्वर रहता है।

इफ्लूएंजा (Influenza) :— मुख्य औषधि इसकी फ्लूजन है। इसके साथ फैनोकेल्साइन या डेसिल भी तीव्र दर्द दूर करने के लिए मिलाये जा सकते हैं। यदि प्रदाह अवस्था फेंफड़ों तक पहुंच जावे तो हार्मोपिरिन दिया जाता है। हल्का भोजन, अलोसाँग और बिस्तरे पर विश्राम आवश्यक हैं। रोगोत्तर कमजोरी आदि अच्छी तरह दूर हो जाने पर ही रोगी कामकाज में लगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्षण :—अचानक रोगी के सिर में तेज दर्द हो जाता है तथा कटि प्रदेश और अंगों में वेदना कम हो जाती है। तापमान तेजी के साथ बढ़ता है। और मांस पेशियों और संधियों में पीड़ा, बेचैनी तथा दुर्बलता अनुभव होती है। तापमान आमतौर से तीसरे-चौथे रोज गिर जाता है। परन्तु पीड़ा और दुर्बलता कुछ रहती है। आवश्यक विश्राम नहीं लिया जाय तो रोगी को पुनरावृत्ति हो सकती है।

सिर में ठंड लग जाने या जुकाम का इलाज भी वहीं करें। जो इन्फ्लूएंजा का हैं। माथे पर रब्जात मलने से सिरदर्द में आराम मिलता है। जबकि जुकाम होने के लक्षण हो थोड़ा सा रब्जान नथुनो में लगा दें। इससे आक्रमण रुक जाता है।

बार-बार जुकाम होने का कारण आमतौर से जीवन-शक्ति कीं कमी, पाचन शक्ति की दुर्बलता, पोषण की कमी तथा शुद्ध वायु का अभाव होता हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आयोबीन और अल्बोसांग को देने से जुकाम बार-बार होने की प्रवृत्ति रुक जाती है और प्रतिरोधक शक्ति की वृद्धि होती है। ज्यादा लोगों से भरे हुए तथा अशुद्ध वायु से युक्त कमरे में न ठहरें।

औपसर्गिक रोग (Veneral Diseases) :—यह लज्जाकर रोग है और भयानक भी है इससे न केवल रोगी ही तबाह होता है अपितु उसके निर्दोष वंशज भी दुष्परिणाम भोगते हैं। यह भयानक रोग इस बात का प्रमाद स्थापित करते हैं कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव के हृदय पर नैतिक चरित्र की एक छाप सद्भव से है। नागरिक व अपराधी कानून मनुष्य को बुरे कामों से दूर रखने में समर्थ से हैं। परन्तु केवल मनुष्य का नैतिक चरित्र ही उसे पापों से दूर रखने और नेक काम करने में सहायक होता है।

सुजाक (Gonorrhoea) :—क्रिमिनाशक औषधियों की चिकित्सा इसके लिए लाभदायक है। रोग के तीव्र लक्षणों में रोगी को बिछौने पर लिटाये और केवल तरल भोजन दें। पेशाब के समय जलन और पीप आने पर होमोप्लेक्स ३ ग्रेन हर चार घंटे पश्चात् देना चाहिए। स्पोलैक्स १ चम्मच पर्याप्त जल में दो या तीन बार दें। इससे तरुण अवस्था शीघ्र दूर होती है। मैग्नाइन पेशाब को क्षारीय बनाती तथा वेदना दूर करती है, इससे यह भी सहायक रूप में प्रयोग की जा सकती है।

बहुत-सी दशाओं में यही चिकित्सा पर्याप्त है, परन्तु केवल पीप बन्द हो जाना ही आरोग्य नहीं समझ लेना चाहिए। रोग सारे शरीर को दूषित कर देता है और आयोविन १ टिकिया प्रातः और सायं निरंतर एक या दो वर्ष तक सेवन करना चाहिए। अल्वोसांग भी रोग निवारण करने में सहायक है। रोग के परवर्ति उपद्रवों को दूर करने के लिए यह आवश्यक है। इस भयानक रोग का यह कटु सत्य प्रत्येक डाक्टर को स्पष्ट रूप से प्रत्येक रोगी से कह देना चाहिए। जब तक वर्षों तक यह शुद्धि का क्रम जारी नहीं रखा जावेगा, तब तक औपसर्गिक रोगों का विष शरीर के भीतर छिपा रहकर अवसर मिलते ही अनेक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपद्रव उत्पन्न कर देगा। अवसर से अभिप्राय, किसी भी कारण से शरीर में जीवनी शक्ति का कम हो जाना है।

समय पर उक्त बताई विधि से चिकित्सा करें तो सुजाक रोग को रोक सकते हैं। परन्तु उपेक्षित रोगियों तथा रोग की तीव्र स्थिति में दूसरी दवाओं के सेवन से प्रकट रोग लक्षणों का निर्मूलन कर सकते हैं। जब सुजाक रोग शरीर में जीर्ण हो जाता है तो वह ग्लीट (Gleet) का रूप धारण कर लेता है। अथवा बड़ी बुरी तरह शरीर में बैठ जाता है। इस स्थिति में सुबह और शाम को 'आयोविन' का सेवन आवश्यकता होता हैं। 'ब्रह्मडाइन दोपहर व सोते समय में देना चाहिए। इसको तीव्र स्थिति में हल्के भोजन में आधा चमच अल्कोसांग मिलाकर दें। ये साधारण नियम हैं। प्रत्येक रोगी की स्थिति के अनुसार चिकित्सा करनी पडती है।

स्त्रियों में गनेरिया होने पर बाह्य चिकित्सा की अधिक आवश्यकता हैं। मैथिलियोंड का डूशिग दिन में दो बार करें। खाने के लिए प्रातः और सायं हेमोप्लेक्स तथा आयोवीन एक टिकिया दोपहर और सोते समय देवे। जैसे-जैसे अवस्था सुधरती जावे दवाई की मात्रा कम करते जावे तथा अन्तर बढाते जावें। शुद्धि की तरीका पुरुष के समान ही है तथा स्थानीय सफाई का विशेष ध्यान रखें।

लक्षण और चिन्ह :—मूत्रनाली में शोथ होकर फूल जाती है। पेशाब करते समय जलन होती है। पहले पतला स्राव होता है फिर गाढा हो जाता है। कीटाणु रक्त में प्रविष्ट होकर रक्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को विषाक्त कर देता है या कभी-कभी संधियों मांस पेशियों में दर्द पैदा होता है। स्त्रियों में कीटाणु विष गर्भाशय का डिंब प्रणाली में पहुँच जाता है।

सिफलिस (Syphilis) :—इसकी तीव्र स्थिति में क्रिमि-नाशक औषधियों का सेवन लाभदायक है। रक्त परीक्षा का 'निगेटिव रिपोर्ट' मिले तब तक चिकित्सा जरूरी रखें।

इस रोग की पुरानी स्थिति में विशेष औषधि आयोबिन है जो मुख द्वारा सेवन की जा सकती है। इंजेक्शन द्वारा आयोबिन चार दिन के अन्तर से सप्ताह में दो बार दिया जा सकता हैं। घाव दशा में हेमोप्लेक्स का मल्हम लगावें और खाने को भी १ से २ ग्रेन दिन में तीन व चार बार दें। जब उग्र लक्षण दूर हो जावे तो कुछ समय प्रतिदिन दो मात्रा चालू रखें। तब रक्त शुद्धि के लिए आयोविन का सेवन करें। आयोविन न केवल इसकी तीव्र स्थिति में ही गुणकारी है अपितु पुराने व गुप्त रूप से छिपा हो तथा जन्म से ही प्राप्त हो लाभदायक है। साथ-साथ सिफलिस की दूसरी विस्फोट अवथा में होने वाले त्वचा के फफोलों की चिकित्सा के लिए भी यह उत्तम औषधि है।

चिन्ह और लक्षण :—जिस स्थान पर रोग का कीटाणु प्रवेश करता है वहाँ एक खुजलाने वाला लाल निशान पैदा हो जाता है जो कि फैल कर सख्त हो जाता है। उसके आस पास की ग्रन्थियाँ भी बढ़ जाती हैं तथा कठोर हो जाती है परन्तु सुजती नहीं होती। यह इस रोग की प्रथमावस्था है। पाँच से आठ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्ताह बाद द्वितीयावस्था आरम्भ होती है। इसमें प्रायः सारे शरीर पर फुन्सियां चकते से निकल आते हैं, लसीका ग्रन्थियां बढ़ जाती हैं, गला पक जाता है सामान्य ज्वर, बेचैनी, बालों का गिरना तथा पाण्डु इत्यादि हो जाता हैं। तीसरी अवस्था में शरीर के गम्भीर भागों में पुरानी सूजन क्षय आरम्भ हो जाता है। वातनाडी मंडल भी आक्रांत हो सकता है।

कण्ठ रोग (Throat) :—गले के रोगों का सम्बन्ध प्रायः पाचन क्रिया की विकृति से होता है। जब गले में खुजली-सी मचती हो या सूजन हो तो एन्ट्रोप्स के गरारे करे। एक चम्मच दिन में दो या तीन बार पर्याप्त है। मेथलीयोड के गरारे भी लाभदायक है। खाने के लिए फ्लूजन अथवा डेसिल दें। आतशक से गला खराब हो तो आयोबिन उत्तम है।

टाँसिल बढ़ना (Tonsillitis) :—इसके लिए आयोबिन दिन में दो बार और अल्बोसांग दिन में एक बार कई महिनों तक टाँसिल कम हो जाने पर भी चालू रखे। यदि सूजन दर्द इत्यादि हो तो फैनोकैल्साइन और हेमोप्लेक्स दिन में तीन बार दें। साथ में मैथिलियोड या एन्ट्रोप्स के गरारे करें। गरम गरारे ज्यादा लाभदायक हैं। उसके लिए गलें के बाहर और गरदन पर रव्जान के मलने से लाभ होता है।

रोग लक्षण (टांसिल बढना) :—इसमें गला पक जाता है और निगलने में दर्द होता ह। ज्वर तेज हो सकता है। गले में ग्रन्थियां बढ़ जाती हैं। जिव्हा पर गाढ़ा सफेद तह होता हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँस दुर्गंध युक्त निकलती है तथा बाहर की तरफ जबड़े के नीचे की ग्रन्थियां फूल जाती और दर्द करती है।

कान के रोग (Ear) :—कान दर्द के लिए फेनोकेलसाइन या चिनियम-को थोडीं-थोडी मात्रा हर आधा से एक घंटे के अन्तर से देंवे या और भी छोटी मात्रा में १५ से ३० मिनट के अन्तर से देते रहें। इससे अनेक वार बहुत उत्तम परिणाम मिलता है। कभी-कभी दर्द केवल वातनाडी संबंधी ही होता है। उस समय वाइटल-एसेन्स इसी प्रकार देना लाभदायक है। थोड़ा-सा एन्ट्रोप्स या चेशाल की बूंदें कानों में डालने में प्राय: दर्द होता हैं।

कर्णपूय (Ottorrhoea) :—इससे अभिप्राय कान से मवाद का बहना है। उस दशा में हेमो-प्लेक्स और फैनोकेल्साइन मुख द्वारा हर तीन घंटे बाद दें। एन्ट्रोप्स की दो तीन बूंदें दिन में दो बार कान में डाले। कान पर सेका करें। मैथिलियोड़ के गरारो से गला साफ रखें। कोष्टबद्धता न होने दें। बिस्तरे पर आराम करें।

पूराने कान बहने की चिकित्सा हीलन के प्रकरण में पूर्णतया वर्णित है। सफाई वहुत जरूरी है। यदि हीलन कान में जमकर कठोर हो जावे तो एन्ट्रोप्स रुई में लगाकर साफ करें। स्वास्थ्य की ओर ध्यान रखना आवश्यक है। अल्ब्रो-साँग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के लिए सेवन करें।

(9)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामला (Jaundice) :—इस अवस्था में काइनोटोमाइन १ टिकिया बड़ों के लिए तीन बार तथा बच्चों को उम्र के अनुसार देवे। आरम्भ में एक मात्रा हर्बल-विटर्स रात्रि में सोते समय देवे। मैग्नाइन दिन में एक या दो बार भोजन के आधा घंटा पूर्व दें। अधिक मात्रा में जल अथवा तरल पदार्थ रोगी को देना चाहिए। वसायुक्त (चर्बीदार) आहार वर्जित हैं। निशास्ता वाला आहार भी तरल रूप में दे दूध दिन में तीन-चार बार पिलावें। प्रत्येक तरल खाद्य के साथ ३ में ५ ग्रेन अल्वो-सांग मिलाकार दे। साधारण कामला जो कि प्रदाह जनित होता है, २ से ३ सप्ताह में ठीक हो जाता है।

लक्षण :—सवेरे उठते ही रोगी कि तबीयत गिरी-सी लगती है। भूख नहीं लगती और सिरदर्द होता है। शरीर की त्वचा तथा आँख का सफेद भाग पीला हो जाता है। मल मिट्टी के रंग का होता है तथा मूत्र का रंग गहरा पीला होता है। उदर विकार रहता है अर्थात् या तो कब्ज होती है या दस्त हो जाती हैं। नाडी मन्द हो है तथा तन्द्री भाव रहता है। आरम्भ में कुछ ज्वर रह सकता है। रोगी यकृत स्थान में बेचैनी या भार-सा अनुभव होने की शिकायत करता है।

गूद भ्रन्श (Prolspus Ani) :—इसमें रिपांटो लगा कर हलके से अन्तर कर दो। मल हो जाने के पश्चात् और सोते समय रिपान्टा लगाओ स्पोलैक्स एक या दो बार दिन में खानें को दो। गुद विकार में दिन में दो बार रिपांटो लगाओ। कब्ज न होने दें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थी रोग (Glands) :—ग्रन्थियों के सूजन में सल्फासिन और हार्मोपिरीन दें। रब्जान की मालिश और सेकाई करे। यदि इसमें पीप आवें तो विद्रधि के समान चिकित्सा करें। चीरने की भी आवश्यकता हो सकती है। घाव पर रिपांटो लवाकर पट्टी बांधे और यदि ठीक होने में देर लगे तो थोड़ा हीलन छिड़क दिया करें। राजयक्ष्माजन्य ग्रन्थियों (कण्ठमाल) के लिए आयोडिन और अलो-सांग देवे, खास कर दूध के साथ। विश्राम, ताजी हवा, सूरज की रोशनी और उत्तम आहार आवश्यक है।

यक्ष्म ग्रन्थियों के लक्षण (T. B. Glands) :—बालक पाण्डु वर्ण तथा दुर्बल दिखाई देता है। बार-बार जुकाम की शिकायत रहती है। शरीर का वजन कम हो जाता है। रोग पहले एक जगह ग्रन्थियों में होता है। धीरे-धीरे यह बढ़ता रहता है और अन्त में एक साथ बढ़ कर कठोर ग्रन्थि के रूप में परिणीत हो जाता है।

चिप्प रोग (Whitlow) :—नखव्रण के लिए सल्फासिन तथा दिन में दो बार सेंकन करके एन्ट्रोप्स की पट्टी लगावें। हाथ को कपड़े द्वारा गले में लटका कर रखें जिसमें रक्त अधिक जमा न हो। इससे सामान्य चिप्प रोग ठीक हो जाता है जो कि अंगुली की बाहरी त्वचा के नीचे एक प्रकार की थोथ होती है। बहुत गहरी या सांधातिक होने पर सर्जन द्वारा सलाह लेंवे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाती और फेफड़ों के रोग(Chest & Lung Disesases):- आजकल ये रोग अनेक घरों की सूख और शान्ति को नष्ट कर रहे हैं। जीवनी शक्ति की वृद्धि ही इन रोगों से बचाव का सर्व प्रथम उपाय है।

श्वास नाली प्रदाह(Bronhitis) :– काफलीन और हार्मोपिरीन चार घंटे के अन्तर से देना चाहिए। उच्च तापमान होने पर इनके साथ हेमो-प्लेक्स मिलाना चाहिये। रोगी शय्या पर पूर्ण विश्राम करे और जितना हो सके सरल खाद्य का सेवन करे। छाती और पीठ पर रब्जान या चेसाल की मालिश से शीघ्र आराम मिलता है। डाक्टरों का कहना है कि हमारे चेसाल और रब्जान की मालिश से सूजन कम करने, सेंक या शोथ पर पुल्टिस की आवश्यकता नहीं रहती। जीर्ण श्वास नाली प्रदाह रोग में मेडिर्टेब हितकर है।

लक्षण :– इस रोग में छाती के सामने वाले ऊपर के भाग में साधारण बेचैनी, भार बोझ या जकड़न-सी अनुभव होता है। पहले खांसों सूखी, दर्द के साथ होती है परन्तु बाद में तापमान बढ़ जाता है और साँस में हलकापन तथा बलगम पैदा हो जाता है। बलगम पैदा होने से दर्द कम हो जाता है। ज्वर बढ़ने के साथ सांस में तंगी तथा छाती में धड़-धड़ की आवाज आ जाती है।

प्लूरिसी (Pleurisy):–हेमो-प्लेक्स इसकी प्रधान औषधि है और हार्मोपिरीन एक अत्युत्तम सहायक औषधि है या इसके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभाव में फेनोकेल्साइन भी अच्छी उपयोगी हो सकती है। प्रातःकाल और रात को चेसाल की छाती पर मालिश करने से न केवल वेदना दूर होती है अपितु प्रदाहावस्था भी नष्ट होती है। अल्कोसांग इन रोगों में प्रयोग करने से जीवनी शक्ति को बढ़ाता है जिससे रोग नाश में शीघ्रता हो जाती है। यदि हालत खराब होकर फुफ्फुस आवरणों में पीप पड़ जावे तो शल्य चिकित्सा की आवश्यकता होती है।

लक्षण :—प्लूरिसी रोग का सूत्रपात छाती में सुई चुवने की-सी पीडा के साथ होता है जोकि सांस लेने और खांसने से बढ़ता है। कभी-कभी शीत के साथ रोग आरम्भ होता है तथा तापमान १०१ डिग्री तक पहुँच जाता है। ज्यों ही फेफड़ों के आवरण के भीतर पानी पड़ना शुरू हो जाता तो वेदना कम हो जाती है परन्तु श्वास कष्ट वसा रहता है। ज्वर तेज रहता है तथा थोड़ी खांसी भी होती हैं। यदि शीत के साथ ज्वर बार-बार चढ़ता उतरता मालूम दे तथा अधिक पसीना हो तो पीप पड़ जाने (Empyma) का सन्देह रहता है।

न्योमोनिया :—हार्मोपिरीन और मेडिटेव चार-चार घंटे के अन्तर से देना चाहिए, उच्च ताप होने पर सल्फालित देवें। छाती के आने और पीछे सवेरे और रात को चेसाल की मालिश करें। हवादार कमरों में चारपाई पर पूर्ण विश्राम करें। जब तक ज्वर न उतर जावे केवल दूध पिलावें। सांस अधिक फूलने या दुर्बलता अथवा नाड़ी की गति अनियमित होने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर ग्रेन्डी-को आवश्यक है। प्रलाप तथा बेचैनी में वाइल-एसेन्स हितकर हैं।

लक्षण :— प्रबल कम्पन के साथ ज्वर होता है। तापमान प्रायः १०३ डिग्री तक हो जाता है। छाती में या कभी-कभी पेट में दर्द हुआ करता है। सांस और नाड़ी की गति तेज हो जाती है। रोगी विस्तरे पर उठ कर बैठ जाता है, मुंह लाल पड जाता है। बेचैन-सा दिखता है। एक विशेष प्रकार की दर्द युक्त बार-बार उठती है। जससे कुछ लालो लिए हुए कफ निकलता हैं। दवर प्रबल होता है तथा प्रायः रात्रि में प्रलाप होता है।

कुकूर खांसी (Whooping Cough) :-रुग्न शिशुको ज्वर रहने पर अलग रखो और गरम तथा हवादार कमरे में विस्तरे पर आराम करने दो। यदि वमन अधिक हो तो केवल दूध ही पथ्य में देना चाहिए। इस रोग की चिकित्सा डाँजिन के प्रकरण में वर्णित है। इसके अतिरिक्त तीव्र आक्षेप दूर करने के लिए वाइटल एसेन्स दें, चेसाल की छाती पर हल्की मालिश से दौरों की संख्या तथा तीव्रता में कमी होती है। ज्वरावस्थ में फैनो-कैल्साइन या डेसिल भी दे सकते हैं। पेट के दर्द के लिए पेट पर हल्की पट्टी बाँधें।

लक्षण :— काली खांसी छूत वाला रोग है जो कि बच्चों को हुआ करता है। यह सर्दी, खोसी और बुखार के साथ आरंभ होती है। प्रथमावस्था प्रायः इसी तरह एक सप्ताह पर्यन्त रहती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है तब तक एक विशेष प्रकार की खांसी की आवाज होती है बार-बार कुत्ते के भोंकने जैसी आवाज के साथ खाँसी उठती है। और उसके बाद सांस अन्दर लेते समय एक विशेष प्रकार के 'हुफे' शब्द की-सी आवाज आती है। जल्दी-जल्दी दौरा उठता है और तब तक शाँति नहीं मिलती जब तक या तो वमन न हो जावे और या जमा हुआ श्लेष्म काफी मात्रा में बाहर न निकल जावे। दौरे का आक्रमण या तो प्रायः रात को सोने के पूर्व होता है। और भोजन करने के बाद। दौरे के समय आँखें बाहर निकल आती हैं और लाल हो जाती हैं। कभी-कभी पेट में दर्द, नाक से खून आना, आक्षेप का कभी दम घुटना भी हो सकता है।

राज्ययक्ष्मा (Consumption) : स्वस्थ्य निवास (Sanatorium) में राज्यक्ष्मा के रोगियों की अच्छी चिकित्सा हो सकती है। बीमारी की चिकित्सा करने की अपेक्षा उत्तम यह है कि उसकी रोकथाम का प्रबन्ध किया जावे। इसके लिए हम अल्बोसाँग के प्रयोग की अनुमति देते हैं। यह विशेष रूप से इस वंश नाशक रोग से शरीर की रक्षा करता है और साधारणतया सभी रोगों को रोक थाम में सहायक है। वस्तुतः यक्ष्मा को पहिली दशा में अल्बोसाँग के अतिरिक्त अन्य किसी औषधि की आवश्यकता नहीं। जब तक ज्वर बना रहे बिस्तर पर आराम करना आवश्यक है। यदि रोगी की किसी 'स्वस्थ्य निवास' में भोजन असम्भव हो तो उसे अलग कमरे में रखना चाहिए अथवा जहां सर्दी न लगे ऐसी छत वाली झोंपडी में घर के बाहर हवादार बरामदे में सोना चाहिए। यदि खांसी अधिक है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो थोडी मात्रा में मिडिटेब देवें। थूक के साथ आने पर चिनिथिम-को और वाइटल एसेन्स देंवे।

हार्मोपिरीन एक अन्य औषधि है जो ज्वर अधिक होने पर हितकर है। इसका उपयोग अकेला या मेडिटेब के साथ मिलाकर करना चाहिए। शरीर का वजन कम होने पर आयोबिन दूध साथ देंवे और स्नायु मंडल की शक्ति बढ़ाने के लिए वाइटल एसेन्स देंवे। रोग बढी हुई दशा में या जहां खाने को औषधियों से लाभ न हो वहाँ अराटिनम के एन्जेक्शन ८ दिन के अन्तर से देना चाहिए।

चिन्ह व लक्षण :—रोग की प्राथमिक दशा में रोगी कमजोरी का अनुभव करता है और जल्दी थक जाता है। उसे पसीना बढता आता है और भूख कम हो जाती है। हल्की-सी परन्तु हठी प्रकार की खांसी बनी रहती है। रक्तहीनता मुख्य लक्षण है। ज्यों-ज्यों रोग बढता है, प्रतिदिन शाम को ज्वर तेज हो जाता है और थकावट के साथ-साथ पसीना ज्यादा लगता है। खांसी अधिक कष्टदायक हो जाती है और तेज दौरे की शक्ल में आक्रमण करती है। बलगम अधिक मात्रा में पीप या खून से मिली हुई निकलता है।

ज्वर (Fevers) :—ज्वर की सामान्य औषधि फ्लूजन हैं। इसका प्रयोग ज्वरों के बढती अवस्था को रोकता है। यदि फ्लूजन द्वारा काफी समय में भी ज्वर न उतरे और ज्वर तेज हो जावे तब फैनोकेल्साइन देंवे। फैनोकैल्साइन दीर्घ स्थायी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वरों में ज्वर का ताप कम होने पर भी प्रयोग करना चाहिए। सूजन के कारण होने वाले ज्वरों में, श्वासनली प्रदाह 'न्यूमोनिया' प्लूरिसी या छूत वाले रोगी के ज्वर में सल्फासिन और हार्मोपिरीन का प्रयोग करें। आमवातिक ज्वरों में डेसिल और फैनोकैल्साइन अधिक अच्छा है। शिशुओं, बालकों के लिए जब साधारण औषधियों से लाभ न हो, तब चिनियम-को या पिपारिड का व्यवहार करना चाहिए।

मलेरिया :—के लिए आयोविन दें। चेचक खसरा आदि पीड़िका युक्त ज्वरों में फैनोकैदसाइन दे तथा कनपेड़ों में हार्मोपिरीन विशेष औषधि है। बुखार हल्का तथा मुं लाल रहता हो जैसा कि राजयक्ष्मा होने वाले रोगियों में होता है, उनके लिए हार्मोपिरीन १ टिकिया तथा आयोडीन २ टिकियां मिलाकर दिन में तीन बार दें और पुष्टि के लिए अल्बो-सांग देवे। प्रसूति ज्वर में भी यही मिश्रण उपयोगी हैं। प्रसव के पश्चात् स्थनों में दूध के संचय आदि के कारण ज्वर हो तो चिनियम-को या हार्मोपिरीन प्रयोग करें। जिन रोगियों के बार-बार ज्वर होने को शिकायत रहती हो, या प्रतिदिन हल्का-सा ज्वर भास हो जाता हो अथवा निरन्तर हल्का ज्वर बना रहे तो ऐसे अवसर पर सर्व प्रथम चिकित्सा का सिद्धान्त यह है कि अल्बो-सांग द्वारा जीवनी शक्ति की बढाया जावे फिर आयोक्विन, सल्फासिन या हार्मोपिरीन में कोई भी देवे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलेरिया ज्वर की तीन अवस्थायें होती हैं—शीतावस्था, तापावस्था तथा घर्मावस्था। शीतावस्था १५ मिनिट से २ घंटे तक रहती है। रोगी को ज्वर होते समय कम्पन होने के बाद सिर दर्द, पीठ तथा शरीर के अंगों में दर्द होता है। रोगी का सारा शरीर कांपता है, दाँत बजते हैं और तीव्र सर्दी लगती हैं। तापावस्था प्रायः ४ घंटे तक रहती है। सारा शरीर गरम होता है। कभी-कभी मूर्च्छा या प्रलाप होता है। घर्मावस्था १ से २ घण्टे तक रहती है। सारा शरीर पसीने से भीग जाता हैं। तापमान कम हो जाता है। बेचैनी और दर्द आदि सब जाते रहते हैं। मलेरिया कीटाणु के भेदानुसार ज्वर प्रतिदिन, हर तीसरे दिन या चौथे दिन होता है।

रोमान्तिक (Measles):— रोगी को पहले ज्वर के साथ सर्दी, खाँसी और नाक व आंखों से पानी बहने की तकलीफ होती है। सिर दर्द व पैत्तिक लक्षण प्रायः होते हैं। चौथे दिन जुड़े हुए कृष्णाभ छोटे-छोटे दाने पहले माथे पर फिर सारे शरीर पर दिखाई देते हैं। गले में प्रदाह होकर भेद होता है तथा श्वासनली प्रदाह और खांसी के साथ घर्र-घर्र की आवाज होती है।

लघु मसरिका (Chiken Pox) :—कुछ घण्टों का ज्वर व कमजोरी होने के पश्चात् चेहरे, छाती, पीठ व कभी-कभी शरीर के दूसरे अंगों पर भी लाल रंग के दाने से निकल आते हैं। थोडे समय पश्चात् ये दाने छालों में परिवर्तित हो जाते हैं। २४ घण्टों के बाद कुछ में पीप पड जाया करती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वचा रोग (Skin Affections) :–चिकित्सा का सिद्धान्त है कि जो बीमारियां शरीर के ऊपर भाग पर नजर आती है, वे वास्तव में आन्तरिक विकारों का परिणाम होती है। इसलिए आभ्यान्तरिक औषध द्वारा ही चिकित्सा होनी चाहिए। परन्तु बाह्य चिकित्सा को भी आवश्यकता होती है। होम्योपैथी जो पहले बाहरी चिकित्सा के विरुद्ध थे अब इसकी सहायता को आवश्यक स्वीकार करते हैं। आयोबिन उत्तम रक्त शोधक हैं, अल्बो-सांग साधारणतया रक्त को पुष्ट करता हैं बाह्य प्रयोग द्वारा रिपांटो त्वचा की रूक्षता को दूर करता है अपितु पुराने घावों के निशान और एग्जिमा के क्षत चिन्हों को ठीक करता है। अभी हाल की परीक्षाओं से जाना गया है कि आयोबिन के इंजेक्शन त्वचा रोगों में बहुत उत्तम लाभ पहुंचाते हैं।

एग्जिमा :-(अकौत) के लिए सबसे अच्छी दवा आयोवीन हैं और बाह्य प्रयोग के लिए रिपेन्टों का त्वचा पर अच्छी प्रकार मलना चाहिए। यदि रिपेन्टों से लाभ न हो तो स्किनमेन्ट का प्रयोग करें। यदि अकौता में शोथ और पीप हो तो हीलिंगडस्ट और मैथिलियोड को किसी तेल, मक्खन या घी में मिलाकर मल्हम बना लें और सुबह व सोते समय लगावें तो शीघ्र आराम मिलता है। क्रमशः १ भाग हर्बोसल्फ में ५ भाग रिपेन्टो मिलाकर मल्हम बनवावें और उसे घाव पर लगाना अच्छा है।

शीत पित्त :–के रोगी के भोजन के साथ अल्बो-सांग तथा काइनोटोमाइन २ टिकियाँ दिन में या तीन बार देना पर्याप्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है यदि वह असफल रहे तो हेमोप्लेक्स ३ ग्रेन और शहद १/२ चम्मच आधा प्याला गरम जल में मिला कर प्रातः सायं तीन-दिन तक पीना चाहिए। पाचन क्रिया तथा कोष्ठ शुद्धि का ध्यान रखना चाहिए। टैक्साइन या स्कोलैक्स की एक मात्रा पर्याप्त है।

पुरानी या बार-बार होने वाली शीतपित्त पर मूल-क्षोभ-कारक हेतु का पता लगाना चाहिए और उसे दूर करना चाहिए। अल्डे या मछली इत्यादि खाने से प्रायः इस रोग का आक्रमण हो जाता है। रोगों के साधारण स्वास्थ्य को सुधारना चाहिए और कीटाणु युक्त स्थान का पता लगाना चाहिए। अधिक शारीरिक या मानसिक श्रम से रोगी को बचाना चाहिए।

व्रण और घाव :—के लिए रिपेन्टो लगावें। फोडे को बिठाने के लिए रसजेन्ट की एक मात्रा देवें। जब तक आवश्यक न हो दूसरी मात्रा न देंवे। फोडे को बहाने के लिए रसजेन्ड हर तोसरे घंटे बाद देवे। व्रण को भरने के लिए रिपेन्टों या हर्बोसल्फ देवे। यदि ज्वर भी साथ हो तो सल्फासिन इंजेक्शन द्वारा देना चाहिए। गन्दे जख्म और घाव इत्यादि को धोने के लिए ५ ग्रेन मैथिलियोड एक प्याला गरम जल में मिलाकर प्रयोग करें। जब घाव भर जावे पर सूखे नहीं तो हीलन छिड़को, इससे अतिशीघ्र सूखेगा। त्वचा में कीटाणु सथोग रहने पर ३ ग्रेन हेमोप्लेक्स मुख द्वारा दिन में तीन बार देवे।

खुजली (Itch-Scabies) :—हर्बोसल्फ वैसलीन या रिपेन्टो में १ अनुपात १० के अनुपात में मिलाकर सोते समय लगावें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अगली सुबह धो डालें। पहिनने के कपडे और बिछौने की चादर इत्यादि बदल देवे। सफाई और स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

दद्र पैरों की खुजली, चम्बल और अन्य कीटाणु जन्य त्वचा रोगों में रात को स्किन्मेन्ट सोते समय लगावें और सवेरे धो डाले।

लक्षण व चिन्ह :—अकौता से अभिप्राय है त्वचा का शोथ। इसमें त्वचा पहले लाल होती है बाद में छाले या दाग जैसा हो जाते हैं। फिर इन छालों में पानी-सा भर जाता है और रिसता रहता है। यदि बाहर से कीटानु दूषित हो जावे तो पीपारिड जाती है। अन्त में जब पानी सूख जाता है, इसमें काफी खुजली चलती है और खुजलाने से अन्य कीटाणुओं का प्रवेश हो जाता है।

दाद लक्षण (Ringworm) :-यह त्वचा का रोग है जो कि शरीर के किसी भी भाग में हो सकता है। यह छोटे से निशान के तौर पर आरम्भ होता है जो कि बढ़ कर गोलाकार बन जाता है। यदि यह सिर में हो जावे तो गोलाकार चट्टे से बन जाते हैं। वहां के बाल गिर जाते हैं और बहुत थोडे पतले और छोटे रह जाते हैं। दाद का रोग दाढी, बालों तथा जांघों इत्यादि में भी होता है।

खुजली लक्षण :—एक प्रसिद्ध त्वचा का रोग हैं। इसमें विशेष कर रात्रि के समय खारिश होती है। बार-बार खुजलाने से त्वचा के ऊपर की स्तर हैर सूजन युक्त रेखाएं हो जाती हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शम्बल लक्षण (Psoriasis) :—यह त्वचा का एक पुराना रोग है जिसमें शरीर के किसी भी भाग पर चान्दी की आभायुक्त छिलकेदार चकत्ते बन जाते हैं।

शीतपित्त में त्वचा ऊपर घाफड़ से उछल जाते हैं। उनमें बड़ी खुजली मचती है। तीव्र दशा में आक्रान्त स्थान पर सूजन भी आ जाती है अथवा फफोले तक पड़ जाते हैं।

दारुण शूल (Colic) :—यह एक प्रकार का ऐंठन युक्त शूल है जो कि अन्त्र पित्त प्रणालो या मूत्रनाली के आक्षेप युक्त संकोच के फलस्वरूप होती है। पित्त प्रणाली शूल (BiliaiyColic) एक प्रकार का तीव्र शूल हैं, जो कि अश्मरी के पित्त प्रणाली के चल जाने के कारण से होता है। वृक्क शूल इसी प्रकार अश्मरी के वृक्क से मूत्राशय मार्ग में चले जाने के कारण होता है। अन्त्र शूल अनुपयोगी अथवा उत्तेजक आहार के खाने से अथवा अधिक मात्रा में विरोचन औषध के सेवन से होता है। सभी प्रकार के पेट के दारुण को सतर्कता के साथ चिकित्सा करनी पडती है।

वाईटल एसेन्स १ टिकिया और चिनियम-को १/२ टिकिया थोडे से गरम जल के साथ सेवन करना चाहिए। आवश्यकता होने पर हर तीन घंटे के पश्चात् दिया जा सकता है। पूर्ण विश्राम तथा वेदना स्थल पर सेंक करने से शीघ्र आराम मिलता है मूल कारण का पता लगाकर चिकित्सा करनी चाहिये।

नासा रोग (Nose) :—दिन में दो तीन बार एन्ट्रोप्स के कुछ बून्दे नाक में डालने से पुराने नासा रोग से मुक्ति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल जाती है। २५ वर्ष का एक युवक दो मास से भी अधिक समय से नासिका के तीव्र अन्तःप्रवाह से पीडित था और उसे खांसी की शिकायत थी जो कि रात्री को बढ़ जाती थी और रोगी को सांस लेने में कष्ट होता था। उसे डाक्टरों ने आपरेशन की राय दी। हमने एन्ट्रोप्स नाक में सुबह और शाम को एक सप्ताह तक डालने की सलाह दी जिसने वह ठीक हो गया। इसी प्रकार एन्ट्रोप्स एडिनाइड्स में (नासिका ग्रन्थियों की सूजन तथा अन्य नासिका रोगों में गुणकारी दवा है।

नेत्र रोग (Eyes) :—रसजेन्ट देवे। पीडा अधिक हो तो चिनियम-को थोडी मात्रा में बार-बार दें। फैनोकैल्साइन देने से भी लाभ होता है। रसजेन्ट को उबले पानी या भभके द्वारा उड़ाये हुए जल में घोल कर लोशन बनाने से काफी समय तक बिगडता नहीं।

पायोरिय :—यह एक प्रकार की सूजन है जो कि दान्त और मसूड़ों के सन्धि स्थल पर आती है और दान्त सिकुड जाते हैं और दांतों की जड़ दिखने लगती हैं और दान्त हिलने लगते हैं। मुँह से बदबू आती है। पायोरिया से न केवल भोजन के अच्छी प्रकार न चबाये जाने के कारण अजीर्ण रोग ही जाता है अपितु मसूडों से निकली पीप भीतर जाकर रक्त में मिल जाती है तथा स्वास्थ्य को बहुत बिगाड़ देती है।

हमारे मैडिकेटिड टूथ पाउडर के प्रयोग से पायोरिया रोग नहीं होता अपितु वह ठीक भी हो जाता है। इसे प्रातः और सोते समय प्रयोग करना चाहिए और यदि मसूडों में अधिक सूजन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो तो विशेषकर भोजन के बाद भी इसका प्रयोग करें। यदि प्रायोरिया बहुत बढ़ा हुआ न हो, जिसमें प्रायः खराव दांत निकालने नहीं पड़ते हैं, तो एन्ट्रोप्स एक अच्छी औषधि है। पाचनक्रिया तथा स्वास्थ्य की ओर ध्यान रखना चाहिए।

पाण्डु रक्तहीनता (Anaemia) :– अल्त्रो-सांग दिन में एक दो-बार दें। विशेष दुर्बलता की स्थिति में जो कि रोगी का शारीरिक वजन भी कम हो जाता है उनको आयोविन १ टिकिया दोपहर के भोजन से एक घंटा पहले तथा रात को सोते समय एक चम्मच दूध के साथ देना उत्तम है।

रक्तहीनता का मूलभूत कारण को पहचानने के वाद हो सके तो उसे ठीक करना चाहिए। पूर्ण रूप से आराम लेना तथा स्वच्छ हवा का सेवन करना अत्यन्त जरूरी है। समग्र आहार सेवन करना चाहिए। कुछ समय तक मंदाग्नि तथा कोष्ठबद्धता आदि की चिकित्सा करना जरूरी है।

लक्षण :– त्वचा ओंठ तथा आंखों के पलकों के अंदरूनी भाग आदि में पीला पन आ जाता है। भारीपन या थकावट चक्कर आना तथा श्वास क्रिया में निरोध व अधिक स्पंदन (धड़कन) हो जाते हैं। साधारणतया भूख कम हो जाती हैं तथा पाचन क्रिया शक्ति कमजोर पड़ जाती है।

पीडीका (Pimples) :–केवल रसजेन्ट १ ग्रेन मात्रा में प्रातः और सायंकाल देना पर्याप्त होता है। यदि आवश्यकता हो तो अल्त्रो-साँग दें। कोष्ठवद्धता दूर करें। विस्फाट (Boils) के लिए रसजन्ट और अल्त्रोसांग तथा भोजन के बाद हेमोप्लेक्स दें। जब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फट जावे तो रिपैन्टो में हीलन मिलाकर लगावें। तीव्र दशाओं में सल्फासिन के इंजेक्शन देना आवश्यक है।

यदि पीड़िका दर्द देने लगी तो इस प्रकार करे। :—आहार विधि के बारे में ध्यान दें। खाने में ज्यादती न हो। चरबीदार तथा तले हुए पदार्थ, आइसक्रीम, चाकोर्लेट, मिठाई या अधिक मांडीदार पदार्थ न खायें। प्रतिदिन खुली हवा में हल्का व्यायम करें।

पीड़ा और शूल (Aches and Pains) ;— भिन्न-भिन्न पीड़ाएँ विभिन्न रोग स्थितियों के लक्षण मात्र हैं तथा इनको भिन्न-भिन्न दशाओं में महसूस करते हैं। इसलिए पहले पीड़ा व व्यथा की तरफ ध्यान देना चाहिए। रोग निर्धारण के पश्चात् ही चिकित्सा वा प्रबन्ध अन्य लक्षणों के अनुसार करना चाहिए। सर्वसाधारण रोगियों में पहले फेनोंकैल्साईन दें। उग्र वेदना की दशा में डेसिल दें। हर्मोपिरीन एक विशेष औषधि है जिसका प्रभाव क्षेत्र खास है। व्यथा और शूल में प्रायः वात-नाड़ी मंडल भी आक्रान्त होता है। इसलिए वाइटल-एसेन्स देने का भी ध्यान रखें। सन्धि स्थानों की व्यथा पर रिमोरिन के इन्जेक्शन देना लाभकारी होता है। शरीर में अन्य भागों की पीडा के लिए तत् संबंधी शीर्षक में वर्णन है। मालिश के लिए रब्जान या चेसाल जो भी सुविधाजनक हो लगाना चाहिए।

पुरुष रोग (Male Complaints) :- बहुत से लोग स्वप्न दोष के लिए अनावश्यक रूप से चिन्तित रहते हैं, यद्यपि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृतिक रूप से कभी-कभी इस प्रकार होना स्वास्थ्य रक्षा के लिए आवश्यक है। यदि सप्ताह में एक बार स्वप्नदोष हो जावें तो भी जिन्ता की कोई बात नहीं है। स्वप्न दोष उन व्यक्तियों में रोग समझा जाता है जो कई वर्ष तक हस्त मैथुन करते रहे हो और अपना स्वास्थ्य नष्ट कर चुके हो। किन्तु उन व्यक्तियों को भी हताश नहीं होना चाहिये। पहली चिकित्सा यह है कि इस बुरे व्यसन को छोड़ दे। दूसरी यह है कि अतीत का विचार छोड़ दें। और तीसरी औषध यह है कि मानसिक विचारों को ऊँचा रखते हुए भविष्य पर आस्था रखें।

औषध के पक्ष में नेवोस छोटी मात्रा में रात को सोते समय केवल एक बार सेवन करें तथा अल्फो-सांग प्रातः काल एक बार दें। इसके अतिरिक्त किसी अन्य दवाई की आवश्यकता नहीं है सिवाय कब्ज की अवस्था में रात कोस्पोलैक्स दें क्योंकि कब्ज को अवश्य दूर करना चाहिये। मस्तिष्क से काम करने वालों की वात नाड़ी मंडल की सहायता के लिए वाइटल-एसेन्स देना चाहिए। यदि स्वप्नदोष अत्याधिक होता हो तो भोजन को नियमित करें तथा वाइटल-एसेन्स दो टिकियां दिन में दो बार और दो टिकियां नेवोस सोते समय लेना चाहिए। यह व्यवस्था उनके लिए भी अच्छीं है जिनके पेशाब के साथ बहुत सा फास्फेट जाता है। उक्त दोनों औषधियों को खरल करके मिश्रण बनाकर ३ से ५ ग्रेन की मात्रा दिन में दो बार देना लाभप्रद होगा। जब शुक्रमेह के साथ ध्वजभंग का भी लक्षण हो तो "सेन्जाइन" छोटी मात्रा में देते रहें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रतिशक्ति हीनता या ध्वजभंग :– यह रोग शारीरिक दुर्बलता, स्नायु दुर्बलता, और मानसिक दशाओं के कारण भी हो जाता है। शारीरिक शक्ति ठीक हो जाने यह स्वतः ठीक हो जाता है तथा अन्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं होती। स्नायुविक शक्ति कई बार केवल मानसिक दशाओं पर निर्भर करती है। इसलिए मन और स्नायु परस्पर सम्बन्धित हैं। यदि मन बलवान हो तो स्नायु मंडस का नियंत्रण सुगमता से किया जा सकता है। कठिरता तब पड़ती है, जबकि मन दुर्बल हो। इसलिए मन का सर्व प्रथम अध्ययन करना चाहिए।

जीवन में प्रत्येक वस्तु मन पर ही आश्रित है और हवारे रात केन्दों का कार्य जीवन के मानसिक दृष्टिकोण के साथ घनिश्टता से सम्बन्द है। काम वासना पशुओं के समान मधुष्य में भी स्वाभाविक है। इसका उद्देश्य सेवल सन्तति पैदा करना है और यह विवाह के द्वारा सिद्धि होती है। इसलिए विवाह के अतिरिक्त मैथुन अनुचित, अनैतिक तथा अपराध हैं। जब तक यह गम्भीरता से न जान लिया जावे, पुरुष व स्त्री अच्छा चरित्र नहीं रख सकते। इस वात की जानकारी केवल नैतिक शिक्षा द्वारा प्राप्त होती हैं जो कि बाल्यकाल से जबकि वच्चे को वुरे-भले या उचित अनुचित का भेद ज्ञात हो जावें, तव से ही आरम्भ कर देना चाहिय। इसी नैतिक शिक्षा का अभाव ही है जो कि इतनें दुःख और रोगों की वृद्धि का कारण है।

अत्याधिक काम वासना तथा अनुचित व्यवहार से न केवल रतिशक्ति हीनता ही प्राप्त होती है अपितु स्नायुविक मंडल कम-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और एवं शिथिल बन जाता तथा मानसिक शक्तियाँ कुंठित हो जाती है। इसिलिए पहले उसके कारण को रोंके। दूसरी बात यह है कि अपने मन को मजबूत बनावें। अर्थात् मानसिक दूर्बलता को दूर करें। इसके लिए ऐंद्रजालिक तथा वशीकरण शक्तियों को बढाने की जरूरत नहीं है लेकिन इसे प्राप्त करने अन्य कोई आसान तरीके अपनाएँगे तो उनका फल स्थाई नहीं होगा।

इस संबंध में वैद्य शास्त्रज्ञों ने समुचित परिशीलन करके अपनी राय दी है कि अत्याधिक कामवासना हानिकारक ही नहीं अपितु इससे भी काम सुख संबंधी भावनाओं में मग्न रहना ज्यादा नुकसान पहुँचाता है। कमजोर व्यक्तियों में यह कामवासना ज्यादातर मानसिक होती है न कि शारीरिक। या यों कह सकते हैं कि कई लोगों में जबकि शारीरिक स्थिति इसके लिए अनुकुल न हो फिर भी मन अपने भावावेश से इंद्रिय सुखों में रत रहता है। ऐसे ही व्यक्ति कामोद्दीपक दवाओं व रसायनों को खोज में निकलते रहते हैं क्योंकि वे अपने शारीरिक स्थिति को मनोभावनाओं के अनुकुल बना देना चाहते हैं। सहज काम प्रवृति को तो योग्य रीति से स्त्री पुरुष दोनों बिना किसी उपद्रव के अपने इच्छानुसार अनुभव कर सकते हैं। यह मानसिक व्यभिचार ही सभी अनर्थों का कारण है तथा इसी को ठीक करना चाहिए। इसके लिए चाहे किसी भी औषधि का सेवन करें व्यर्थ होगा। यदि काम संबंधी शक्ति लुप्त हुई हो तो फिर से उसे प्राप्त करने में प्रकृति या विज्ञान शास्त्र की सहायता ले सकते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह के मनोजगत् के इंद्रिय सुखों में रत रहने से बचने के लिए प्राथमिक तौर पर नैतिक जीवन की चिकित्सा की आवश्यकता होती हैं। फिर भी औषधी चिकित्सा भी होनी चाहिए। निरंतर काम विषयों में आसक्त रहने से अंत में न केवल नैतिक बल हीनता ही प्राप्त होती है अपितु वह एक रोग बन जाता है। इसलिए उद्विग्न मन तथा नाडी व्यवस्था कों पहले शान्त रखना चाहिए। इस स्थिति में मानसिक उद्वेग पर पहले नियंत्रण रखना चाहिए। जिससे कामोद्दीपक दवाओं की सहायता लेना तथा शंका के साथ अल्प मात्रा में आहार सेवन और वार-वार उस चिकित्सा से होनी वाली अभिवृद्धि पर ध्यान देना आदि दूर जाते हैं। उस पुरानी जीवन पद्धति को छोड़ देने तथा नवजीवन को अपनाने की अटल ही इच्छा इस दिशा में अग्रसर होने की विनम्र भाव से प्रकृति तथा विज्ञान शास्त्र के नियमों के सहीं रास्ते पर चलने से वाकी अच्छे गुण अपने आप निश्चय ही प्राप्त हो जायेंगे।

चिकित्सा:— रति शक्ति हीनता के लिए सर्व प्रथम उपचार है शान्त रहना, कारण की खोज करके उसे दूर करने का उपाय करना। इसका कारण अर्जीण हो सकता है यकृत विकार भी हो सकता है। औपसर्गिक रोग भी हो सकता है तथा अधिक सहवास अथवा हस्तमैथुन आदि भी कारण हो सकते हैं। इसलिए जो भी कारण हो उसे हमारे गाइड में बताये तरीके के अनुसार दूर करना चाहिये। शेष सभी उपाय मिथ्या है क्योंकि उनसे झुठी उत्तेजना बढ़ती है जिसका कुछ समय के बाद यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम होता है कि रही-सही शक्ति भी नष्ट हो जाती है। उपचार यह है कि रोग के विभिन्न कारणों की भली-भांति जाँच करके चिकित्सा क्रम निर्धारित करें।

सेन्जाइन मुख्य औषधि है। अल्प मात्रा में यह नवोस की भांति बढ़ी हुई कामोत्तेजना को नियन्त्रित करती है। बडी मात्रा में जैसे १ से २ टिकियां यह जनसंस्थान को उत्तेजित करती और खोई हुई शक्ति को क्रमशः स्थापित करती है परन्तु शर्त यह है कि रोगी एक ओर जो कुछ प्राप्त करता हैं वह दूसरी ओर नष्ट न करें। कुछेक स्नायु जौर्बल्य युक्त रोगियो में वाइटल-एसेन्स तथा अल्वो-सांग देना आवश्यक है।

प्रति बंधक (Obstruction):-चिकित्सा में जब निर्धारित औषधियों द्वारा भी लाभ न हो या रोगी शीघ्रता से अरोग्य लाभ न करे तो निम्नलिखित औषधियों का विचार करें। जैसे यदि रोगी औषधि के वर्णन में दिये लक्षण पाये जावें। इसी प्रकार अराटिनम स्त्रियों के लिय चाहे गर्भाशय रोगों के अतिरिक्त अन्य रोगों की चिकित्सा ही रही हो। आयोक्वीन मलेरिया के लिए है। मलेरिया का विष शरीर में छिपा रहता है और चिकित्सा में (विशेष कर पुराने रोगों की) अत्याधिक बाधा डालता है। इसकी कुछेक मात्रा देने से बाधा दूर हो जाती ह। ये औषधियां कभी-कभी अन्य औषधियों के साथ या पर्यायक्रम से अथवा दूसरी के साथ भी दी जा सकता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदाह---रिक्ताधिक्य (Inflammation-Congestions) :- प्रदाह से अभिप्राय ऐसे शोथ है जिसमें ताप, रक्तिमा और ड़ापी हो तथा रिक्ताधिक्य से अभिप्राय खून का जमाव है। प्रदाह के लिए मुख्य औषधि फेनोकैल्साइन है। ज्वर के साथ होने पर सल्फासिर और हार्सोपिरीन विशेष औषधियाँ हैं। यदि पीप पड़ गई हो तो रसजेन्ट दे। एन्ट्रोपस से तर करके कपड़ा रखनें से व्रण वहुत शीघ्र बैठ जाता है।

मधुमेह (Diabetes) :- यह रोग आहार के दोष युक्त परिवर्तन के कारण से होता है और इसका संवंध पाचक संस्थान के साथ है तथा पाचक यन्त्रों के विघटन के कारण भी होता है। इसलिए चिकित्सा में पाचक संस्थान की और ध्यान देना आवश्यक है। इसकी मुख्य औषधि मरसीना है, जिसकी प्रतिदिन एक या दो मात्रा ले लेनी चाहिए। जब शर्करा आनी वंद हो जावे तो केवल एक मात्र तीसरे या चौथे दिन से लें। इसके साथ गैस्ट्रोमोन के सेवन की भी अनुमति देते हैं। यदि सुविधा हो तो अल्बो-सांग की गोलियाँ दिन में एक बार लेंवे। इस रोग में स्नायु मंडल की ओर भी दृष्टि रखनी चाहिए जिसके लिए मनसीना के साथ वाइट-एसेन्स भी मिलाया जा सकता है।

रोगी के शारीरिक वजन तथा रोग की स्थिति के अनुसार भोजन पदार्थों पर नियंत्रण रखना चाहिए विशेष रीति से जो रोगी परिश्रमी रहता है उसे ज्यादा आहार दे सकते हैं। चावल, शक्कर तथा अन्य माडीदार पदार्थों को रोकना चाहिए। अथवा स्वल्प मात्रा में तब ले सकते हैं जब मूत्र परीक्षा में शर्करा अन्य लक्षन न दिखाई दें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके आहार में दो या तीन गिलास मक्खन से अलग किया हुआ (Skimmed Milk) दूध दिन में दें। अल्बोसांग ३ टिकियां दिन में दो बार देने से अत्याधिक लाभ होगा। मरसीना एक मधुमेह निरोधक औषधि है जिसके बारे में गाइड के अन्य पंक्तियों में वर्णन दिया है।

लक्षणः—रोगी अनुभव करता है कि क्रमशः उसकी प्यास बढ़ गई है तथा अधिक मात्रा में पेशाव आता है। उसकी भूख भी बढ गई परन्तु वह पतला मोता जा रहा है। उसका पेशो समूह दुर्बल हो चुका उसकी मानसिक अवस्था क्रोधी और कुछ गिरी-सी हो जाती है। उसका मुख होंठ और त्वचा शुष्क हो जाते हैं। मूत्र की जाँच करने से शर्करा खी उपस्थिति प्रतीत होती है।

मस्तिष्क-वातनाडी रोग (Brain Nerves):—वातनाड़ियों के विकार शारीरिक चिकित्सा के अन्तर्गत पढें। आपने देखा ही होगा कि वातनाडी मंडल की रक्षा करना कितना आवश्यक है, कितना भ्रम चिकित्सक को इन रोगों के कारण से होता है और कैसे ये दूसरे रोगों में परिवर्तित हो जाते हैं। हम गर्व के साथ कह सकते है कि ऐसा कोई रोग नहीं जिसमें वाइटल-एन्सेस आवश्यक न हो। मतिष्क तथा वात नाड़ी मंडल के अन्य रोग निम्न प्रकार से है।

प्रलाप (Delirium):- जो औषधियाँ ज्वर हटाती हैं वह प्रलाप भी दूर करती हैं। परन्तु इसकी विशेष औषधि वाइटल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एसेन्स है विशेषकर जब रोगी में किसी प्रकार की प्रचण्डता हो। चिरियम को बच्चों के लिए अच्छा है। आक्षेप (दौर) में भी ये ही औषधियाँ अच्छी हैं परन्तु विशेषकर औषधि कगर-को है।

अनिद्रा (Want of Sleep):— अनिद्रा में भी वायटल-एसेन्स रुकावट दूर करके वातनाड़ी मंडल को शान्त करती है। शक्ति पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। भ्रम-चक्कर आना (Vertigo) इसका कारण पाचक शक्ति के विकार हो सकते हैं। यह दशा प्रायः रक्त चाप की वृद्धि (High Blood Pressure) के साथ रहती है और उस की चिकित्सा द्वारा यह भी ठीक हो जाती हैं।

वाइटल-एसेन्स द्वारा नींद अच्छी आती है। इसकी एक मात्रा रात्रि भोजन से पूर्व तथा दूसरी मात्रा सोते समय लेंवे। केवल एक मात्र के सेवन से दुर्बलता का अनुभव, बेचैनी और थकावट दूर हो जाते हैं। इसके विपरीत तीव्र उत्तेजक औषधियों द्वारा पहले तो शक्ति का अनुभव होता है और फिर रही सही शक्ति भी नष्ट हो जाती हैं। स्नायुविक वेदना (Neuralgia) को मुख्य औषधि व्हाइटल-एसेन्स है।

स्नायु दोर्बल्य (Neurasthenia):- इससे अभिप्राय शरीर और मन की गिरी हुई दशा का होना है, जो कि अधिक शारीरिक श्रम, अधिक रक्त स्त्राव या किसी तीव्र रोग से होने वाली दुर्बलता या पुराने कीटानजन्य रोगों से धीरे-धीरे शरीर में फैलने वाले विष के परिणाम स्वरूप हो जाती है। आधुनिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धान्त के अनुसार इसमें एक मुख्य मानसिक कारण भी होता है। रोग ऐसे लक्षण बनाते हैं जिनका कोई शारीरिक कारण प्रतीत नहीं होता। प्रायः रोगी का स्वास्थ्य कमजोर होता है, मानसिक व शारीरिक। अत्यधिक थकान, उदासी, चिन्ता सिर दर्द, तथा शरीर के कई भागों में दर्द रहता है। पाचन संस्थान शीघ्र विकृत हो जाता है।

इस रोग में रोगी के वातावरण का बदल देना आवश्क होता है। रसायण औषधियाँ तथा अच्छी खुराक द्वारा स्वास्थ्य सुधारने का यत्न करना चाहिए। निम्नोक्त व्यवस्था द्वारा शीघ्र लाभ होता है। अल्फा-सांग दिन में दो बार दूध के साथ तथा गैस्ट्रोमोन २ टिकियां दोनों समय भोजन के बाद तथा २ टिकियां वाइटल-एसेन्स रात्रि सोते समय देवें। यदि भूख कम लगे तो खाने से आधा घंटा पहले सालफास २ टिकयां देना चाहिए। यदि कोष्ठबद्धता हो तो उसे भी दूर करें।

हिस्टीरिया (Hysteria) :– यह मानसिक रोग हैं जिसमें उत्कट मानसिक उद्वेगो या मानसिक भावों के प्रकट न करने के कारण कुछ शारीरिक लक्षण उत्पन्न हो जाते और प्रकट हो जाते हैं और जिनका कोई शारीरिक कारण नहीं दिखाई देता।

चिकित्सा :– रोगी को अपनी इच्छाओं तथा भावनाओं को अच्छी प्रकार समझने तथा अपनाने की शिक्षा दें। स्वास्थ्य सुधार की ओर दृष्टि रखें। नियमित जीवन रखें अर्थात् खाना पीना,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करना, सोना और आमोद-प्रमोद समय पर करें। औषध चिकित्सा किस प्रकार से है। अगर-को प्रातः काल और सोते समय अथवा खाने से आधा घंटा पूर्व देवे। आवश्यकता हो तो खाने के बाद वाइटल-एसेन्स देवें। अल्बोंसांग दिन में दो वार देवे।

अपस्मार (Epilepsy) :- वाइटल-एसेन्स दिन में तीन वार और अगर-को प्रातः काल और सोते समय या खाना खाने से आधा घंटा पूर्व देवे। यह चिकित्सा लम्बा समय तक चालू रखनी चाहिए। स्वास्थ्य सुधार की और ध्यान देना वहुत आवश्यक है। अल्वो-सांग देना उत्तम है। स्नान से पूर्व सिर पर आलोसिन की मालिश वहुत ही लाभदायक है, दौरा शूरु होने के समय अमिग्लिया देने से दौरा रुक जाता है। रोगी खतरे के स्थानों से वचे। दौरे के समय रोगी को चोट लगने से बचाना चाहिए। उस के मुँह में कपड़ा इत्यादि ठोंस देना चाहिए ताकि अपनी जिव्हा न काट ले।

लक्षण :- अपस्पार रोग प्रायः बचपन में शुरु होता है। बडे-बडे दौरों में रोगी को पहले कुछ प्रतीति (Aura) हो जाती है। दौरा अचानक होता है। रोगी जोर चीख मारता है और धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ता है जिसमें कभी-कभी जोर से चोट लग जाती है। योगी के हाथ और मूट्ठियां वन्द हो जाती हैं। चेहरा जो कि पहले पीला था वह नीलम हो जाता है क्योंकि सांस में रुकावट आ जाती है। कुछ क्षण बाद पेशियों में झटके से लगने शुरू हो जाते हैं, आँख का गोला घूम जाता है, जबडा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी भिचता और ढ़ीला होता है और प्रायः जिव्हा काट खाता है। अनेक बार मल और मूत्र निकल जाता है। क्रमशः रोगी मूर्छित स्थिति में आ जाता है। हाथ-पांव ढीले होने लगते हैं और वह कुछ घंटे तक सो जाता है जब बाद को जाग जाता है तो कुछ परेशानी-सी स्थिति होती है।

मुख, जिव्हा, दन्त रोग (Mouth-Tounge-Teeth) मुख रोग साधारणतः पेट की खराबी से अर्थात् पाचन क्रिया ठीक न रहने से होते हैं। मुंह पकने पर मैथलियोड से कुल्ला करो। बच्चों के लिए चीनी अवश्य मिला लो। मुंह के अन्दर छाले या घाव हो तो अराटिनम और अल्वो-सांग मुख द्वारा तथा मैथलीयीड से कुल्ले करो। जिव्हा के रोगों पर भी यही चिकित्सा करो। गन्दे दान्तों की देखभाल करो। दान्त और मसूढो की खराबी पेट के दोष से होती है। हमारी मैडिकेटिड टूथ पाऊडर और एन्ट्रोप्स का प्रयोग करें। इससे आपका एक भी दान्त निकलवाना नहीं पडेगा और हिलते दान्त भी जम दाते हैं। हमें ऐसे दान्त चिकित्सकों की आवश्यकता है जो कि दान्त निकाले नहीं अपितु दांतों की रक्षा की विधि लोगों को सिखायें।

दन्त शूल दन्तवेष्ट पिड़िका (Toothache-Gum boil):— २ टिकियाँ डेसिल खायें। दांत व मसूढ़ों की वेदना और सूजन बहुत शीघ्र ही दूर हो जावेगी। यदि जरूरत हो तो चार घण्टे बाद फिर दे सकते हैं। थोडी सी रूई (Cotton) एन्ट्रोन्स में भिगा कर उसे दर्दवाले दांत के पास रखें। अगन प्रभाव धीरे हो तो वाइटल-एसेन्स लगावें। मुख से दुर्गन्ध आने का प्रधान कारण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्जीण है। पाचन क्रिया को नियमित करें। कोष्ट बद्धता दूर करें और मैडिकेटेड टूथ पाऊडर प्रातः और सोते समय प्रयोग करें।

मूत्र रोग (Urinary Troubles):– वृक रोग प्रकरण भी देखें। बहुमूत्र दो कारणी से होता है, मधुमेह अथवा स्नायु दौर्बल्य। मधुमेह के लिए मरसीना का प्रयोग करें। स्नायु दुर्बलता में नेवोस प्रयोग करें। मूत्र बन्द हो जाने पर चिनियम-को दें और सेक करें। बूंद-बूंद पेशाव आने पर तुराई-को, मूत्र स्त्राव से अधिक कष्ट होने पर तुरई-को तथा चिनियम को पर्यायक्रम से दें। स्पोलेक्स द्वारा मूत्रनली पर बहुत शामक प्रभाव होता है। पेशाव के साथ शुक्र आने पर सेन्जाइन प्रयोग करें। अल्बो-सांग द्वारा अच्छा लाभ होता है। कब्ज का ध्यान रखें। मूत्र में फास्फेट आने पर अल्बों-सांग देवे। मूत्र में अल्ब्यूमन रहने पर तुराई-को देवे। औपसर्गिक रोग प्रकरण भी पढ़ें।

शय्या मूत्र (Bed wetting):– छोटे बच्चों में बहुत कष्टकर रोग है। काइटल-एसेन्स दिन में दो बार खाने के बाद देवें और सोते समय एक मात्र नेवोस भी देवे। ताकत के लिए अल्बों-सांग दें बच्चों झिड़कना या सजा देना अनुचित है। बच्चों कों अधिक प्यार जतला कर उनका विश्वास प्राप्त करने की चेष्टा करें। रात्रि को सोते समय पेय इत्यादि न दें। सोते समय पेशाब करवा दें। मूत्रेन्द्रिय का अग्र चर्म तंग हो तो शटवा दें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यकृत और प्लीहा रोग (Liver & Spleen) :— यकृत शरीर का वितरण केन्द्र है। यद्यपि हमारे शरीर के लिए प्लीह की उपयोगिता अभी ठीक-ठीक ज्ञान नहीं हो पाई है परन्तु इसमें संशय नहीं कि हमारे शरीर का यह भी एक आवश्यक अंग है और हमारे रक्त की उत्तमता का उत्तरदायित्व बहुत कुछ इस पर है। बहुत से व्यक्ति शिकायत करते हैं कि हमारा यकृत शिथिल है। इसकी शिथिलता का कारण खान-पान में समय का न रहना है।

यकृत शिथिलता :— एक साधारण रोग है। सवेरे उठने पर मुंह का स्वाद खराब होना, मिठाई खाने से हजमा विगड जाना, विना किसी कारण के पैत्तिक विकार का होना, जिव्हा पर सदैव मैला रहना, बार-बार सिर दुखना, भूख कम लगना तथा कोष्ठबद्धता रहना, साधारण कमजोरी तथा खिन्न रहना इसके प्रधान लक्षण हैं।

रोगी वह आहार देना लाभदायक है जिसमें प्रोटीन (Protein) ज्यादा हों। तलें हुए या चरबीदार तथा मसालेदार आहार वर्जित है और मद्यपान बिल्कुल मना है। मक्खन से अलग किया हुआ (Skimmed) दूध जब चाहे पी सकते हैं। शारीरिक वजन घट गया हो या मानसिक शिथिलता व साधारण कमजोरी में पर्याप्त आराम लेने की अत्यंत आवश्यकता है।

यकृत की शिथिलता का कारण गलत तरीके से खाना है और इसलिए इस रोग की प्रथम औषधि खाना पीना ठीक करना और परिपाक क्रिया तथा कोष्ठबद्धता की ओर ध्यान रखना है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यकृत पर सीधा प्रभाव डालने वाली औषधियाँ ये हैं– सालफाँस, गैस्ट्रोमोन, टेक्साइन और हर्बल-बिटर्स। मलेरिया के उपद्रव-स्वरूप होने वाले यकृत और प्लीहा के समस्त रोगों के लिए आयोक्विन मुख्य औषध है। शिशु और बालकों के यकृत विकारों में भी उपरोक्त दवाइयाँ लाभ देती हैं। तरल भोजन के साथ अल्वो-सांग मिलाकर देने से शीघ्र आराम होता हैं।

पित्ताशय शूल :- कभी-कभी पित्ताशय की पथरियाँ इतनी छोटी होती है कि आसानी से पित्त प्रणाली द्वारा बाहर निकल कर आंत में पहुँच जातीं हैं पर कभी-कभी पथरी बड़ी होकर पित्त प्रणाली में फँस जाती है। असह्य वेदना होती है इसे पित्ताशय शूल कहते हैं। यह शूल दाहिनी और पसलियों के निचले किनारे बडी तीव्रता के साथ अकस्मात् होता है। दर्द के साथ मस्तिष्क पर धक्का पहुँचता है। त्वचा का वर्ण पीला पड़ जाता है। और ठंडा पसीना आता है। नाड़ी क्षीण और तेजी के साथ चलती है। प्रायः साथ वमय हो जाता है। यदि पथरी बहुत दिन तक अटकी रहे तो त्वचा, आँखों का रंग पीला पड जाता है। अकस्मात् यह पथरी आगे बढ़ कर छोटी आंतों में पहुँच जाती है। तब यह शूल मिट जाता है।

दारुण शूल की पीड़ा के लिए "दारुणशूल" प्रकरण को देखें। खान-पान की ओर ध्यान दें। कोष्ठ बद्धता के लिए हर्बल बिर्टस देवे। दिन में पर्याप्त जल पीने के लिए दें। अधिक खाना यह स्नेह युक्त पदार्थ खाना वर्जित है। हरी सब्जियां और फल अधिक खावें। व्यायाम, जैसे भ्रमण करना यकृत का उत्तेजित करने के लिए आवश्यक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त रोग (Blood) :— अल्बो-सांग से रक्त की शुद्धि होकर रक्त की उत्तमता बढती है।

रक्त चाप बृद्धि (High Blood Pressure) :— के लिए अल्बो-सांग दिन में एक बार दें और अराटिनम प्रातः काल और सोते समय देंवे। परन्तु मुख्य वात स्पोलैक्स द्वारा कोष्ट वद्धता दूर करना है। वाइटल एसेन्स २ टिकियां दिन में तीन बार दें। यह उद्वेग को तथा मानसिक व्यथा व थकावट को दूर करने के लिए अत्यंत जरूरी है। अल्बो-सांग रुधिर के दवाव को नियमित करता है अर्थात् कम हो तो अधिक और अधिक हो तो कम करता है तथा स्नायु मंडल के तनाव को कम करता है।

रुधिर दवाव को अधिकता के साथ अराटिनम भी मिलाया जा सकता है। तुरन्त लांभ पाने के लिए अमिग्लिया हर दो घंटे के पश्चात आराम पाने तक देते रहें। खाने के वाद सालफास का निममित प्रयोग रक्त दबाव को कम करने में सहायक है।

लघुपाक भोजन सेवन करें। मांस, नमक, चाय, सुगंधित मसालेदार आहार औत तम्बाकू से परहेज करें। उत्तेजना, चिन्ता शारीरिक श्रम से बचें और पर्याप्त विश्राम करें।

लक्षण :— रुधिर का दवाव मध्य आयु और बुढ़ापे का दुखपायी रोग है। इससे सिर दर्द, चक्कर, कानों में आवाज, सामान्य परिश्रम से गांस फूलना, दिल का अधिक धड़कना, चिड़-चिडापन या अनिद्रा हो जाता है। रोग की बढी हुई दशा में नाक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से रक्त वहना, अंग प्रत्यंग सुन हो जाना और ऐंठन होना, पैरों में शीतलता आना इत्यादि लक्षण होते हैं। कभी-कभी अस्थायी दृष्टिहीनता तथा मूर्छा हो जाती है।

रक्त श्रोण संबंधि विशेष विवरण के लिए अकौत (Piles) स्त्री-रोग तथा राज्यक्ष्मा नामक शीर्षक पढ़ें।

रिकेट (फक्क रोग) :— अल्बो-सांग ताजे दूध में दिन में दो वार देंवे। बच्चे को जहाँ तक हो सके सूर्य की धूप में रखें। जब तक हड्डियाँ शक्त न हो जाय तब तक चलने फिरने या घुटनों के बल रेंगने की शिक्षा वे दें इस रोग से बचने के लिए माता का दूध पिलाना आवश्यक है। ऊपरी दूध पीने वाले बच्चों को अल्बो-सांग मिला कर देना आवश्यक है। इसमें 'डी' विटामिन है जिसके अभाव में रिकेट रोग होने की संभावना है।

लक्षण :— रोग के प्रारम्भ में बच्चों को रात्रि के समय बेचैनी रहती है। सिर में पसीना अधिक आता है, जिससे सिरहाना भी गोला हो जाता है और चिड़चिढापन आ जाता है। उसकी अस्थियों के सिरे मोटे हो जाते हैं। वच्चा कभी-कभी मोटा तथा पिलपिला सा हो जाता है। दान्त देर से आते हैं। पेट बाहर निकल आता है। वच्चा देर से चलने फिरने लगता है या चलना-फिरना आरम्भ करने पर फिर वन्द होता है। टांगों का टेढ़ापन हो जाता है, चलते समय घुटनें टकराते हैं और दूसरी हड्डियों में भी विकृति आती है।

वमन (Vomiting):- वहुत से लोगों का लक्षण है। कारण के अनुसार चिकित्सा करें। अपैन्डीसाइटिस (अन्त्रविद्राधि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या अन्त्रपुच्छ प्रदाह) अथवा अन्त्रावरोध आदि के कारण से हो तो सावधानी रखनी चाहिए। विष सेवन से हो तो, जोर-जोर से देर तक वमन होती हैं। साथ में ऐंठने, शूल, अतिसार तथा शीतांग हो जाता है। वमन में खून भी आ जाता है। उस समय उचित यह है कि डाक्टर को बुलाया जावे। वह जांचकर तत्काल वमन देगा या आमाशय को धोवेगा अन्यथा विरेचन देगा। उत्तेजक वस्तुएँ भी दी जाती है।

वृक्क शूल :—छोटी-छोटी कंकर या पथरी की रेत मूत्र नली द्वारा नीचे आकर मूत्र के साथ निकल जाती है या मूत्राशय में स्थिर हो जाती है। बड़ी अश्मरियाँ मूत्र नली में रुक जाती हैं अथवा बड़े कष्ट से आगे सरकती हैं जिससे वृक्क शूल हो जाता है। बार-बार मूत्र आता है और प्रायः रक्त मिश्रित होता है। जब पथरी मूत्र नली से नीचे उतरनें शुरु होती तो अत्यन्त तीव्र शूल होता है। रोगी दर्द मारे जमीन पर लोटता फिरता है। मुख पीला, ठंडा पसीना और नाडी द्रुत होने के साथ-साथ तापमान गिर जाता है। कुछ काल बाद पत्थरी मूत्रशय से चली जाती है और दर्द बन्द हो जाता है।

दर्द गुरर्दे में होते ही रोगी को एकदम लिटा देना चाहिए। चिकित्सा के लिए दारुण शूल प्रकरण देखे। यदि ऐक्सरे द्वारा बडी अश्मरी एक या एकाधिक पता चले तो रोगी को सर्जन के पास भेजना चाहिए।

श्वास या दमा (Asthma):—तीव्र दौरे की दशा में बेंजोमोन्स के इंजेक्शन लगावें। फिर २ से ४ दिन के अन्तर से लगाते रहें। कुल ६ इंजेक्शन पर्याप्त होते हैं। कुछ रोगियो में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौरे की दशा में अमिग्लिया बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। उन वस्तुओं से बचे रहना चाहिए जिससे दौरा उठता हो।

पुराने श्वास में डेस्मा भी दें। बेंजोमोन्सा के इंजेक्शन के साथ-साथ यदि खांसी लगातार रहे तो मेडिटेंब देवे। आपेक्ष युक्त दुखदायी खांसी में डाँजिन अच्छी है। अल्यो-सांग और चेसाल अच्छी सहायक औषधियाँ हैं। जिन कारणों से मानसिक भावों को उत्तेजना मिले उन्हें त्याग दें और वाइटल एसेन्स प्रात. व सायं दें।

दौरे से छूटकारा पाने के लिए स्वास्थ्य की ओर ध्यान दें। थकावट से बचें। हल्का भोजन करें। कोष्टबद्धता न रहने दें। रात्रि का भोजन बहुत हल्का तथा संध्या समय ही लेना चाहिए। बच्चों में प्राणायाम का अभ्यास अत्युपयोगी है।

चिन्ह व लक्षण :—इसमें ऐंठने वाली पीडा के साथ श्वास रुक-रुक कर होता है 'खांसी, दम घुटने तथा छाती और गले में जकड़न-सी प्रतीत होती है। श्वास का दौरा प्रायः रात को आता है और रोगी दम घुटने के कारण जाग उठता है। रोगी बडी दुस्थिति में आ जाता है तथा बहुत घबराहट में होता है और अधिक हवा पाने के लिए वह उठकर खिड़कियाँ खोलने लगता है। आरम्भ में छाती निश्चिल-सी होती है परन्तु बाद में रोगी धीरे-धीरे गहरी साँस बाहर निकालता हैं जिससे जोर से सांय-सांय की आवाज आती है।

सिर:शूल (Headache) बहुत रोगों के साथ हुआ करता है। ज्वर को पूर्वावस्था में तथा नजला जुकाम में अस्थाई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप से उग्र सिर दर्द होता है। इसके कारण ये हैं:—रक्त की कमी, कोष्ट बद्धता, आंखों पर जोर पडना, चिन्ता, स्नायु विकार, अर्द्धविभेदक, अधिक रक्त चाप, जीर्ण, वृक्क रोग, नासिका दन्त या कान इत्यादि रोग।

सिरदर्द का कारण ज्ञात करके उसके अनुसार चिकित्सा करें। इसका मुख्य औषधि फैनोकैल्साइन और ड़ेसिल हैं और कठिन रोग में हार्मोपिरीन दें। हमारे रब्जान का माथे पर प्रलेप लाभ देता है। यदि सिरदर्द लगातार रहे तो वाइटल-एसेन्स दें।

पुराने सिरदर्द के लिए नर्वोप्लेक्स एक दूसरी लाभकारी दवा है, विशेषकर वातनाडी के कारण सिरदर्द हो। तीव्र सिर दर्द के कारण चेहरा फूल जाता हो तो अमिग्लिया दें। (उन रोगों के शीर्षक भी पढ़ें जिनके कारण सिरदर्द होता है।)

केश और कपाल—के रोग भीतरी विकारों के कारण हुआ करते हैं, इसलिए अल्मों-सांग के सेवन से बालों का झड़ना बन्द हो जाता है। ओलोसिन के प्रयोग से भी बालों कि उत्पत्ति में सहायता मिलती है। कपाल पर उँगलियों के अग्रभाग से अच्छी प्रकार प्रतिदिन मालिश करें। ओलोसिन के साथ नारियल का तेल मिला लेना चाहिए। सिरदर्द के कारण बाल झड़ने पर स्किन्मेन्ट लगावें। परन्तु पहले बाल काट लें।

शिशु और बालक (Babies and Children).— बच्चों के रुग्ण होने पर चिकित्सा करने की अपेक्षा हमें उन्हें रोगों से बचाने का यत्न करना चाहिए। नन्हें-मुन्हें शीघ्र बीमार होते है,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्र स्वस्थ होते हैं और यदि ठीक से चिकित्सा न की जावे तो शीघ्र ही मरते हैं। अल्बो-सांग, सालफास और टैक्साइन बच्चों को स्वस्थ रखने की औषधियां हैं। अल्बो-सांग रोगाक्रमण से उनकी रक्षा करता है। सालफास इनके परिपाक यन्त्र को ठीक रखता है और टैक्साइन उनके कोष्ठ काठिन्य को दूर करता है। एक मृत्यु आसन्न बच्चे को आशीर्वाद देने के लिए एक ईसाई पादरी साहब को रात्री दो बजे बुलाया गया। बच्चे का पेट ढोल की तरह फूला हुआ था और बडे कष्ट से सांस ले रहा था और सभी रो रहे थे। उसे पादरी दस ग्रेन सालफास थोडे गरम जल में मिलाकर हर १५ से ३० मिनट से अन्तर से एक-एक चम्मच भर कर देने लगा। बच्चे को दूसरी या तीसरी मात्रा के बाद लाभ दिखाई दिया और सवेरे तक अच्छा हो गया।

सालफास बच्चों के पाचन संबंधि विकारों को दूर करने के लिए पर्याप्त है और उनका स्वास्थ्य भी ठीक रखता है। परन्तु सुविधा के लिए इन्हीं गुणों से युक्त अन्य औषधि को हमने तय्यार किया है जो कि स्वादिष्ट भी हैं, उसका नाम बायोसाल है। डाक्टरों की सम्मति में यह एक उत्तम ग्राइप वाटर है।

बच्चों को प्रायः यकृत की खराबी का रोग (Cirrhosis) हो जाया करता हैं। इसकी चिकित्सा इस प्रकार करें। आयोक्वीन तथा केनटोमाइन एक-एक टिकियां तथा अल्बो-सांग उनके तरल खाद्य में या थोडे पानी में मिलाकर दिन में २ या ३ बार देना चाहियें। कई दशाओं में इसके साथ ही टैक्साइन भी देना अच्छा होता है। इस विधि से ३ से ६ मास तक चिकित्सा करने से भयंकर रोग सन्तोषजनक रूप से ठीक हो जाता हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि अभिवृद्धि आहिस्था हो तो हर्बल-विटर्स हर दो या तीन दिन में सोते समय दें।

दन्तोद्गमः—यह बच्चों के लिए एक कष्टदायक समय होता है और इस अवधि में उनको प्रायः वह रोग होता है जिसकी स्वभाविक प्रवृत्ति उनमें अधिक होती है। दान्त निकलने के समय की पीडाओं के लिए एक सालफास श्रेष्ठ औषधि है। पीडा दूर करने के लिए चौथाई ग्रेन फेनोकैल्साइन भी दी जा सकती है। यदि शिशु बेचैन हो तो वाइटल-एसेन्स दें।

साधारणतः जो औषधियाँ वयस्कों के लिए अच्छी हैं, वे शिशुओं और छोटे बालकों के लिए भी प्रयोग की जा सकती है। परन्तु कुछेक विशेष औषधियाँ उनके लिए हैं, जैसे यदि बच्चा दूध की दहीं बनाकर उल्टी कर देता हो और मूर्छा या आपेक्ष हो तो 'अगर-को' देना चाहिए। चिनियम-को बच्चों की एक साधारण औषधि है जो कि अनेक प्रकार से लाभ पहुँचाती है जैसे ज्वर, अतिसार, प्रवाहिका और विशेष कर जब बच्चा अचानक किसी रोग से बीमार हो जावे। इसी प्रकार पिपारिड एक अच्छे मित्र का काम देती है और उसे आवश्यकता पर सदा स्मरण रखना चाहिये न केवल कृमि रोग में अपितु जब अन्य औषधियों द्वारा सन्तोष जनक लाभ न हो।

श्लीपद या जलोदर (Filariasis) :—नैवोंस १/४ टिकिया आयोवीन और आयोक्विन १/२ टिकिता मिलाकर दिन में तीन बार देने से अच्छे परिणाम मिलने की सूजना प्राप्त हुई है।

शोथ जलीदर (Drospy or Oedema).- रक्त का जलीय भाग शिराओं द्वारा बाहर आकर त्वचा के निम्न भाग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में या शरीर के गहवरों में संचित हो आता है। यदि वृक्क रोग के कारण हो तो तुरई को और जब हृदय के कारण से हो तो ग्रैन्डी-को देना चाहिए। यकृत विकारों में कैनेटोमाइन दें। इस रोग में लक्षण सर्वथा त्याग देना होता हैं।

सन्धि शोथ (Arthritis) :—सन्धि स्थल उष्ण और सुजा हुआ होता है और हिलाने में दर्द होता है। अंग को स्थिर रखने के लिए रूई रखकर पट्टी बांध दी जाती है अथवा यदि सूजन अधिक हो तो कुशा (Splint) बांधनी पड़ती है। हमारे रब्जान या चेसाल से मालिश करें। जब सूजन घट जाये तो धीरे-धीरे अंगो को हिलाना आरंभ करें। चेसाल की मालिश आराम देने में उत्तम सहायक है।

सभी साधारण दशाओं में हार्मोपिरीन और डेसिल पर्याप्त होते हैं। पुराने रोग में या तीव्र दशा में रिमोरिन इंजेक्शन हर चार दिन के अन्तर से देना लाभदायक हैं विशेषकर जब कि बहुत से सन्धि स्थान आक्रांत हों। साथ में उपरोक्त चिकित्सा मुख द्वारा अल्प मात्रा में देते रहें।

कीटाणु दूषित स्थान की खोज करें जैसे टांसिल बढ़ना या पीनस रोग (Sinuses) इत्यादि और फिर उसी के अनुसार चिकित्सा करें। पाचन क्रिया तथा कोष्ट शुद्धि का ध्यान अवश्य रखना चाहिए जब तक ज्वर रहता है द्रावाहार लेना है। मांसाहार का सेवन हो लेकिन पर्याप्त मात्रा में फलों का रस पिये।

स्त्री रोग (Female Complaints) :—ये रोग उस समय होता हैं जब बालिकाएँ यौवनावस्था में नारी पद प्राप्त करती हैं। उस समय नियमित रूप से अल्बो-सांग तथा वाइटल-एसेन्स की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता होती हैं यह आवश्यकता रजोनिवृत्ति के समय ४०–५० की आयु में अत्यन्त उपादेय है। और इन दोनों अवस्थाओं में वातनाठी संस्थान प्रभावित रहता है। महावारी की अनियमितता के लिए ब्रह्मडाइन और अराटिनम विशष औषध है।

श्वेतप्रदर :–यह जीवनी शक्ति के कम हो जाने से भी होता है। इसके लिए अल्बो-सांग देना चाहिए। ब्रह्मडाइन उस रोग की मुख्य औषधि है। सभी साधारण अवस्था में सर्व प्रथम ब्रह्मडाइन अराटिनम और चिनियम-को का प्रयोग करें। औपसर्गिक रोगों के कारण से भी यह स्राव हो सकता है, उस दशा में अयोवीन देना उचित है जब कि ब्रह्मडाइन से सन्तोषजनक लाभ न हो।

कष्टार्त्तबा :–इसकी चिकित्सा ब्रह्मडाइन के अन्तर्गत लिखी गई। तुरन्त आराम पाने के लिए वाइटल-एसेन्स की ३ टिकियां ३ से ४ घंटे के अन्तर सेवन करें। अत्यन्त पीड़ा में चिनियम-को १/२ टिकियां मिला सकते है। यदि आवश्यकता हो तो तुरन्त आराम के सिए अमिग्लिया भी दी जा सकती है।

बहुत से रोगियो के साधारण स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने से लाभ हो सकता है। रक्त संचार बढाने के लिए नियमित व्यायाम भी आवश्यक है। रक्तहीनता तथा कोष्ठबद्धता की ओर ध्यान देंवे।

गर्भाशय रोगों की विशेष औषधि अराटिनम है जो कि विशेषकर मासिक धर्म के सर्वथा न होने या कम होने पर उपयोगी हैं, चाहे मासिक वर्षों से बन्द हो। अधिक मासिक स्राव होने पर चिनियम-को उत्तम है। दीर्घकाल से निरन्तर होनेवाले स्राव में भी देंवे। पेट के निम्न भाग में सूजन के कारण से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्द होने पर चिनियम-को देवे तथा रब्जान की मालिश करें। आवश्यकता होने पर हार्मोपिरीन देकर परीक्षा करें।

गर्भावस्था में अल्वो-सांग देने से माता और भ्रूण दोनों को लाभ होता है। प्रसव के पश्चात देने से माता का दूध पुष्ट होता है और वह गुण दूध द्वारा शिशु को भी प्राप्त होसे हैं।

प्रसव :-प्रकृति अपने काम को स्वयं भली-भांति सम्पन्न करती है। अराटिनम द्वारा प्रसव आसानी से और प्राकृतिक रूप से होने में सहायता मिलती है। प्रसव पीडा बन्द हो जावें तो अराटिनम द्वारा चालू हो जाती है। गर्भवती को सातवें या आठवें मास से प्रति दिन १ ग्रेन अराटिनम प्रातः देते रहने तथा सोते समय एक मात्रा चिनियम-को देने से प्रसव सुगमता से होता है।

प्रसव नाल हैं वाइटल-एसेन्स बहुत उपयोगी होती है कई घण्टों तक प्रसव पीडा रहने पर भी प्रसव उत्पन्न न होता तो वाईटल-एसेन्स की एक मात्रा से हो जाता है। प्रसव पीडा में इसे आधा से एक घन्टे के अन्तर से देते हैं। प्रसव पीडा कम हो जाय या रुक जावे तो अराटिनम देना चाहिए परन्तु पीडा रहने पर यदि विलम्ब हो रहा हो तथा रोगी घबराया हुआ हो तो वाइटल-एसेन्स सें लाभ होता है। यही दोनों में अन्तर है या यदि प्रसव के पश्चात् रक्त अधिक पडे तो चिनियस-को देना चाहिये। यह दूसरे या तीसरे दिन होनेवाले प्रसूत ज्वर (Milk Fever) में भी अच्छा है। यदि स्तन विद्रधि हो जावे तो रसजेन्ट की एक मात्रा देवे और एन्ट्रोप्ब की पट्टी रखे। लाभ न होने पर ४ से ८ घण्टे बाद इसी प्रकार दूसरी मात्रा दें। प्रसव के पश्चात् होने वाले मन्द ज्वर के लिए जिसकी उपेक्षा करने पर ज्वर यक्ष्मा का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप बना लेता है उसमें ज्वर प्रकरण में बताई चिकित्सा करें।

हृदय रोग:—जब नाड़ी दुर्बल हो, हल्की या तेज हो और रोगी को जल्दी सांस चढ जाती हो या जल्दी थक जाता हो, दिल की धड़कन अधिक हो, दम घुटता हो, चलने से टकनों में शोथ आ जाती हो तो ग्रेंडि-को देवे। हृदय के विकार पाचन संस्थान के रोगों द्वारा विशेषकर गैस के बनने से बढ़ जाया करते हैं जो व्यक्ति जल्दि थक जाते हैं या तनिक श्रम से हाँपने लगते हैं उन्हें कभी-कभी ग्रेंडि-कों लेते रहना चाहिए। आक्षेप युक्त रोग के लिए अमिग्लियां दें।

हिक्का:—यह वक्षोदर मध्यस्थ पेशी की वातनाड़ीयों के क्षोभ के कारण होता है। साधारणतया इस क्षोभ का हेतु पाचन संबंधि कोई विकार होता है। कभी-कभी यह भयंकर लक्षण होता है।

साधारण दशा में सालफास या मैग्नाइन थोडे गरम पानी में लेने से यह रुक जाती है। पुराना उपचार यह है कि सांस बाहर निकाल कर फिर साँस वही रोक देवे। इसके अतिरिक्त आगे झुककर पानी का पात्र जरा दूर रखकर होठ बढ़ाकर पानी धीरे-धीरे पीने से भी हिचकी वन्द हो जाती है।

उपसंहार:—शरीर की विचित्रता के सम्बन्ध में जो विचार हमने दिये उनको पढ़कर घबरा न जाइये। इसका समाधान मन की सादगी में है। प्रकृति बड़ी उदार है, दयालु तथा आशिर्वाद स्वरूप है। मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु है। प्रत्येक रोग की सर्वोत्तम चिकित्सा मन और आत्मा को प्रसन्न रखना हैं। हमें अपना कर्तव्य निभाना चाहिए, प्रकृति अपना कर्तव्य करती है और शेष सभी को परमात्मा संभाल लेते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

अगर-को ३४
अजीर्ण १०७
अजीर्ण (वातिका) १०७
अतिसार १०९
अतिसार (हरे) ११०
अन्त्र पुच्छ प्रदाह १११
अस्त्र शूल ११२
अनुपान २९
अनिद्रा ८९, १४३
अपस्मार ७४, १४५
अफारा १०७
अर्श १०३
अल्बो-सांग ३४
अद्ध विभेदक १०२
अमिग्लिया ३८
अराटिनम ३९
डेस्मा ४६
अस्थियों का टेढ़ापर १५३
आकस्मिक एवं संकट रोग १०४
आमवात ज्वर १०४
आमवात,गृध्रसी कटिशूल १०५
आमाशयिक, व पक्वा-शयिक क्षत १०८
अम्लपित्त ६३
आमाशय और अन्त्र रोस १०५
आमाशय प्रदाह (अजीर्ण १०९
आमाशय क्षत लक्षण १०८
आयोविवन ५९
आयोवीन ५८
आक्षेप ४३, ६९
इन्फ्लूयेंजा ११३
इन्जेक्शन (सूई लगाना) ३३
उपान्त्र प्रदाह १०५
उदरशूल ११२
एग्जिमा (अकौता) १२९
ओलोसिन ७०
औसर्गिक रोग ११४
औषध कैसे दी जाय १००
औषधि बक्स ३०
औषध व्यवस्था ९७
कर्णपूय १२९
कष्टार्त्तवा १५८
काइनोटोमाइन ६२
कॉफलीन ६१
कान के रोग १२९
कामला १२०
क्रिमि ११३
कुकूर खांखी १२४
केश और कपाल १५४
कोष्ट बद्धता ८४, १०७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोप्लोजान	६०	टैक्साइन	८७
कँठमाल	१२३	डयासिन	४७
कण्ठ रोग	१२८	डाँजिन	४५
खुजली	१३०	डेस्मा	४६
गनेरिया	११५, ११६	तुरई-को	८८
गर्भाशय रोग	१५९	त्वचा रोग	१२९
गरारे	१२७	थूक के साथ खून	१२६
गुद भ्रंश	१२०	दन्तशूल, दन्तवेष्ट पौडिका	१४६
गुद विकार	१२१	दन्तोद्गम	१५६
गैस्ट्रोमोन	५१	दाद लक्षण	१३१
ग्रहणी	१११	दारुण शूल	१३२
ग्रंथि रोग	१११	दुर्बलता	१३७
ग्रेण्डी-को	५२	दौरे	१४५, १५३
घोल	२९	नर्वेप्लेक्स	६९
चम्बल	१३२	नासा रोग	१३२
चिनियम-को	४४	नेत्र रोग	१३३
चिप्प रोग	१२१	नेवोक्स	६९
चेसाल	४४	न्यूमोनिया	१२३
छाती और फेफडों के रोग	१२२	पक्वाशिक क्षत लक्षण	१०९
जलोदर	१४६	पथ्य	९३, ९४
जीवन शक्ति	१८	परिपाक	९४
ज्वर	१२६	प्लूरिसी	१२२
जुकाम	११४	पाण्डू	१३३
		पायोरिया	१३३
झुलस जाना	७७	पिडिका	१३४
टांसिन बढ़ना	११८	पित्त प्रणाली शूल	१३२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पित्ताशय शूल १४९
पिपारिड- ७३
पीडा और शूल १३५
पुल्टिस ३१
पुरुष रोग १३६
पेशाब में अल्ब्यूमन १४७
पैत्तिक लक्षण १४९
पैरों की खुजली १६१
पोषण ९२

प्रतिबन्धक १४०
प्रदाह व रक्ताधिक्त १४१
प्रलाप १४२
प्रवाहिका ११०
प्रसूत १५८
प्रसव १५१
प्रसव पीडा १५९
फक्क रोग १५१
फ्लूजन ५०
फेनीकेल्साइन ७२
फोडा १३०
बहुमूत्र ७०, १४७
ब्रह्माडाईन ४३
वयो-साल ३१
बेंजोमोन्स ४०
भ्रम (चक्कर आना) १४३
मन्दाग्नि १०७
मधुमेह ६७, १४१
मरसीना ६६
मलत्याग १५
मल विषमता ११२
मलेरिया १२७
मस्तिष्क वातनाडी रोग १४२
मसूढों की सूजन ११३
मानसिक व स्नायुविक विकार ९५
मात्रा २८
मिश्रण ३०
मुख जिव्हा दन्तरोग १४६
मूत्र रोग १४७
मेग्नाइन ६३
मेडीटेब ६४
मेडकेटेड टूथ पाऊडर ६५
मेथिलियोड ६८
यकृत और प्लीहा रोग १४८
यकृत शिथिलता १४८
यकृत संकोच ५५
रक्तरोग १५०
रक्त दूष्टि १६
रक्त चापाधिक्य ६५, १५०
रबजॉन ७९
रसजेण्ट ७५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजोनिवृत्ति १५८
रतिशक्ति हीनता या ध्वज भंग १३७
राज्यक्ष्मा १२५
रिकेट (फक्क रोग) १११
रिपेन्टो ७७
मेमेडी नंवज ७५
रेमोरिन ७६
रोमान्तिका १२८
लघु मसूरिका १२८
वमन १५१
व्रण और घाव १३०
वक्क शूल १५२
वाइटल-एसेन्स ८९
विपरिणाम ९४
विस्फोट १३४
व्यवहार विधि २८
शय्या मूत्र १४७
शय्या व्रण ७७
शारीरिक चिकित्सा ९२
श्वास या दमा १५२
श्वास नली प्रदाह १५२
श्लीपद या जलोदर १५६
शिरः शूल १५३
शिशु और बाल १५४
शीत पित्त १२९
श्वेत प्रदर १५८
श्लीपद या जलोदर १५६
सलफास ९०
सन्धि शोथ १५७
सल्फासिन ८६
स्तन विद्रधि १५९
स्पोलेक्स ८४
स्वप्न दोष १३५
स्त्री रोग १५७
स्नायु दौर्बल्य १४३
सात्म्यीकरण ४९
(सिफलिस फिरंगो) ११७
स्किनमेन्ट ८२
सूजाक ११५
सेंक ३२
सेन्जाइन ८१
हर्बलविटर्स ५५
हर्बोसल्फ ५६
हृच्छूल ५२
हृदय रोग १६०
हृदय दाह (छाती जलना) ६५
हृदय धड़कन १६०
हार्मोपिरीन ५७
हिक्का १६०
हिस्टीरिया १४४
हीलन ५३
हेमोप्लेक्स ५४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

INNER HEALTH...

in today's age of speed, fear and tension, man, in his rush, has lost sight of the importance of his health.

Our forefathers knew better, thay developed a system of living, prayer, the right food exercise and nature's medicine.

HERBO-MINERAL medicines have been developed to look after your INNER HEALTH.

J. & J. DeChane Laboratories (Pvt.) Ltd.

RESIDENCY ROAD, HYDERABAD, INDIA.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागलक्ष्मी आर्ट प्रिन्टर्स, हैदराबाद–५०० ०२९.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.